

## <sub>पद</sub> रत्नावली

श्रीमदुपाध्याय रामचंद्रजी गणी

**%7**F2%53<del>5353\*\*</del>

ः. आज्ञानुसार



## ॥ विज्ञा पन ॥

ठापे केहोनें का मुख्य सुख यही है कि अनेक पुस्तकै कुपें उन्हें हर की ई पाय सके इस लिये वनारस सूर टोले में श्री युत राय धनपति सिइ वहादुर के सहायता से जैन प्रभाकर प्रेस जारी किया है उसमें प्रथम पु स्तक मंगला चरण श्री भगवान जि नेंद्र के अनेक रागें। के स्तवन पदें। की रत्तना वली भविकां के हितार्थ संगृह कर्के छापी गई है इस में भूउ चूक होय तो क्षमा करें॥ दाम फी पुस्तक ) (पहिली दफे रुपैया २५) ) (पुस्तक ४७५



## ॥ सूची पत्र॥

गाननाम	पदसंष्या	कतानाम	पृष्ठ
योगीश्वर	भैरबी ३	चुन्नी	9
चेतनचतुर	3	चुन्नी	२
~ ~~	प्रभाती		
देखोरेखा			
दीश्वर	3	खुस्याल	२
प्रातसमै	2	O	३
प्रातभयो	2	0	8
	वेलाउल		
चितसेवा	3	o	8
	भैरब		,
साहिबक्र	8	चुन्नी	ષ્
मैंबोहरी	8	चुन्नी	ध्
जंबहमर्हा	र ४	ज्ञानसार	1

२ ॥ सूची पेन्न॥					
भाननाम	पदसप्या	कर्तानाम	पष्ठ		
मनुष्रावस	६	ज्ञानसार	6		
भोरमयो	8	ज्ञान० ी	6		
जागरेसव	रागखट				
जागरसञ	3	ज्ञानo	٤.		
मेराकपट	वेलाउल ७	क्रान	90		

ज्ञान० जिनचरण Ą

ज्ञाम० कंतकह्यो 4 ज्ञाम० βę अनुमबह्म g झाम० 98 अनुभवहम तोराउरे

झान० झानकछा

7 ज्ञान० हानपीयू Ę ज्ञान०

9Ę

ज्ञान०

**पं**रघरघर

गाननाम	पदसंष्या	कर्तानाम	पृष्ट
क्याकहिये	ČĄ.	ज्ञान०	96
	प्रभाती		
उठानेमा०	६	लाभउदै	98
आजरिषभ	3	साधुकी०	२०
आंगनक	3	समैंसुंदर	२०
क्यैांकरभ	8	मान	२१
<b>प्रभुजातुम</b>	3	हरखचंद	२२
प्रभुतुमता	<b>v</b>	हरखचंद	<b>२े</b> ३
	वेलाउल		
रेघरियारे	3	ग्रानंद	२४
क्यासोवे उ	3	आनंद	- 74
उदयोआ	\ \ \ \	लाभसूर	२%
मे रेइतने	रे २	ग्र्यानद	२६
तबप्रभुक्र	। २	a	२६

, 8

गाननाम (	पद्सप्या	कतानाम	n R
	सुहावेला		_
भगवसम	ય	चुनी चुन्नी	२७
समकमन	8	चुन्नी	२७ २८
	मैरवी	•	
दीनकेना	3	चुनी	28
घदयाल	गजलभैरो	\ `	
गुरुदेवजी	8	चुकी	28
काध्यान	<b>ग्रासाधर</b> ी	,	_
<b>ग्रीधू</b> एजग	2	ज्ञानसार	30
सवपूष्रात		ज्ञान०	3,9
अवधूया	δ	ज्ञान०	३३
सवपूर्पा	२	ज्ञान०	38
औ०सुम	3	<b>ज्ञान</b> ०	34
🏻 प्री०प्राप्त	3	न्नान०	38

गाननाम	पदसंध्या	क्तानाम	ष्ठष्ठ	
<b>औ</b> 0्ञात	8	ज्ञान०	३७	
ष्ट्री०जिन	દ્	ज्ञान०	36	
ग्री०केंसी	8	ज्ञान०	39	
साधोभाई	3	ज्ञान०	80	•
साघोभाई	25	ज्ञान०	83	
ग्री०हमवि	٤,	ज्ञान०	४२	
साघोभाई				
जबहम	સ્	ज्ञान०	88	
आसार्ध्रींस	8	<b>घ्रानंद</b>	४५	
	विभास			
जागियेन्	25	खेमाजी	४६	
भावधरि	३	जिनरा	80	
सुनित्रभुव	7	गणिवि	28	
	े बिहाग			
				<u></u>

<b>॥ सूची मन्न</b>	Ħ
 	-

गाननाम	पदसख्या	कर्तानाम	पृष्ट
कवनगत	\$	चुंकी	११
नवरियाम	3	o	40
र्मेताकिये	६	0	५०
	गघार		
चतुरनरचे	911	कल्माण	५२
	देवग०		
ममुते <b>रीमूर</b>	1	रूपचद	५२
_	रागनह		
<b>अटकेनय</b>	ą	नवल	५३
अर्जिनव	3	0	48
हामेमीजि	8	गणिवि	६६
	समाच		
स्रिखचद्रप	٧	इरखच	५६
l .	I ———	i i	٠,١

			***********
गीननाम	पदसंप्या	कतानाम	पृष्ठ
किनगुणभ	<b>ર</b>	ग्र्यानंद	७,४
देखाआली	२	आनंद	<i>यु</i> छ
1	खंभाच		
जिनंदकी			
मैंवारी	8	चुन्नी	3,5
	परज	)	-
भाई रेसी			:
ही सदगुरु	6	हरखचं	६१
सिवायि		चुन्नी	Ęö
निरभयप	8	चुन्नी	६३
<b>मेरामन</b> ल	3	चुन्ती	६३
प्रनुमोसे	2	चुन्नी	६३
सासरेरी	२	ज्ञानसार	, .
ताजोगी	8	o	६५

गाननाम	पदसप्या	कर्तानाम	पृष्ठ
	सारग		
मेरेपूजा .	911	o	६६
चितचाहे	3	इरख	६६
अनुमोढो	8	ज्ञानसार	६७
नायबिचा	0	<b>ज्ञान</b> ०	६८
माइमेरो			
फत	0	भान०	६९
<b>इमारी</b> अ०	o	ज्ञोन०	60
प्रभुदीनद	२॥	ज्ञान०	७०
धनुमोहम	રા	<b>मानद</b>	60
नायनिहा	∖રા	<b>आनद</b>	७२
<b>कहाकहिये</b>	₹૫	ज्ञान०	৩হ
	घनाग्री		`
<b>आजमहो</b>	8	इरख	७३

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
पियामोसुं	<del></del>	ज्ञानसा	७५
प्पारेनाह	રાા	ज्ञानसा	७६
भूलोभम	२॥	चिदानं	७६
संतोअच	રૂાા	चिदानं	<i>७७</i>
करलेगुरु ग्रवहमऐ	8	चिदानं	20
	811	चिदानं	62
कोटिकक	३	चुन्त्री	60
वेरवेरनहि	3	ग्रानंद	60
माईतरेआ	६	गुलाव	69
	काफी		
पंथीडारेपं	8	o	८२
वासाईमा	६	ज्ञान०	63
मिलजाजे	3	o	82
तारोमोहि	રાા	गुण०	८५

गाननाम	पदस०	कर्तानाम	पु छ
वाकेगढ	3	0	64
स्रकथक	3	चिदा०	८६
	काफीज०		` '
जगर्मेनते	Sa	चिदा०	60
मूठीजग	3	चिदा०	23
	काफी		
<b>ग्रवते</b> रोदा	ય	झान०	25
हठीछीआ	ર,	चिदा०	90
साघोमाई	६	गुष्टाब	99
झलबल	३	चिदा०	97
<b>जी</b> छोस्रन्	3	चिदा०	93
	टोडी		• `
निरपस्र	ષ	चिदा०	१४
् <b>छ</b> घुतामेरे	6	चिदा०	924

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
कथनीक	यु	चिदा०	90
चेतनचतु	3	आनंद	35
निपटहीक	8	हरख	33
	जंगला		
जिनराज	ય્	चुद्धी	900
नेमदुलहा	3	अमर	909
सांवरेसाज	२	0	909
i,	खेमटा		
नेमिपया	25	दयाध०	902
मेरेसाहिव	3	चुन्नी	903
	घाटी		,
प्रमुकुंसु	8	चुकी चुकी	903
मनकेमनी	४ ा	चुन्नी	308
देखोरी	न ३	0	१०६

१२	॥ सूची प	त्र∥		
गाननाम	पदसंख्या	क्तांना	न पष्ट	Ī
मेरोमनव	Ę	छाछच		-1
श्रीश्रेयास	છે	चुन्नी	308	1
सवसेमला	δ	चुनी	900	l
मेरोमन	3	रूपरि	1.	l
अपनारूप	રે	ध्रानद	1	l
दर्शन प्रा	3	आनद		l
निसदिन	ય	आनद		
करु णाके	3		990	
सुनहुविम	3	_ ~	999	
	केदारा		,,,,	
देखोएक	3	भानद	992	
	जैजेवत)	-11-104	334	
<del>घालक्वकित</del>			- 1	

चुकी चुकी

δ

भएखनिर

**प्राजकी**व

गाननाम	पद्सं०	कर्तानाम	पृष्ठ
तरसकी	રાા -	भ्रानंद	998
मेरीसोमे	2	भ्रानंद	994
ऐसीकैसी	7	ग्र्यानंद	998
	गोडी		`
नेमीश्वर	<b>ટ</b> ડ્ડ	चुन्नी	998
पर्वपजूश	8	चुन्त्री	996
अवतोना	3	चुन्नी	996
रिषभेश्वर	३	चुन्नी	999
सोध्रवहम	8	गुलाव	999
सोअवमेरे	8	गुलाब	920
प्रभुतेरेरूप	३	समयसु	979
प्रभुमेरेतेरे	6	0	977
आजमैप	यु	गुणवि	973
विचारीक	25	श्रानंद	१२४

Ī	गाननाम	पदस०	कर्तानाम	- 1
۲	निसानीक	24	आनद ९	124
١	इक्योलते	وس	चुकी १	२६
١	क्रकी क्रिय	3	झान० '	15/2
1		कल्याण	}	}
١	मोहेकैसे	3	रूपचद	
	मेराजिय	3	खुस्याछ	
	ध्रीरनचे	3	<b>क्रपचद</b>	328
	निपटकठे	1 8	निरजन	353
	नटहोइ	3	निरजन	१३२
	<b>उधिते</b> री	24	0	१३३
	<b>छ</b> िनार्स	ો પ્ર	0	१३३
	माइमेरो	E.	हरखच	338
	इससहर	S	रूपचद	330
	1	1	-1	1 .

गाननाम	पदसंठ	कतानाम	प्रष्ठ
पदमप्रभु	6	चुन्नी	१३६
सुनिजर	عع	चुन्ती	930
टुकवूभा	થ્યુ	कनक	936
टुकवूभा मेरेमन	8	धर्मसी	938
	इमन		
अवला यो	24	चुन्नी	380
	कलिंगडा		
वेश धर	6	ज्ञान०	386
	सोहनी		
अनुभवजे	१ ३	चिदानं	982
शरणतिह	ा ३	चिदा०	985
सुदरनेम	8	जिनदा	983
	कहरवा		
समभापरी	8	चिदा०	388

	`			
7	गाननाम	पदस०	कर्तानाम	
7	चितमेंधरो	3	चिदा०	688
	प्रमुपद्य	શે	( <b>6</b> )	१४५
	प्रमुकेचर	<b>v</b>	निस्रोद	१४६
	नामजीके	24,	ज्ञान०	680
1		सीरठ		1
1	रहेतुम	3	ज्ञान०	288
1	<b>घारानणद</b>	3		588
1	मरणातो	8	<b>इ</b> गन०	१५०
Ì	मूठीयाज	8	ज्ञान०	
١	वाईमोनें	3	ज्ञान०	
	छारे मन	Les.	<b>पुक्ती</b>	
	<u>कडोलार्ग</u>	३	चिदा०	१५२
	<b>म्रा</b> वोजी	٠,	<u>चिदा</u> ०	१५३
	वारोजी	4	चिदा०	१५४

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
प्रभुजीमैं	8	चिदा०	१५६
वरसतव	ષ્દ્	हरखचं	१५७
मेरोकुम	ર	जिनदा	१५८
तारकंअ	6	रामचंद	१५९
घणोमूंगो	३	मूलचंद	१६०
कांईहठमां	६	हरख०	१६०
आजहमा	8	आनंद	१६२
मोनेंप्यारे	3	खुशाल	
म्हैतोथा	३	चैनवि०	१६३
पिउप्रीत	६	जिनस्	338
कंतिबन	25	चिदा०	१६५
होनदिया	8	रूपचं०	980
गिरनार	25	लालचं	•
केवलवा	8	रामचं	१६९

<b>१६</b> ।	। सूची पः	র ॥
		क्तीनाम पुष्ठ
चितमेंघरो	રૂ	चिदा० १४४
प्रमुपदप	Š.	रूपरि १८५

प्रभुकेचर ৩ नाभजीके सीरठ

रहेतुम

वारोनणद मरणातो

मूठीयाज

वाईमोनें

छरे मन

**भावोजी** 

तारोजी

कडोलार्गे

3 4

ų

ą

3

ş

¥

Ę

चिदा० १५३

चुकी चिदा० १५२

चिदा० १५४

ज्ञान० १५९ १५२

निद्धोद १४६

झान० १४७

ज्ञान० १४८

ज्ञान० १४१

झान० १५०

ज्ञान० १५०

<b>१८</b> 	॥ सूची	पन्न ॥	
गाननाम	पदस०	कर्तानाम	पृष्ठ
नितमुरम	3	राम	900
अरजसुनो	8	हरख०	900
म्हानुप्या	શ	0	909
	मल्हार	1	,
<b>भनुमयमी</b>	Ę	चेतन०	५७२
वीरजिनव	S	छद्घि०	903
दिछज्ञानी	R		90૪
माछमझ	Ę	चिदा०	904
गुमानन्य	इ		१७६
विमली	3		908
समकित	9	मूघर	900
घोरघडा	3	<b>फान</b> ०	<i>ઝ્ઇ</i> ୧
मूरतस्वा	S	क्षमाक०	908
गरजगरज	3	धर्मपा०	9601

गामनाम	पदसं०	क्तीनाम	पृष्ठ
देखोष्ट्राज	8	अचल	929
एमाईघन	8	o	962
मैतोठाढी	3	प्रतापां	963
श्यामहमा	થ્યુ	प्रतापां	388
चेतनजी	کع	वालचं	964
चेतनजी	8	बालचं	968
`	भ्यमोटी		
राखू रेह	کع	हरखसू	926
सखीरीचं	7	जैनदास	300
कानविध	3	पद्म०	966
भजनविन	3	रामचं०	929
	रागदेस		
परमातम	,3	चुन्नी	990
क्योंनजप	8	गुलाब	999

२० ॥ सूची पत्र॥				
गान	नाम	पदस०	कर्तानाम	पृष्ठ
		वहार		
निर	.मछहो	Ę	क्षमाक०	982
मह	सेनघर	ક્	चुकी	393
		सहाना	1	
तिर्र	ोमूरत	8	चुकी	368
1	į.	अ <b>द</b> ाना	1	
पृई	ोसुमाव	8	नवल	368
1.		सामेरी		
स्र	त्रुजानु_	६	0	384
₹	हिंबागि	24	मूपवि०	388
ते	विसमा	3	ऋपधि	398
्री म	ाईहेमा	- ₹	जिनरा	386
1	_	रेखता	1	1
घ	रीधन	8	नघछ	366

## ॥ सूची पन्न ॥

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
प्रभुतुम	6	O	२००
कियेआ <b>रा</b>	६	लाल	२०१
किएग्रारा	٠ قع	नवल	२०२
मुफेहैचाह	टेर्	0	२०३
समभले	६	0	२०४
जगतपति	३	लालचं	२०६
कहूंवहब्र	25	0	20%
नेकबातेां	24	चुन्नी	२०७
विनामत	8	चुद्धी	209
खलकएक	6	यदुराय	२१०
टुकनजर	24	0	233
तैरेदरशके	३	मोती	२१२
प्रभुन्निव	ध्य	चंद	२१३
जिनआप	. ६	0	२१४

गन्त्रेरा

गजल

रुमरी

चुन्नी

चुन्नी

घुस्री

अधीर

जिनदा २२२ २२३

गुरु देयजी

ससारनाम

एगाग्हता :

परगेसम्ब

जयतएक

368

799

२२०

२२१

२२३

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
गिरनारी	3	0	२२५
रथचढियदु	3	लालचं	२२६
<b>श्रीचिंता</b>	8	गुलाब	२२६
भूमणकरत	فع	1 2	२२७
<b>श्रीम</b> िक्सन	8	• तन	२२८
अगरमगर	8	दिस	२२९
जिनवरच	8		२३०
नवपदध्या	24	लढीरा	२३१
नेमपिया	8	•	२३२
नेमजिनंद	६	∫ अमृ	२३४
संभवजिन	8	े तचंद	२३४
	् स्याल		
तरसतजि	25	रामचंद्	र्वि३५
वीरप्रभूकी	३	0	२३६

२४ ।	। सूची पत्र	i il	
गाननाम	पद्स०	कर्तानाम्	ष्ठष्ठ
तरीवेहीहै	8	सुमन	२३७
प्रमुजीसुमे	8	सेवारा	२३८
जालमञो	4	निरजन	२३८
एतननिप	3	भूषर	735
<b>मनमूरख</b>	8	भूघर	280
1	যজন্ত		1
ध्यानमेंडि	4 8	चुकी	280
į	सगीत		ĺ
सोहेसुरन	S.	यालच	286
1	<u>छावनी</u>	1	1
तुमसजव	र ४	े जिनदा	285
स्वधरनई	१ ५	<b>ग्र</b> स्थपत	र्वश्र
े किसीकी	¥	जिनदा	્વેશ્ <del>ક</del>
सुगुणनर	:	क्षमाक	286

गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ट
कुमतिकले	8		२४९
सरकजाकु	0	जिनदा	
चतुरनरम	६	o	२५१
<b>अरीमेरा</b> ढु	થ્	o	२५३
नेमनाथमे	90	चतुरकु	२५४
हरीमाईमे	<b>ટ</b> પ્	o	२५६
स्रुनियेरेवा	6	o	२५९
शांतिनाथ	<b>દ</b>	पूज्यजी	२६ १
_	वसंत		
कितजङ्ये	<b>ટ</b> કુ	चुन्नी	२६३
भाएसुख	6	हरखचं	२६४
तुमज्ञानवि	8 -	• •	२६७
कितजङ्घे	३	ज्ञान०	२६७
कितजाण	<b>ટ</b> ષ્ટ્ર	1 • 1	२६८

२६ ॥ सूची पन्न॥				
गाननाम	पदस०	कर्तानाम एष्ट		
मेरेहद्यप	S	कथिरा २६९		
सुविधिना	૪	चेतनवि २७०		
र्ष्यीआज	2	ज्ञान० २७१	J	
ष्पुजातच	3	ज्ञान० २७२	I	
मेरेहद्यक	8	गुणघि०२७२	1	
मनमोहन	کع	अमृत० २७३	Ì	
1.	धमाछ	,	l	
माईरगमर	فع	० २७४	Į	
	होरी		ŀ	
भातमअनु	8	आनद २७६	l	
22.20	धमाछ	1 1	ŀ	
होरीखेलि	8	जिनच २७६		

•	गाननाम	पदसं०	कतानाम	पृष्ठ	
		हो०काफी			
	प्रभुघरक्रा	ય્	गुलाव	2005	
		होरी			
	रंगल्यावा	8	चुन्त्री	२७९	
	हो०खेलैदो	६	रतन	260	
	<b>अचरिजहो</b>	1	ज्ञान०	२८१	
	शांतिकरो	२॥	चुन्नी	२८२	
	ग्रेसोदाव	ं३	गुलाव	२८३	
	सांबरोसु०	1 7	वाल	२८४	
	नेमनाथव		जयरंग	२८५	
1	पायोनरंग्र	8	ग्रवीर	२८६	
1	घर्माजणेर	र ८५	चेतन	226	
	नेमनिरंज	२	जिनधर	२८७	
	चिदानंद	6	रतन	266	}

	२८ ॥ सूची पत्र॥				
Ī	गाननाम	पदस०	फतानाम	पृष्ठ	
1	<b>कावरी</b> सुर	v	नदीय०	२८९	
1	समेतिशिख	فع	रामच०	290	
1	घर्मिजिनद	३	अमृत०	297	
1	क्रास्दईला	8	भद	२९३	
1	आनदपा	ય	रामच	388	
1		धूरिया	1	1	
1	परघरखे०	3	ज्ञानसा	794	
1		हो०कार्फ		1 1	
i	भाइमति	3	<b>ज्ञा</b> नसा	२९६	
	}	होरी		1	
	साहबसा	3	चैनवि	290	
	सजराजुछ	२	चैनवि	290	
	मेरोपरम	3	अधीर	386	
	होरीआइ	E	चुकी	296	

गाननाम	दपसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
हो॰आईतुं	8	अवीर	299
अरीमैंकै	सोरठ ३ होरी	ज्ञानसा	300
चेतनखेलैं	8	रूपरि	309
टुकसुनले	25	o	३०२
हो०खेलो	8	0	३०३
हो० षेलत	3	0	308
ज्ञानतोअ	3	विनय	308
मधुवनमें	3	क्षमा	३०५
समेतशिख	3	क्षमास	३०६
ग्रैंसेषेलत	٢,	0	३०६
रंगमच्यो	६	रतन	306
ं लागीमेरी	દ	0	309

३० ॥ सूची पत्र॥			
गाननाम	पदस०	कर्तानाम	पृष्ठ
सावरेसीक	ب	रामच	३०९
	होरी		
<i>प्राजमवि</i>	δ	•	333
	होरी		
किनहारी	8	नवस	397
सुधलोजे	8	चेतन	393
मेरोनेमपि	ष्	ज्ञानय	₹98
साधीमाई	8	<b>भु</b> द्गी	३१५
'	कछिगद्वा		} {
कुन पेलै	8	थानद	३१६
मतखोडी	3	0	3 9%
जमयोछी	8	जिनच	3 3/0
मनलागो	२	0	396
नेमस्याम	8	0	398

			1
गाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
	भै०होरी		
अरेमनप्र	् ३ होरी	चुन्त्री	३२०
• •	1		
जयवोलो	8	चुन्नी	३२१
मेरेप्रभुसे	8	चुन्त्री	३२२
होरीखेलें	३	चुन्ही	३२३
याद्वमन	24	चद	३२३
केवलवाले	8	हीरधर	३२४
वदोभवि	ષ્	प्रतापी	३२५
आजचाल	ते ६	रामचं	३२६
, घरआए	३	हरखचं	३२७
मुनिसुव्रत	0 1	चेतन	३२८
पावापुर	6	चेतन	३२९
होरीषेलो	8	पूज्यर्ज	1 ३३०

	इ२	॥ सूची प	স n	
	गाननाम	पदस०	कर्तानाः	न पृष्ठ
	याजिनद्वा	S	हसरा	
i	ससीयोधि	3	अमतच	1237
ı	घदनकेकद	દ્	सूरि	333
ı	<b>सँ</b> यारेमेरे	છે	अवीर	338
	होरीआई	થ્	चुकी	334
ı		व जरी	•	44.2
	तुमेरहोरे	9	नैनिय	336
١	संखियन	Ę	रामच	३३६
I	र्मेतोलागु	ષ્	घद	३३८
ı	देखोजिन	ų	वाछ	338
I	चढिष्राध्यू	9	रामच	355
l	<b>प्राजहर</b> स	ર		380
ı	राजुएकहे	શે		३४२
ļ	फहतपुका	ا	~ I ~ I I	३४२
_			<b>⇒</b> ∃ ∣	388

1	ाननाम	पदसं०	कर्तानाम	पृष्ठ
7	शलनकी	८५	0	३४५
1	नेमआंखा	8	0	३४६
1 5	कैामदिन	8	0	३४६
,   ;	मेरे छाज	25	राम	380
		गरभा		
	श्रीचिंता	0	जिनचं	386
	संभवखार्म	તે દ્	मान	382
		देसी		
	पहिलोझं	ग ८	बिनय	३५१
- 1		साधारप	1	
	देखीतिह		चुनी	३५८
	साधीभा	ई ३	चुन्नी	348
	<b>प्रमुमया</b>		क्षमाव	ह ३५४
	सिद्धाच	उ ५	क्षमार	र ३ ५ ६

३४ ॥ सूची पत्र॥			
गाननाम	पद्स०	क्तांनाम	
मेरे प्रभु	Ę	चुकी चुनी	300
तुमोसममा	8	चुनी	३५८
दुकनजर	ae	0	३५९
<b>अवतोचे</b> त	દેષુ	चुकी	३६०
गफलतमें	وم ا	चुनी	383
सिधचक	∫ દ્	<b>अमृत</b> ०	३६१
नप्पदजय	e,	सुरि	३६२
∖घर्मेश्वर	وم	नेमिष	३६४
श्रीसीमध	24	चुनी	३६५
वनवनआ	ا کو	चुनी	३६६
धाजसरग	8	न्यायस	1,३६/७
कुगछगुरु	मे	े छालच	३६८

( , )

## नमः श्रीजिनप्रवचनाय

## रागभैंखी

योगीश्वर तेरि गती क्या कोई विचारे यो० अनुभवकी वात अगम बिरला कोईधारेअद्भुतअखंमजोत शोभात्रिमुवनमें होतनिरुपम हे रूप परम गुण आनंद कारे यो०।१।योग मैं अयोग नहीं संसारी भोग नहीं राग द्वेष मोह कर्म फंदरीं किनारे। २। मत मत के भेद बहुत कर्मकी लपेट यहुत नानाविध रूप धरे पंथ न्यारे न्यारे यो०। ३। स्वै मतमैं भेद नहीं

गाननाम पद्स० कृतानाम पृष्ठ	<b>₹</b> 8	॥ सूची	पन्न ॥	
पुक्ता १ पुनी ३५८ ३६९ भुनी ३६५ भुनी ३६५ भुना ३६५ भुना ३६५ भुना ३६६ भुना ३६८ छ।छच ३६८	मेरे प्रमु तुफ्तेसम्मा दुफ्तजर प्रवत्तिचेत गफलतमें तिधषक नपपद्जय धर्मम्बर प्रासीमध बनयनआ वाजतरग	EA 20 CD SQ SQ SQ SQ SQ SQ SQ	पुत्ती पुनी ० पुनी पुनी प्रमृत० सुरि नेमि पुनी पुनी न्यापसा	3 4 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5

केवल नाण उपाय जिणेसर मुक्ति रमणिकुं चायाहे दे० ९ दशबिध पूजा रचना जिनकी सबमिल मंगल गा याहे सेवें सोही लहे सुख संपत सब संतन मिल गायाहे दे ० २ सुर नर मुनि जन भक्ति कर्तहे क्वि देवत मन भायाहे तीन लौकमे महिमा ते री चंद खुस्याल गुण गायाहे ।। दे० ३ ११ इति पदं ।। रागणी प्रभाती

प्रात समै उठ चलो मंदिरमैं जिन सैप्रीत जोला गीरे तुम विन देव अब र नहि बीजो देखा त्रिसुवन जोई रे९ प्रा० दास तुमारो करत वीनती तु मविन मेरो नकोई रेप्रा०॥ इतिपदं॥ वेदमें अवेद नहीं भर्मजाल घीचमै अ नेक भेदमारे चुनी छख अछख नाम अजपा जप सिंद्ध काम सोह जयका री निजकाजही सुधारे। ३॥ इतिपद राग भैरवी चेतन चतुर बोगानमें आया जी सर्छ मोह राजका एसकर जगमें शूर कहावा ९ चे० घ मेराज महाराज रा जके शमता शील जगावा २ चे० दा सचुकी स्त्री रिपभ पक्तजमें शिवपुर का सुखपायो ऽऽ इतिपदः ऽऽः राग मसाती देपो रे आदीत्रार स्वामी के सा ध्यान लगायाहै देग कर उपर कर अधिक बिराजे नासा नेत्र लगायाहे

दोदरी द्वोपदा जिन भक्ति सदाई ते पूजत जिन राजकुं सुर पदवी पाई २ चि० शाशन पति नित समस्यि बीरजी बरदाई श्री जिन लाभ लहै सदा गुण गण गहराई चि० ११ ३ ११ इतिपदं ऽऽ ऽऽ राग भैरव ऽऽ

साहिब करूणा निधान सुन पुकार

मेरी दीन बंधु जग दयाल शरणागत तेरी सा० भव अठवी विकट सघन जिसमै अगणित है विघन चार जार ठग लूटे डार माहअंधेरी सार्वकिस विध उतहंगा पार अपना काई नही

है लार अवसर मै श्वामि नाथ चहि ये नहि देरी सा० सानिध करिये

राग प्रमाती

धः इतिपद् धः

रग लागरे दुप्ट बुद्ध काम फ्रोच लोम

प्रातभया जाग प्यारे धरम मा

मोह त्यागरे पचसु प्रपंच क्रीम पच हीं सु हेत जोम पचही सु करे के म पच होंसु पागरे प्रा० १ पनरेसु प्री त खोय तेरेईसु सर्व है।य सतरे का बीज बाय सातनते मागरे नवस तुम नेहघरे। जीतके भड़ार भरे। घेदघा तिनाशहाय पावे शिव मागरे प्रा॰

राग बेलाउल चित सेवा जिन चरणकी करलें सुख दाई घेाघबीज निरमल हुवे मि ध्या मति जाई चि० ९ रावण म

दोदरी द्वोपदा जिन भक्ति सदाई ते
पूजत जिन राजकुं सुर पदवी पाई
२ चि० शाशन पति नित समरिये
बीरजी बरदाई श्री जिन लाभ लहै
सदा गुण गण गहराई चि० ऽऽ ३ऽऽ
इतिपदं ऽऽ
ऽ राग भैरव ऽऽ

साहिब करूणा निधान सुन पुकार मेरी दीन बंधु जग दयाल शरणागत तेरी सा० भव अटवी विकट सघन जिसमै अगणित है विधन चार जार

तिरा साउ मय अठवा जिंकट स्वम जिसमे अगणित है विघन चार जार ठग लूटे डार माहअंधेरी सा० किस विध उतहंगा पार अपना काई नहीं है लार अवसर मै श्वामि नाथ चहि ये नहि देरी सा० सानिध करिये  $( \cdot \cdot )$ 

द्माल प्रण अपनेकु समार दास चुकी पार छहे कूटें मब फेरी जा? इति पद !!

राग मैरव मैबोइरी फ्रातम नही चीना नर

भव पाय क्यू नही कीना मै० याल प्रवस्ता खेल वितानी तरूण भई ज य सारन जानी धातम ज्ञान विना पद्यतानी मै। विरध मए जब सीच ए घाया जन्म पदारच यूही गर्मा या काम राग घट निस दिन भाग मै। एते काल मै सप जग मटकी छ

जहु चेत्र खबर छे नटकी दास चुनी नेह नायसु प्राटकी मैं। ब्रेति पद ऽऽ ।ऽ राग मेरव ऽऽ

जब हम रूप प्रकाशा ऋवधू ज गत तमासा भासा जारागा बख न सिर पर भार तामैं भूखा प्यासा रा ग जरजरि देही जीरण एते पर फिर हासा ज । रूप रंग नही तनु बल व स्था भिक्षा सन नीरासा सानु रूप वनिताषूं संगत फिरहासें पर हासा ज। चहिये रूदन जहाक्यु हासा माह क्राक क्रियासा ग्यान सार कहि ज ग वासीकी वाहिर वुद्धि प्रकासा ज द्गित पदं॥

ऽऽ राग भैरव ऽऽ

मनुष्रा वस नहि स्रावे स्रवधू कें सै राय दिखावे मा स्थान किया सा धन तैंसाधी खातरमै न खतावे सो वत जागत घैठत उठत मन माने जिहा जावे म। भ्राप्त्रव करणींमै स्ना पेहीं विन मेरी उठ घावे सपम क रणीं जो आरापु ता असही अलसावे म। नोर्देखिय सज्ञा हैयाकु परसयकुषू जाये रनकु घिरकींना सीपुरसा प्र न्य पुरस न कहावे म। सुर नर मुनि वर प्राप्तर पुरदर जो रतके वसन्त्रा ये वेद नपुसए केलो अनकल खिण में रोय इसाब मा सिद्ध साधने सब साधनते एहि प्राधिक कहाव ग्यान सार कहि मन यस याके सो निहर्षे शिव पार्वे म। इति पदं ॥ राग भेरव मोर मयो मोर भयो मोर भयो प्रानी चेतन तू अचेत चेत चिरिया चचहानी भो० ॥ कवल खंम खंम वि कस कै।लनी मुदानी कंज उपम खं जनसी नैना न घुरानी भो०॥ है वि भाव बीच नीद सुपन की निसानी तेरे सुसुभाव माहि दोनुं न समानी भो० ॥ आरेापित धर्म तैं सुरूप की दुरानी रूप के सुज्योत ज्ञान सार ज्योत ठानी भो० ॥ इति पदं ॥ ॥ राग खट ॥ जागरे सब रैन विहानी। उदयो उदया चल रबि मंमल पुन्य कालक्युं सोवे प्राणी जाउँ । कमल खंम वन बन विकसाने प्रजहुं न तेरीं द्रग उघरानी चेतन धरम अनादि तुमा ( ( ( )

रा जम सगत ते सुध विसरानी, जा॰ तुम कुछ दोय अवस्या पईंचे नींद सुपन ये जह नीसानी सातम रूप सभार आपना कब तुमरे घर कुमति घरानी जा० ॥ सुघि युधि भूछे नि रूपम रूपकी याते घट घढ होत क हानी निहचे ज्ञान सुरूप तुमारे। शा न सार पद निज रजधानी जा० 1 इपि पद 🛚

ा राग घेलाउल 🛊

मेरा कपट महल विश्व हेरा। भा तम हित श्वित नित प्रति श्वाहु । न तजू साम्स सबेरा मे० ॥ सीवत श्रेठ त उपस् साम्य स्थेत स्थान

तजू साम सवरा में? । सावत घठ त उठत जागत याका खरच घतेरा मरणुप कठें आय सम्योह सम् हिक ऋधिकेरा मे० ॥ द्वार प्रवेस जिन मत संबंधी लिंग ऋिया प्रानु सेरा दान शील तप भावुपदेसन च्या र साल चैंाफेरा मे० ॥ प्रवृत निवृ त्ती वाह्याभ्यंतर जालीए सुविसेरा प्रगट विरुध जिन चरन प्रवृत्तुं एह मरेख भुकेरा में। मेरे पद लिखे भरम धरे काउ ख्रातम तत्व उजेरा निहचैं घटत प्रगट भया तब एसा वचन उचेरा मे०॥ कपट कदागृह लिख गक्क वासें तज गक्क वास बसे रा हिरदैं नैंण जैं। नीका निरष्ं ईह किंचित ऋधिकेरा में ।। आतम तत्व लक्त नहि दीसैं जिह तिह ममत घनेरा ज्ञान सार निज रूप न निर

स्तो तार्ति सब उर भीरा मे॰ 🛚 इति पद ॥ 🛚 राग वेलाउल 🗈 जिन घरनन की बेरा हता आ में पीछे हुई। तारिस ताक्यु करें म वेरा हु० । चरमा वर्सन चरम करन विन कैंसे मिटें भव फेरा तूस्यु ता रिस तू तारकस्यु जो हूं करिस नि वेरा हुए । निज सक्रप निहुचे नम निरपू सुद्ध परम पद मेरेरा हुही भ कछ धनावि सिद्ध हु धजरन धमर अनेरे। हु० । अन्यय छाद्र व्यतिरेक हैं पु एसि मेट रूप अधेशे परमासम अतर बहिरातम सहिज हुस्रोग्धर भी

रे। हू॰ ॥ तू परमातम हूँ बहिरातम

तू साहिब हूं चे रेा दीन बंधु कर म हिर निजर भर ज्ञान सार पद नेरा हूं०॥ इति पदं॥

॥ राग वेलाउल ॥ कंत कह्यो हूनमाने माई मेरेा। किती वेर कहि कहि पचिहारी प्रग ट कह्यो कहि क्वानें मा९॥ समभइ ये गोसेंसिर सजनी दया कहिये म इयानें दुरी बात ग्रपने भरताकी क हिये कैंनि बहाने मा९॥ हारी बार कही किह सजनी तब प्रगठी किह वा ने माया ममता कुर्बाध कूबरी उनके संग दुराने मा९॥ निज सरूप बाल क नहि जाने पर संगति रति माने भये सरूप ज्ञान ते भगनी श्रपने पर ( । ) पहिचानें मा९ ॥ सब तेरे पर<sup>्सग</sup>

परेगो म्पं एतो दुख माने ज्ञान सा रते हिल मिल खेले सिद्ध अनत स माने मा ॥ इति पट ॥

रत हिल मिल खेल सिद्ध अगार माने मा ॥ इति पद ॥
॥ चेलाउल ॥

ग्रानुमव हम कयके ससारी मर्र जनमे न अनादि काल में सिव पुर यास हमारी भा ॥ राग द्वेप मिल्ला

की परिणित सुध सुमाव न समावे अनकल अनल अनादि सर्वाधित आतम माव समावे छ ॥ षध मोस

श्रातम माय समाय श्र ॥ घघ मास निह तीनू काछे रूप न रग न रेखा निहचे नय जिन श्रागम सेती स्थ मुमाव परेखा श्र ॥ कायन मायन

जायन भायन भायन भायन जाता

( 4)

सुद्ध शुभावें ज्ञान सार पद पर भावे पर नाता स्र ॥ ईति पदं ॥

ा। वेसाउस<sub>॥</sub> श्रनुभव हम तैं। राउरेखोरे छ। फोज बगस के लस्के हे। कर बार गीरी मैं दोरे ग्रम देश विरत जी वाई यामैं क्या खावे क्या जोरे गांठ गरथ घरके घोडे बिन कैंसें श्ररि दल तोरे श्र∥ घर वखरी सव वेचे खाई हाथ हलावृत डेारे ज्ञान सार जागीरी लेकर कैंसे मूं क्र मरें। रे अभा इति पदं॥ ॥ वेलाउल,॥ 🕆

॥ ज्याउल ॥ ज्ञान कला गति घेरी मेरी याते भह्रेय अंघेरी मे ॥ मिथ्या तिमर भ मर पसरन ते सूक्षत निह घर सैरी मम मूठी ईस उस ढढोरू है खेतन ता नेरी या बिन सबर न छपनें प रकी परसत वेर छबेरी मे ॥ बरमा

षसं नादि कारण कर पाकेगी भव फेरी ज्ञान सार जब हाँछ खुछेगी अजर अमर पद केरी में । इति पद ॥ वेलाउल ॥ ज्ञान पिशूप पिपासी हम ते।

भनत काल मय ममण अनन्ता ए भासा न बीघासी है। मिध्या त्वा दि यथ कारण मिल बेसन ता जड मासी सीर नीर समदेस भ्रष्यापक स्था व्यापक अबि भासी है। भव

परणित परपाक कु मिछ चेतनता

सुप्रकासी ज्ञान सार आतम अमृतरस रुपत भए निर आसी हु० इति पर्द।

॥ वेलाउल ॥

पर घर घर कर माच रह्योरी। प० किती वेर गहि गहि कर क्वास्वी कैसे प्रपनो याति कह्योरी प०। मर जन म्यो बिरच्यो नहि तबही कवही न पर भव संग वह्योरी आ यु भामी दीनो जेते तेते तुमको ब सन दयोरी प०। तुं न शरीर शरी र न तेरा सोपार्घें निज मान रह्यो री ज्ञान सार निज रूप निहारी भ्र कल अमर पद अमर भयोरी प०॥ इति पदं 🗗 µ वेलाउल №

( ८० ) ∽ क्या करिये ध्रर दासाःसाधो ।

वे जर्गा पूरक झासा साँ०। मातुज जनम देश कुछ झारिज जनम दिया

जिन सासा साए। घस उकेस लिग जिन दरसण रूप रग बल भासा म गट पचड़ द्वी नर हुदर पूरण प्रामु प्रवासा साए। याकी महिर लहिरची

रो दिख रज घानी धीरासा सिव न गरी फामि स्थाप छोक के। राज बि यो रिघ रामा सा०। याके अगरग

को सगित जग करता सुप्रकासा हा न सार निज गुण जय चीनें हम सा

हिंग जम दासा सा० । इति पद हैं है प्रभाती हैं: उठी नें मोरा झातम राम जिन ( {2 )

मुख जीयवा जईयेरे उठा जिंग जी नो दरसण है प्रति दोहिली तेकिम सोहिला जाणेरि वार वार मानव भ व जेहवो जुमवो मुसकल टानारे उ० च्यार दिवसनुं चंठको मठको देखीने मत राचारे बिनसी जाता बारन ही गैं काया घट हैं काचौर उर १ छ नंत गुणे भरियो इह जिन वर पूरव पुन्यें पायोरे एहनें देखी दिल में आ नंद करतुं सदा सवायो रे उ०। ही रे। हाथ ग्रमिलिक आया मूढ हिवैं मति गम जेरे संहिज संलूणा पास जिनंदसुं राजी हाय चित्ररम जैरे उ०। मन गमता तुं माहरा आतम करिजे सुकृत कमोई रे लाभ उदय

जिण चद छहीने वस्ते सिद्ध् यघाई रे उ०। इति पद्ध

। ममाती **॥**।

छाज रिपभ घर छावे देखो मा इ भा०। रूप मनाहर जगदा नदन सपही के मन भावे देखों। के रमक ता फल घाल विसाला केर मणि मा णक क्यावे हम गम रच पामक वर कन्या प्रमुजी कु वेग यधावे देखो० श्री श्रीवसी कुमर दानेसर इक्ष् रस यहिरावे उत्तम दान प्रधिक प्रमुत फल साधु कीरत गुण गावे देखों। इति पदः।

- 🛘 मभाती 🎚

आगन कछप फरपोरी हमारे मा

**इे अंग । रिध वृधि सिध सुख संप** ति दायक श्री शांति नाथ मिल्योरी हमारे अं०। केसर चंदन मृग मद भे ही माहि वरास मिल्यारी पूजत श्री शांति नाथजी की प्रतिमा प्रलग उ देग टल्यारी हमारेअं९ ॥ सरणे रा ख कृपा कर साहिब ज्युं पारे वा पत्यारी समय सुंदर्कहै तुमारी कृपासें हुं रहि स्युं सोहिलोरी हमा९ इाते पदं ॥ ॥ प्रभाती ॥ क्यो कर भक्ति कहं प्रभु तेरी क्यु९॥ काम ऋोध मद मान विषय रस क्रामत गेलन मेरी प्रश् ॥ करम

नचावत तिमही नाचत माया वस

भपणी पर निदा अधिकेरी । कहते मान जिन माथ भगत बिन शिव गत होत न नेरी । प्रशें इति पद ॥ ∦ मभाती **।** ं प्रमु जा तुम तारक नाम घराया ता तारा मुक्त चहीये पर ता । दीनें दयाल दया निधि साहिब मेरी और चित्रईये जो अमोसु पतितन याहि ज गत मे बुजोऽ ओर न पहचे जो सुम पतित उँचारन शास्त्र अपनीः विदु द वढहरी जोर । जींबी कान द्याल जगत में जाके द्वारे जईये जा प्रमु

मट चेरी प्रााि ९ केल्लिए राग इट यचन या भ्या निकस तान छहे सेरी प्रशा करत प्रससा सब मिछ जी तुम माहि विसारा । ता काका होय रहिये प्र१ ॥ सुमति जि नेसर साहिब-जीसे बहुत कहा लग कहीये॥ हरख चंद सेवक की लजा बाह गहे कि निबहिये प्र९॥ ईति पदं॥ 📑 🤭 । प्रभाती ॥ ं प्रभु तुम तारक है। तिहुं जंग के प्रश्वा प्रानंद कंद सदा सुख दायक नायक है। सिव मग के ॥ प्र९॥ मे। सुं प्रधम प्रनेक उधारे प्रधिकारी जिय प्राच के ्॥ प्रश् । श्वान सिंघ सुर पद दुर के कीनें नाथ सुरग के प्रश् ॥ परम पातकी दुर गति गामीं साधन हार नरक के ॥ प्र९॥ असे

पतित पवन करता रे सारे काज क्

रग के 🖟 प्र९ ॥ दुरित देखन दुख से कट भजन सदा सदन उक्त रग के

प्रश् । हरख चद व्रथ मार्न जिनेसर हित कारीं चिहु सग के 🛚 प्रश्पद 🖡 🗜 वेछाउछ 🛚 रे घरियाछे याउरे मत घरिय यजावे नर सिर घाषेँ पागरी तं क्या चरिय यजावे रे 🛭 केवल काल कला कर्लें पें तू अकल कहावे अक छ कला घट मैं घरीं मोहि सो घरी मावे रे 🛊 भ्रातम भ्रमुभव रस भरीं

यामें ओर न मावे आनद चनकामि चल कला विरका कोई पावे ते ॥

पद ॥ ^ ॥ वेष्ठाउष्ठ ॥ ( २५ )

क्या सोवे उठ जाग बाउरे अंज रि जलज्यूं छायु घटत है देत पो हरिया घरिय घाउरे क्या । इंद्ध चं द्ध मुनी नागेंद्ध चलै सब कुण राजा प ति साह राउरे क्या । भमत २ भव जलिंघ पाय के भगवंत अगति सुभा व नाउरे क्या।कहा चिलंब करे छाब वोरो नर भव जल निधि पार पाउ रे फ्रानंद घन चेतन मय मूर्रात सु द्ध निरंजन देव धाउरे क्या 🔈। इति ॥ वेलाउल ॥ उदयो स्राज स्रानंद मे० । देवं दयाल भली बिध देण्यो स्त्री स्त्रेयांस जिनंद मे०। सुंदर रूप बह्न की शोभा बरन सकत नहि इद पूरण

( 44 )

मल मणमति प्रमुदित चित स्त्री जि न लाम सुरिंद में । इति पद म में बेलाउल म मेरे इतनी चाहिये निस दरसन पाउ चरन कमल सेवा कक मेरे। जी व रमाउ में । मन पकज के महल मैं प्रमु पास बसाउ निपट न जीके

हुय रहु चरनें चित छाउ मे॰ । अत र जामी एक तु अतरीक गुण गाउ आनद के प्रमु पास जी मै श्रोर न

॥ राज वेलाउछ 🖡

भ्याउ मे०। इति पद् ॥

पुन्य किया प्रमु पायो करुणा सजल समद मे॰। सुध मन सेवित नाग न रा मर चद सुरिद मुनिद चरण क

तब प्रभु ऋजित कहायो मेरे। प्र मु काहूके बसि नायो त०। मास्यो मदन महा मेवासी माह मही के मन भाया पं चेंद्धी मन अह षट ऋम तिहां निज हुकम मनाया त०। अं त रंग अरि सकल विनासे परमाणंद सुख पाया असो राज प्रजित जिन चऋ धर उर पुर तखत सुहाया त० ईति पदं॥ ॥ सुहा वेलाउंल ॥

भगवत भजन करन की वेला क्या सोवे उठ प्रगट इजेला भ०। काल निर्रथक मत खोवो प्राणी फिर पा ना नर जनम दुहेला भ०। ज्याति श्वरूप निरख अविनाशी घट वासी ( ₹# }

चार विश्वेकी ज्ञान गुरु परघान है चेला म०। मिण्या स्याग तिहा चढ बैंठे जहा भविषल सिक्को का हेरा

तन ताप युमोला म०। घ्रालख निघा न प्रगट सन मुख है जिनसे जनम मरण मय ठेला मर्। चुकी चित्त वि

भ० । पद । **॥ सु**हा वेछाउछ ॥ समभ मन जग घोखे की टाटी

काल घनाद से माह नींद धस जि दगी धकारय काठी स०। गाफिल

क्यु अब चेत चतुर नर काछ स्नमा छिय साठी स॰ । प्रध्यातमधर घ्या

न हिमे में ताम करमकी काठी सा स्य गुण रच पर गुण मतराची छा ( २६ )

खर एक दिन माटी स९॥ दास चु नी शुभ भाव मै लीन हो लंघ भव सागर घाठी स९॥ इति पदं॥

॥ भैरवी ॥

दीन के नाथ दयाल सभन का तैं काहेकुं कृपा बिसारी रे दी९ ॥ मै हुं दीन ग्रमाथ जगत मै तुं सा हिंच उपकारी रे दी९ ॥ प्रण अपने की रीत निवहिये दो संपद सुख का री रे दी०॥ दास चुनी सेवक की अरजी सुनिये प्रभु जस धारी रे दी र्इति पदं॥ ॥ गजल भैंखी ॥

गुरू देव जी का ध्यान सदा चि

त मैं लाईये पातिक सकल भव भव

( 👯 )

के खिण मैं गमाईंगे । निरुपम श्व रूप जिन का छमी रस से हैं मरा निर्मेष्ट गुनें। कुदेख देख छानद पाईंगे

ग९ ॥ साहिय सुजान जिनके घरन की सरन गही जागी सुमति सुघर सैं परम पद कु ध्याइंगे ग९ ॥

दाता दयाल यिनके सिवाय जग में कोन है जिनकी कृपा श्रेयोप हिये मैं जगायिये गुरु ॥ गुरु भक्ति स्नान

म जगायम गर् । गुरु मास्त्र भान भ्रपने हदय योच चूनी दास सेवा में मन कु दीजे सुजस सुख से गाई

येग० इतिपद् ॥
॥ प्रासावरी ॥
औष ए जग का ध्याकारा के।।

निष्णु ए जग का स्नाकारा के हिं कस्या न करणे हारा स्नर् । पृथवी पानी पवन प्राकासा देखत हात श्र चंभा इत्यादिक आधेयैं परगट दीस त केायन थंभा अ९॥ या भरमैं भू लै जग वासी करता कारण गावे करम रहित जग करता कारक कैंसे कर संभावे अ९॥कर्त्तू 'प्रकर्त्तू अन्य था करणे समर्थं साहिब माया घ ट पट घटना यैं पुन पटवी या रच जग निर माया ऋ०॥ कस्यो न काई करैं न करसी एह अनादि सुभावे विनस्यो कषहि न विनसैं ए जग जिन आगम जिन गावे ग्र ९ ॥ ग्र गन सिला पंकज नहि प्रगटैं शशक उठैं नहि सींगा आकासैं न हुवे फूर वारी कैंसो मीया अंगा ऋ९ ॥ कृत विनास प्रकृत अधिनाशी सब्द प्र माण प्रमाणे ए उक्षण तुमरी उक्नना ये सकर दूषण आनें घ्र 🛭 अत घ्रा

दि विन छोक न कहिस्यो घण छ हिरण समासी प्रथम पहेँ घटना न हि समव सम का छैं हि घमासी घर प्रथम पर्छ पुरसा नहि नारी तेसे ईमा पसी घीज यक्ष महि पाछे प हिले है सम काम अपेसीं घर 🛊 कोक धनादि धनत भगधीं है पट द्धव्य घरोरा याके अंते झान सार पद सय सिद्धों का हैरा # ग्रा९ पद # 🛚 प्रासावरीं 🛭 **अवध् आतम तत गत यूमी आ** पहि छाप सक्से छ९ । जातम दे व धरम गूरू छातम आंतम सिख सि ख सिक्षा आतम शिव पद कर्त्ता कर णीं आतम तत्व परिक्षा घ्रा०॥ घ्रातम गुण थांनक आरोहण क्षायक चरण वितरणी श्रातम के वल दंसण ना णी अचल अमर पद धरणी अ०। श्रिरिहंत सिद्ध श्राचारिज पाठक सा धू संयम वंता आतम मेरा ज्ञान सा इति पदं॥

॥ आसावरी ॥
अवधू या जग के जग वासी ।
आसा धार उदासी घ्रा० । जलिध उलंघै गिणयन अंगै जिय जोखम मेपेसै जे निर घ्रासी खुसन उदासी

डेंसि पद #

बीज कैंगिन उगासी भ्रा०। कामादि क सब यानी सतित पर परणित की मासी याते येगों सोय सरेगों जो भ्रासा निह घासी भ्रा०। अम्ह रघू मिंघ भ्रान हद घूनिकु सहजे आ प घुरासी भ्रातम परमातमता भ्रा नुसर हान सार पद पासी भ्रा०।

दिल चाहे उठ धैसे प्रा०। वे देह क विम जो निर आसी सोइ विदयन मासी याकी प्रासा यिन आसा नो

श्र आसावरी ॥ अवधू आतम मरम मुलाना या ने आतम तत न पिक्काना अ०। आतम तत मैं मुम सम नाही निज सरूप उजियारा जनम मरण गति श्रागति नाही शिव पद विच वसि यारा श्र॰। जिह नहि राग सोग न हि भोगा श्रचल अनादि श्रगाधा याका श्रभिधा ज्ञान सार पद श्रक्षय श्रव्या वाधा श्र॰। इति पदं॥

॥ आसावरी ॥

श्रवधू सुमित सुहागन जागी कु मित दुहागिन भागी अ०। श्रविसं वाद पक्ष फल श्रन्वित जिन श्रागम श्रनुयाई अँसे सब्द अरथ की प्राप ति याकी संगत पाई अ०। विधि प्रतिषेध करी श्रातम धी रूप द्वय श्रविरोधी अँसी श्रातम धर्म गृहण विध्य गृहिया गृहण विबोधी अ०। न रह्या भरम भया उजियारा सदग त धर्म विचारा ज्ञान सार पद निह चे चीना जल मय जल च्यापारा भ्र इति पद ॥

» स्थासावरी n

अवधू आतम रूप प्रकाश भरम रह्मा निह मासा कि । निह हम इसी मन यच तन यछ निह हम मास उसासा अ०। क्रीय मान मा या निह छोभा निह हम जग की

स्नासा नहिं हम रूपी निह मय कूपी निह हम हरस उदासा अ०। बघ मोक्ष निह हमरे कबही निह उप पात घिनासा सुद्ध सरूपी हम सब कार्ट ज्ञान सार पद बासा अ०। इति पदं ॥

॥ आसावरी ॥

श्रवधू स्रातम धर्म सुभावे हम संसार न आबे येही भरम हम मय संसारा हम संसार समाए उदित सुभाव भानु ज्ञातम घट भृमत मते भर माए घ्र०। पट घट घटना घट पट न घटें तीनूं काल प्रमायें जला व धारण थी सीता तप घट मैं क ब न घटायैं अ०। तैंसे आप धरम थी आतम केाई काल न जावें नि भरम सदा काल तुभ माही चेतन धरम रमावे अ० ॥ जल तरंग थी अन चल चंचल क्वाया वृक्ष लखावे ज्ञान सार पद मय निहचे नय सि द्ध अनादि सुमावे अ९ ॥ इति पद

अभासावरी ॥ अबषू जिन मत जग उपगारी या हम निष्ठचे धारी घ्रा९ ॥ सरय मर्छ सरवर्गे मार्ने सत्ता मिस्र सुभावे मिस्न २ पट मत गम मार्खें मत म मत्त हट नावे घर । नय घादी घ पनो मत थापे और सह उथापे ए हर्ने धाप उधापक बुद्धी एक २ दे

र्से च्यापे अ९॥ जे २ सिंद्धा ता मा भाष्या पट मत अग वतावे जिन मत नें सरवगी दाखें पिणन विरोध जणावे अर् । मत ममत्त वाता न उदीरे तदगत सुद्ध सुमाबे घदे न हि निदे नहि सबक यथा जोग्य पर चावे अ९॥ एहवो निक्रोधी नि रमानी अम माई अममत्ती तेणे जि न मत रहिस पिछाण्यो अन्य ते म त्त ममत्ती अ९॥ श्रेंसे सुद्ध जिना गम वेदी जे निज आतम वेदे ज्ञान सारथी सुद्ध सुपरणित पावे सिद्ध अखेदे अ९॥ इति पदं॥ ॥ आसावरी॥

॥ आसावरा॥
अवधू कैंसी कुटंच सगाई याका
निह संबंध सदाई अ९॥ मात पि
ता दियता बैंठेही सक जो सुत मर
जाई उन बैंठेही मात पिता सुत
ग्रांधी मै उठ जाइ अ९॥ जननी
जाया जाया जननीं मर पिय थाये
माई माता बनिता बनिता माता

पित माता पुन बाई अरु ॥ दुप दी

इग दुरगते अंकेलो जनमें फिर मर जायी घष भोग में आप अकेलो षयु समझे महि मायी आरु ॥ शुद्ध

अनादि कप कू सोचे जर्म में तूंन समायी सम वायी गुन जो तुम सू में ज्ञान सार पद रायी अर् । यि ति पद ।

॥ आसावरीं ॥ साधी मार्यी छंसा जाग कमाया याते मुगभ छोक भरमाया सार् ॥ याह्य किया दर सार्यी साक्षी अस्य

तर से कारा मा साहस पर कर फिर सोचत रे रे आतम भीरा स९ ॥ स जम पा यो पुन्म स्वोगी पाल्या न हि ते पापी फिर असो नहि दाव वनेगो चितवन चित ख्रव्यापी साए। क्या कहिये कचु कह्यो हुन मानें रे रे ख्रातम अंधा ज्ञान सार निज रूप निहारे निहचे हुय निर वंधा साए। इति पदं॥

॥ आसावरी ॥

साथो भाई ख्रातम खेल ख़खेला सो हम खेल न खेला सा० । बंध मेक्ष सुख दुख की घटना ख़ातम खेल न घटना सिद्ध सनातन हैं सब कालैं उपत बिनास ख़घटना सा०। नाही पुरूष नपुंसक नारी शब्द रूप नहि फासा नहि रस गंध नहीं बल आयू नहि काउ सास उसासा सा०। ( \$2 )

ला निंह समाधि मैं बैठे सा॰ । ए निहचे लातम के। खेला इन मैं कब हू न लाए हम विवहारी झातम ह मरे भूमतमते मरमाए सा॰। गया मरम भया उजियारा लोका लोक प्रकासा झान सार पद निरूपम भी मा उनका यही तमासा सा॰ इति पद ॥

श आसावरी ॥ अवचू हम विन जग कथु नाही जगत हमारे माही भ्रव । हमहीं नें कीया ससारा हम ससार की पूंजी पाच द्वच्य हमरेा परिवारा हम वि न बस्तु न ढूजी अ०। उपति नास थित मय संसारा सी हमरा व्यवहा रा उपत खपत थित करता हमही याते हम संसारा अ०। एक कला हमरी हम क्रोडे सब जग कूं निर मावे वाही कला हम माहि मिलावे हम मैं जगत समावे ग्रं । एक क ला व्यापी जो हम घर याते श्रसंख विभागे हमरे। सर्व कला च्यापी घर जोति प्रखंडित जार्गै अ० । ज्ञान सार पद अकल ऋखंडित अचल ऋ रुज श्रविनासी चिदानंद चिदरूप परम पद् बिद घन घन अभिधासी इप० इति पदं॥ ॥ आसावरी॥

साधो माई जय हम मए निरा सी तय ते छासा दासी साए। राव रक धन निर धन पुरसा सब ही हमरे सरिसा निर भादर भादर ग मनागम नहि काई हरख उदासा साए। राजा केड पाय जी फरसे ता हू तनक न राजी दुर वचर्ने जो का उ सरजे ते। आतम न विराजी सा० जरा जनम मरण वस काया याते नहीं भरासा धिन प्रतीत का छासा धारे क्रोम दिया तिण सोसा साए। भ्रब वेफिकर ख़ुसी दिछ सब दिन वे तमाह मन मश्ती याते उदेँ प्राश्त

नहि चूर्के क्या सुना क्या घरती भूख पिपासा शींस उसनता सखेत नु न खमावे सरस निरस लाभा लाभें पुन हरख शोक मन नावे सा । एते पर आतम अनु भोगति मन समाधि नहि आवे मन समाधि वि न ज्ञान सार पद कैंसे हू नहि पावे सा इति पदं॥

॥ ग्रासावरी ॥

स्रासा ख्रोरन की क्या की जे ज्ञान सुधा रस पीजे ख्रा०॥ भट के द्वार द्वार लोकन के कूकर आसा धारी आतम ख्रनुभव रस के रिख्या उतरे न कबहुं खुमारी आ९। ख्रासा दा सी के जे जाए ते जन जग के दासा आसा दासी करे जे नायक लायक अनुभव प्यासा ख्रा९॥ मनसा ण्या छा प्रेम मसाला प्रेमे अगनि प्रका ही तन माठी अवटाय पिये कस जागे अनुमव छाही अ९ ॥ अगम पियाला पीया मसवाला चीनी जा तम बासा आनद घन वे जग में पेहीं देपी लोक तमासा अ९ ॥ इति पद ॥

॥ राग विभास ॥

कागीये नृप नाभि नद् प्राण ना

प प्यारे जा९ ॥ प्रात मया तिमर

गया चिरिया चहुकारे उद्गीत प्रारू

ण किरण धार हात राग न्यारे ज९।

चकई प्रीउ सु मिली सचर हु की

मास पुली मदि परी दीप करी तेज

हीन सारे ज९ ॥ कमल प्रकार धार

भमर गुंजार पास शीतल सुगंध मंद पैंग चारे ज९ ॥ मुख तें पट दूर कीजें जननी कुंदरस दीजें कुमर कलेंवा कीजें पास वास धारे ज९ । सुन के सब बैंन जागें सबे बन जा न लागें वागें है मंगल तूर पेंम प्रा त वारे ज९ ॥ इति पदं ॥

ग्रा॥ ३ग्ग पद ॥ ॥ राग विभास ॥

॥ राग विनास ॥

भाव धरि धन्य दिन आज सफ

हो गिणुं ग्राज मै सर्जान ग्रानंद पा

या भ९ ॥ हरख घर निजर भरि बि

मर्ल गिरि निरख कर रजत मणि

कनक मोतिन बधाया भ९ ॥ पग

पगैं उमग धर पंथ नित पूक्कता

धन्य देा चरण जिण चलत अया आं

ज धन दीह जागी सुकृत की दसा आज धन दीह प्रभु सुजरा गाया भ९ ॥ दूर दुर्गित टर्डी जान विध सुकरी पुन्य महार पोर्ते मरायो बद त जिन राज मन रग सुर गिरि यि खर रिपम जिन चद सुर सक कहा ये इति पद ॥

> । राग विमाश ॥ सुण त्रिमुबन के रे राज अजित

जिनेश्वर रवामीं प्रमु मोहि तारे।
दुख निवारी कीं जै शिव पुर गामीं
अरु ॥ काछ अनादि भूमतमे छहि
यो निज अनुमय हित कर्मी परे प
रणित शोचि रह्यो नित जान्यो जग
अतर जामीं अरु ॥ परम पुरूप सु

तुंहि परमेश्वर पुण्ये तेरी सेवा पामी
श्रव भूमभाव मिटाय करेा सम गणि
विलास जसनामी अ०॥ इति पदं॥
॥राग विहाग॥

कवन गत हागी आतम राम वयूं भूले निज धाम क०। काल अनादि तैं लख चउरासी भटके ठाम कुठाम क०। श्वगुण परगुण पहिचान किए विन मिलैं नही विसराम चेतन चि त्त विचार के देखो निज गुण श्रप ना धाम क०। दास चुन्ती आतम बिचार मै पावैं पद ग्रमिराम श्री वीर जिनेंद्ध प्रभु की सेवा से सुधरे सब हीं काम कं । इति पदं॥

॥ वीहाग ॥

नवर्षिया मय सागर में प्राटकी दीन दमाल नयरिया म०। तारण हार अवर नहीं दूजी दूढ फिस्मी चिर काल न०। सुमा सुम गुन गुपे प्रानादि पूर्यों कर मन आल अन त नीर घलि घदरतट निपट विकट विकराल न०। में जाने सरवहा

सजाती अरज गुजारी हाल अपना जान भवस करलीजी सपूरण प्रति

पाछ न०। इति पद॥

॥ देशी बिहाग॥ "मैतो कीयेहैपाप भ्रानेक प्रमू जी कैसे तारे। जी मैठ। जनम २ मै की ने पातिक बीने घरम ननेक तुम प्रमु सारक जान्यो नाही हवा न ह

द्य विवेक प्र०१ आगै पातिक जो मै कीने कहत न आवे पार क्विन २ ग्रजहूं पाप करत हूं समक्तत ना हि गबार प्र०। लघु पापी वहुतारे जे प्रभु सहज हुं ताते काज हम वम पापी कठिन तारवा सुन लीज्या म हा राज प्र०। सै भी हुं पतितन मै मुखिया तुम तारक प्रमु एक अब ता भली बनी केसैंही रहै तुमारी टेक प्र०। स्वारंथ काज कहैं सव काई प्रजुगत जुगती बात दया करे। मेाहि दीन जानके क्षमा करे। मेरे तात प्र० । तुम गुण चितवन करतिह तत खिण पाप गए सब भाज सेवक अब जान्यो यह निहचे तारेा गे जिन राज प्र०। इति पर्द ।

इस्ति मधार । चतुर नर चेत हुझान गुनी जी वन घन इहीजत हिंन हिन मैं गी स्रम नीर घुनी च० माह महा मदि

रा मद मातो मार्ने न कही न सुनी रामा रामा धन २ फींखत जैसे दीन दुमी च०। जो दिन जात घटत सो तन घठ आवत नाहि फुनी कर उ पकार परम पद पावा कहत क्षया ण मुनी घ०३। इति घद ॥

॥ देव गघार ॥

मभु तेरी मुरत रूप धनी प्र०।

लग लग की छनुपम श्रीमा बरनी सपत फनी प्रव म सकल विकार र

हित विनु छंबर सुंदर सुभ करनी निरा भरण भासुर कृषि लाजत का िं तरण तरणी प्र० वसु रस रहित शांत रस राजत बलि यह साधु प नी जाति विरोध जंतु जिहि देखत तजत प्रकृति ष्रपनी प्र० ॥ दरसन दुरित दूर चिर संचित सुर नर मन माहनी रूप चंद कहा कहुं महिमा त्रिभुवन मुकट मनी प्रव ॥ इति पदं ॥

॥ नह ॥

अटके नयना जिन चरणा अ० सोई सफल घडी प्रमु जी कुं निर्षुं चरन कमल चित चटके नयना ०॥ चंद चकोर की प्रीत लगी है भरत चर्ढे जैसे नटके न० ॥ नव्रष्ठ मीत छागी निज प्रमुखे प्रभु रस पीवत गटके न०॥ इति पद् ॥ 🐃 🗇 ो नहाँ। छार जिनवर मेरे मन मायो मन मायोरी मन भायो झर नाथ मेरे मन मायो अ० ॥ आज जगी सद शा सिख मेरी रसना करि जे गुण गाया घा ॥ धिपमा रस मूख्यी

शा सिंख मेरी रसना करि जे गुण गाया अ० ॥ धिपया रस मूल्यो भूल्यो अति आरस राद्ध बहुत यायो तार्ते अधिक ससार बदायो अव मै पूरेन प्रमु पायो अ० ॥ अब मै पर मारय धन सच्चो समकित रतन सु थिर ठायो माग्यो मरम धरेम को इह फढ सर्पो राज तेरे आयो अ० इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ 🦈

हो निम जिन मै निज रूप न जान्यो अवि करणी अज अमर अ जरुपी अचल ग्रमल मन मान्यो हो० पर को रूप सरूप निहारत मन मै अति हरखान्यो पुदगलको सब देख पसारो ताही में भर मान्यो हो। नर भव पाय प्रकारथ खोयो बोयो बीज अजान्यो ज्ञान दृष्टि धर रूप न जोयो सोयो नींद अजान्यो हो०॥ काल अनादि अविद्या संगत निज घर भेद न जान्यो हो ।। गणि बि लास पर अब किरपा कर ज्युं सुध परत पिक्वान्यो हो ०॥ इति पदं ॥

n समाच n

चिख चद्ध प्रमु मेरे मन वसिया सपूरन प्रभु मुख संपेषत तन मन पक्ज विकसिया स० ॥ बद्ध समान

कहै जो कोई सोही मुरख सिरसजि या स० ॥ अकलकित जिन चढ़ भ मोपम सकलकित नित है धशिया

स० ॥ सदा उद्गोत सहित प्रमु सी है वाको उद्गोस इवे निशिया स्० ॥ घटत बढत छेखेँ करि देखत वो

रहै नित मति मंडि मसिया स०॥ प्रमु प्रद्भुत सुत बनिता त्यागी वो है रोहिणि रग रसिया स०॥

सुर नर राहु करें नित सेवा वो है

राहु गृह गसिया स० ॥ हर्ष चद् म

भु चरणैं लागो लाजत लंक्चन के मि सिया पदं।

॥ नह ॥

किन गुन भयोरे उदासी भमरा कि०॥ पंख तेरी कारी मुख तेरो पीरा सब फूलन को बासी भ० कि० सब कलियन को रस तुम लीनो सो क्यूं जाय निरासी भ० कि०॥ श्रा नंद घन प्रभु तुमारे मिलन कुं जाय करवत ल्यूं कासी भ० कि०॥ इति पदं॥

॥ नह ॥

देखो आली नट नागर को संग ओरिह ओरिह खेलत तानें फीका छागत भ्रंग दे० ॥ भ्रोरहना कहा दीजे बहुत कर जीवत है इह दग मेरे और विच छत्तर एतो जेतो कर्पै रग दे०। तन सुध खोय घूमत मन असे मानु कयू इक खाई मग एते परि आनंद घन नावत ओर कहा

को दीसे सग दे०। ईति पद। ॥ खभाष ॥

जिनद की मैं वारी कृषि प्यारी जि० घिछ हारी मैं बार हजारी जि॰ घ दन शोमा मर चद श्रारदसी मेटे अ म्म अधियारी जि॰ ॥ निरख चकी

रा हरस मस्त्री प्रमु आनद मगछ कारी जि०॥ चुकी हपतभए दरस णसे पूरी ध्रास हमारी जि॰ छ॰ ये ॥ इति पद ॥

## ॥रागणी परज॥

भाई रेसोही सदगुरुहै पूरा जिन कर्म सघन बन चूरा भा ०॥ जाके शील सनाह विराजे वैराग वकतर क्या जै उपशम शिर टोप सुचंगा जे चढै विवेक तुरंगा भा० । जांके क्षमा ख डग कर सोहै शुभ ज्ञान ढाल मन मोहै धरै ध्यान धनुष ऋति भारी तप तरकस श्रुती कटारी भा० भा ला संतोष सुहाया चंदूक विरति म न लाया समिकत गुन सेली धारे संयम सुभट लिये लारे भा० आगम रण तूर वजाया सामंत सुगुण उठ धाया मारे जड पांची थाना तब प कड लिए दोउ दाना भा०॥ जित ने चे छाहित अर्नेरे ते एक पष्टकर्में घेरे जय जाय मेवासे मारे तव मा

गे शत्रु विचारे मा०॥ मिध्या मति कोट गिराया ममभाव दरवजा ढा या मूदी मद हरना खाई तब फे री नगर दुहाई भाष् ॥ जब लोक यि खर इद कीना शिव पुरमें हेरा दी ना मुनि हर्ष चद गुण गाया शुम सुकृत परगना पाया मा०॥ इति पद ॥ परज ॥ सिवाय जिन पद के जग में प्या रे बिचार हर दमन कोई किसी का पै नाम प्रानुमव हिंतु है प्यारे बि० जिसे सममता है ए तु मेरा समम तू दिल में कहा है तेरा फसा है ना हक ममत में घेरा बि०॥ ए मोह की तैं विक्वाई चोसर लगाई स्वारथ की बाजी इस पर है जीत पासे के हाथ दिलवर वि०॥ सुघर खेलारी सोही कहावे ज्यो क्रुक्के पंजे नरद वचावे के लख चोरासी में फिर न आवे वि०॥ एचुन्नी प्रभु के भजन कुं गावे गुरू के चरणो में शिर न मा वे गुरू धरम का मरम वतावे वि० इति पदं॥

॥ परज ॥

निरभय पद नाम निरंजन है प र मारथ से वो भिन्न नही जप ग्रा जप अभय पद सुख कारी खोजै कोई उस का चि नह नही नि०॥ युद्धि अनुमान प्रमाण करै निर पख विरहा कोई हम पावे ज्यो जीव भरम में मूल रहे उन के घट ज्ञान दरसन नहीं नि०॥ मत घाछे मत मत के माते पट धार जटा धारी है नहीं जोग जुगत की रीत मिछी आचार विचार एखन नही नि०॥ आगम धर वेद पुरान पढे पढ प हित नाम धराय रहे पाया नहीं भे द अमेदीका गफलत में प्राप चेतन नहीं नि०॥ परपच रहित परमातम है चुनी घट अंतर सुखिम चारी है कोई आप अम्यासी प्रकाश करे नि रखे ब्रम्ह रूप कठिन नहीं नि०॥ इसि पद ॥

ा। परज ॥

मेरा मन लागा रहै श्वामी के पद पंकज में मे० ॥ प्रेम की डोरी लगी सत गुरू जी जो गुडी बस धा गा रहै में ।। श्वामी मिलन दी स्रा स घणेरी पाउं दरस रस पागा रहै मे०॥ जीवन सफल करो चुन्ती को रैन दिवस प्रेम जागा रहै। मे०॥ इति पदं ॥

॥ परंज ॥

प्रभु मोसै कवन बहाने बोलो । रैंन दिहा मानुं ध्यान तु सांडा अं तर दे पठखोलो प्र०॥ हाल असांडा तुमनुं मालुम श्वामी जी दुक जोली मं । आस पुरावी दास की श्वामी मन्ट पट सग मिलोलो दास चुनी पायो रत्न भ्रमीलक वेर २ वयु तो लो म०॥ इति पद॥

। परज ।

सासरे री आज रग बधाई गा व गोर वै प्रीतम आए घुनि श्रवन न सुन पाई सा०। घस मस घडी य मिछी सयम घर निरख इरख हरखाई माया ममता कुबुधि कूथरी रहीय घदन घिलखाई साव। चेतन ता केवल शिव कमना सुमति स चेतन राई ज्ञान सार सु रश वस हि स्ट मिख भीने कठ कराई सा०। इति पद ॥

॥ परज ॥

ता जोगी चित लाउं रे बाला । क्षमा खपर समकित की सींगी आ तम अलख जगाउं रे बाला ता० । आदि पुरष का चेला होय के मोह के कान फराउं धरम सुकल मुद्धा दोउ सोहैं उपमा कहत न पाउं रे बा॰ ता॰ ॥ संजम डोरी शील कक्को टी घुल २ गांठ दिलाउं ज्ञान गूद री गल में डारुं जोगासन ठहराउं रे वा० ता० ॥ श्राठ करम कंडे की घूणीं ध्यान सु अगनि जराउं उपश म क्रिन भस्म ठान के मल २ अंग लगाउं रे बा० ता० ॥ या विध यो गा सन ठहराउं मुक्ति महा फल पा वं विश्व भूषण ग्रैसे गुरु सेवो बहुर न कछि में आयु रे घा० ता० इति पद् ॥

n सारग n

मेरे पूजा श्री मगवत की प्रात न्हाय सेवा में आव सारे सर्वे जिय

जतु की मे० ॥ जैन घरम जे दया पदारथ यह निहचे जिय जत की

श्रम्ब सेन नदन प्रमु पारस सुमरन पूजीं अत की में ।। इति पद ॥

॥ सारम ॥

चित चाहत सेवा चरन की वि

मा शोन प्रचिरा जी के नदन शा

नम नगर हथना पुर जाकी छक्त रेखा हरिन की तींस अधिक दस

ति माथ सुख करन की चि०॥ ज

धनुप प्रमाणैं काया कंचन वरणकी चि०॥ कुरु बंशे इक लाख बरस थिति शोभा संयम धरण की केवल ज्ञान अनंत गुणाकर कीरत तारण तरण की चि० ॥ तुम विन श्रीर देव नहीं ध्यावुं मैं अपने जिय जान की हरख चंद प्रभु शिव सुख दायक भीति मिटावी मरण की चि० ॥ इ ति पदं ॥ ॥ सारंग ॥ **अनुभव ढोलन कव**ंघर श्रावे । अ०॥ शशि मुख वचना मृत विन

कैसे हदय कमल विकसावें अ० मोहनीय के लडका लडकी हस २ गोद खिलावे चैागति महरु कुमति रस च गति रमते रैन बिहाबे झ० ॥
भूठी धात तुमारे आगे कैसे कर ब
तलावे सुमता नाम सुनत ही श्रवन
न आतम अति कठिनावे अ० ॥ क
हा कहें की सुनें चयानी कोसुमनन
मिलावे झान सार आपा पर चीनें
बिन तेर्हें उठ आबे अ० ॥ इति

नाय विषारो आप विषारी दा सी तैं हित नित रित खेरी यामें सो म सुमारी ना० घर अपछ्र सी सु दर नारी छोड़ी खेठत जारी ग्रमस भर्सें फूर तज सूक्र त्यो याने भर्स मारी ना०॥ स्वयम रमणी रागी छा

॥ सारम ॥

पढ ॥

तम पर संगति छाति प्वारी देख २ निज घर घरणीं सुं प्यार करत छण प्यारी अ० ॥ सुमति पठायो अनुभो श्रायो पर घर परठ निवारी सुमता घरमैं ज्ञानसारकुं त्यायो लगियन वारी अ०॥ इति पदं॥

॥ सारंग ॥

माई मेरो कंत अत्यंत कुबाणीमा। पर परणति तैं नाता जोरत तोरत निजतैं ताणीं मा० ॥ सुमति विरति श्रद्धा गुण परणम बोलत श्रवली वाणीं माया ममता अविरति कथने करिय कुमति पटराणी अ०॥ यातैं मेरे बैरी जिनते मिलत अपाने जा णीं प्राणैं प्रीत वनावुं कैसे ज्ञानसा ( •• )

र रस बाणीं घ्राणा इतिपद् ॥ ॥ सारग ॥

हमारी अखिया अति उछसानी ह० दरसन देखत चिता मणिको रोमरी म विकसानी ह०॥ हरखित नाचत नैन पूतरी पछन मूद उधरानी भु घरे नाद घुमन मनु भृदी अनहद

घरे नाद घूमन मनु फुदी अन हर्दे नाद घुरानी ह० ॥ मादछ ताछ प छनकी फरसन रोम तार पुत रानी तुचे थीन समाज मिछत सय ज्ञान सार रस दानी ह० ॥ इति पद ॥

॥ सारग ॥

प्रमु दीन दयाछ दया करिये मैहु
अधम सुम प्रथम उचारन छपने वि
कद कु निरवहिये प्र० ॥ अधम

उधार अघम उधारण विरुद्द गह्यो चित चिंतइये मीहि उधार प्रत्यक्ष प्रमाणें विरूद्द मनुज लोगें क्ट्डये प्र०। तोसी तारक अधम न मोसी उधरन कस क्युं ना करिये ज्ञान सारे पर राज निवाजें सिहजे भव सायर तिस्ये प्र० इति पदं॥ ॥ सारंग॥

श्रनुभव हम हैं रावरी दासी आ ई कहाते माया ममता जानुंन कहां की वासी अ०॥ रींभ परे वाके सं ग चेतन तुम क्यूं रहत उदासी बर ज्यो न क्यूं ए कंत कंत कुं लोक में होत न हासी ख़०॥ समभत नाहि निठुर पति पतनी पलक जात क्र ( 🕶 )

मासी भ्रानद् घन प्रमु घर की सम ता भ्रटकल भ्रोर मियासी अ०॥ इंति पदं॥

े ॥ पुन ॥

नाथ निहारी छाप मतासी व चक सठ सचक सीरीते खोटो खातो खता सी ना०॥ भ्राप विगुचण ज ग की हासी सेणप कोण बतासी निज जन सरिज न मेला जैसा जै सा दूध पतासी ना०॥ ममता दा सी अहित करि हर विध बिविध मात सतासी भानद धन प्रमृ धीन ती मानुओर न हितु शमता सी ना०। ईसि पद ॥ म पुन ॥

कहा कहिये हो आप संयानते। अंत दुखाय कह्यो नहि जाये प्यारो भ्रपनी यान ते क० ॥ अन्योक्ती ह ष्टांत सुनावे कोई घाट बयानते क। एते पर भी मूरन घूमी प्रगट देख ग्रिखियान ते क० उदाम सिद्ध निदां न सरम घर सुमति कहै सखियान ते जाय मिलै ग्रव ज्ञान सार नें कै। न गरज लिजयान ते क० । इति पदं ॥

॥ धनाश्री ॥

आज महोच्छ्व रंग रहीरी जा यो सुत त्रिशलांदे राणी कामित पू रण काम कलीरी छा० । सजि सि णगार सकल सुर बनिता छपणे २ ( ७१ ) मेल चलीरी भा०। आवत सिद्धा रच के अगन पूरत मोतिन चोक पु

रण के कुसुम बखेरत गड़ी गड़ीरी खाः। इंद्वाणी मिछ मगछ गावे नाटक नाचत सुर कुमरी री पा०। याजत गहिरसुर देवदु दुमी चीणा ये णु मृदग वजी री छाँ०। जय २ कार मयो तिह जग मै च्याचि च्य था सब विपत टरी री आ०। हर ख चद जनम्यो प्रभु मेरी मन की आसा सफल फली री भा०। इति पद ॥

रीरी आ० इ.स् इकम करि धनद पठायो सब बसुधा धन धान्य मरी री आ०। कनक रजत मणि पच व

## ॥ धन्यश्री ॥

पिया मोसुं काहें न बोलै दे दे सोवे पीठ पि०। सोतिन संग पि या बिरमा ये नेक न जोरै दीठ पि० को जानें गति अंतर गति की वा चूं कहा बसीठ कोलैं। कहि कहि पिय समभाउं निठुर निलज है दीठ पि०। बीर विवेक पिया समभा ए ता पर अनुभो ईत सरधा सुमता ज्ञान सार तैं जाय मनाए नीठ पि० इति पदं ॥

॥ धन्यस्त्री मुलतानी ॥
प्यारे नाह घर विन यैं।हीं जी
वन जाय पिय विन या वय पीहर
वासो कहि सिख केम सुहाय प्या।

( 80 )

मेल चलीरी घ्या०। आवत सिद्धा रघ के अगन पूरत मोतिन चोक पु रीरी आ० इ.द्व हुकम करि घनद

पठायो सब बसुघा धन धान्य मरी री आए। कनक रजत मणि पच घ रण के कुसुम घखेरत गढी गडीरी स्ताव। इंद्वाणी मिल मगल गावे नाटक नाचत सुर कुमरी री छा०। याजत गहिरसुर देवदु दुमी घीणा मे णु मुदग बजी री छा०। जम २ कार मयो तिहु जग मै च्याघि घ्य था सब बिपत टरी री आ०। हर ख चद जनम्यो प्रमु मेरो मन की आसा सफल फली री भा०। इति पद ॥

### ॥ घन्यश्री ॥

पिया मोसुं काहें न बोलै दे दे सोवे पीठ पि०। सोतिन संग पि या बिरमा ये नेक न जोरे दीठ पि० को जानें गति अंतर गति की वा चूं कहा बसीठ कोलैं। कहि कहि पिय समभाउं निठ्र निलज है दीठ पि०। बीर विवेक पिया समभा ए ता पर भ्रनुभो ईत सरधा सुमता ज्ञान सार तैं जाय मनाए नीठ पि० इति पदं ॥

॥ धन्यश्री मुलतानी ॥
प्यारे नाह घर बिन यैंाहीं जी
वन जाय पिय बिन या वय पीहर वासो कहि सखि केम सुहाय प्या। हा हा कर सस्यि पैया परत हु कठ

हो नाह मनाय घर मदिर सुद्र त नु मूपण सास पिता न सुद्दाय प्या० इक इक पष्टक कष्ठप सो घीतत नी सासे जिय जात ज्ञान सार पिय फ्रान मिर्छ घर तो सब दुख मिट जाय प्या० ॥ इसि पद ॥

॥ घन्यश्रो ॥ भूष्यो ममत तु कहारे घ्राजीन आल पपाल सकल तज मुरख कर घ्रानुमय रस पान मृ० ॥ आय कृता

त गहेगो इक दिन हिर मृग जैस असान होय भी तन घन थी तुन्या रो जिम पाक्यो तु पान भू०॥ मात तात तरुणो सुत सेती गरज ( && )

न सरत निदान चिदानंद ए बचन हमारो घर राखो प्रिय कान भू०॥ इति पदं॥ ॥ धन्यस्त्री॥

संतो अचरिज रूप तमासा। की होके पग कुंजर वांध्या जलमें मगर पियासा सं०। करत हलाहल पान रुची घर तज प्रमृत रस खासा चिं ता मणि तज धरेत हैं चितमें काच शकल की प्रासा सं०॥ धिन वादल वरखा अति वरसत विन दिग वह त वतासा वज गलत देखा हम ज

वरखा अति वरसत विन दिग वह त वतासा वजु गलत देखा हम ज लमै कोरा रहत वतासा सं०। वेर अनादि पिण उपर थी देखत लगत सगासा चिदानंद सोही जन उत्तम

#### ( Se

क्या परिया कापासा स०॥ इतिपद n धन्यस्री n

नाम अध्यातम ठवण स्वयंघी मा व प्राध्यातम न्यारा क०। एक घूद जलची जब प्रगर्टै खुत सागर विस

तारा धन्य जिनू ने उत्तर उद्धि कु

एक बूदमें द्वारा क०॥ वीज रुची

धर ममता परिसद्द छद्दि आगम ध नुसारा पर पखधी छख इंग बिध आपा श्राहि कचुकि जिम न्यारा कº

मासपरत मृम नाभ हुतासहु मिछ्मा जगत पसारा चिदानद चित अचल होत ईम जिम नम धूका सारा फ॰

॥ ४ ॥ इति पद ॥

करले गुरुगम झान विचारा क॰

# ॥ घन्यश्री ॥

अब हम ऐसी मन में जांणी अ० परमा रथ पथ समभ विना नर वे द पुराण कहांणी घ्र०॥ अंतर लक्ष विगत उपर थी कष्ट करत बहु प्रा णी कोट जतन करि उपल होत न हि मथतां निसदिन पाणी अ० ॥ लवण पूतली थाह लेणकुं सायर माहि समाणी तामैं मिल तदरूप भईते पल ट कहैं कुण बाणी अ० ॥ षटमत मि ल मातंग स्रंग लख युक्ती वहोत व खाणी चिदानंद सरबांग विलोकी तत्वारथ लहै ताणी ऋ० ॥ ईतिपदं ॥ धन्यस्त्री ॥

कोटिक कष्ट हरी प्रमु मेरे को०

( 60

गुन गाउ ध्याउ प्रमु जी मैं चरेन कमक चित घरके तेरेको०॥ यह ससा

र प्रसार सागर मै मोह जनित स क्टेंश घनेरे तुम बिन कीन दयाब उधारे विस्पादिक दूर गति मै गे रे को० दुख मजन छर नाय निर जन घूटे चोरासी सम्ब फेरे सुख दा यक प्रमु दास चुनी कु मध जल पा र उतार सर्वेरे को । ईति पद म n धन्यन्त्री n वेर वेर नहीं आवे रे प्रवसर वे र वेर नहीं आवे छ०॥ ज्यो जार्ने सो कयु कर ही महाई जनम जनम सुख पावे अ०॥ जाको मन साचे से राच्यो बाकु मुठ म मावे घ्र०॥

तन क्रूटे धन कैंगन कामको काहे कृपण कहावे अ०। ज्यो कचु देना सो कुक्क लेना विन देनें नहि पावे ग्रानंद घन प्रभु चलत पंथ पर स मर समर गुन गावे अ०। इति पदं ॥ धनाश्री ॥

ं माई तेरेआंग वधाई चंद्ध कुमर सुत जाई मा० ॥ धन लक्कणादे मा ग तिहारो तूं जगमात कहाई माठ क्रप्पेन दिश कुमरी सब मिलके भूष ण वसन सजाई प्रभू गुण गावत नाचत आवत धपमप ताल वजाई मा०।२। इंद्रादिक सब सुर परि कर लेई मेरु शिखर पर जाई विधि पूर्वक मिलि न्हवण करावत मोहन गोद बिठाई मा॰। ३। चद्व पुरी में जन्म महो छव घर २ मगछ ठाई

जै जै कार करत नर नारी महसेंन न्य घर आई मा०। ४। चद्ध सर स द्युति कुमर निरस्त क्ववि दिग प फज विकसाई अचल रही जग ना यक मेरे पछ २ जोत सवाई मा०। ५। पद इस तत्वरु ब्रम्ह सुबच्छर हे म पुषम पदगाई मूत बिमल तिथि सेवके सुख हित नमत गुलाब सदाई मा०॥६॥ इति पद ॥ ॥ रागणी काफी ॥ पयीदारे पय चलेगी प्रमु मजर्ले दिन घ्यार प ०। मूठी कार्या मूठी माया भूठो सब परिवार प०। वा

ल पणी मैं खेल गमायो यावन मा या जाल पं०। बूढा पणआयो धर्म न पायो पीछै करत पुकार का ले श्रायो का लेजासी पुन्य पाप दोउं लार पं० दया मया कर पास श्रावं ती श्रव तेरोहि आधार पं०॥ इति

॥ काफी ॥ वो सांइ मो वी नती कैंसे कहं वीश काल प्रनादि वह्यो मेरो तुम विन भव वन माहि फिर्ह्स छ वतो त्रभुवन नायक पेष्यो हरखी पाय परूं वो० क्युं कर नापं तोहे तुव तारो तेरा अंचल गही हुँ भग डुंबो० दरसन सुद्ध चरण अनुभव के पर चेताय घरूं वो० तामें अनु जै जै कार करत नर नारी महसेन नृप घर आई मा०। ४। स्वद्ध सर स दाति कमर निरख क्रवि दिग प कज विकसाई अचल रहो जग ना यक मेरे पछ २ जोत सवाई मा०। ५। पद इस सत्वरु ब्रम्ह सुबच्छर हे म पुषम पदगाई भूत बिमल तिथि सेवक सुख हित ममेत गुलायसदाई मा०॥६॥ इति पद॥ n रागणी काफी n पधीडारे पय चलेगी प्रमु मजलैं

दिन ध्यार प्रशासूठी कार्यो सूठी माया सूठी सद्य परिवारप्रशासा

गोद बिठाई मा०।३। चह्रपुरी में जन्म महो क्रुव घर २ मगल ठाई ( ४५ )

आ∘काफी ॥॰ 🧼

तारो मोहिश्वाभी सरण तुमारे स्रायो काल स्ननंता नंत भमत में अ बमै दरसण पार्यों ता० तूं शिव ना यक सब गुण ज्ञायक नायक विरुद धरायो लायक जांणि ख्रान मन भा वन पाय कमल चित लायो ता०॥ तुही निरंजन जनम निरंजन खंजन नेंन सुहायो गुण विलाश प्रभु जि न शिभ नंदन वंदन कुं लल चायो ता० ॥ इति पदं ॥

॥ काफी ॥

वांके गढ फोज चढीहें वाजै न गारांरी ठोर वांकोही मारग वाको ही राजा वांकोही कटक हें जोर ( 68 )

भव चरन बानसे पर खेताम धक हान सार प्रमु गुणमो तिनकी क टैं हार घरू वो० ६ ॥इतिपदा।

॥ काफी ॥

मिल जा ज्यो रे साहिब ध्यान
नर्में अजब अनुमब रगे मोठो रीम

नमें अजय अनुमय रगे मोठो रीम रह्यो तेरे नैननमें मि० एकही च्या ने प्यारो न्यारो करत मरम के फेन नमें तत्व कप संधारस कोई मगन

नमें तत्व कप सुधारस कोहें मगन भयो तेरे धैननमें मि० तू आलधन सूरेज उग्यो मो मन डाफ घेननमें एक कप इक ताने होबे ज्यो पार

एक रूप इक ताने होने ज्यो पार ची एननमें मि० ज्ञान बिमल जिन ध्यानें होये एही झखप सुख चैनन मैं मि०॥ इति पद॥

## ॥ काफी ॥

तारो मोहिश्वाभी सरण तुमारे श्रायो काल श्रनंता नंत भमत में अ बमै दरसण पार्थों ता० तूं शिव ना यक सब गुण ज्ञायक नायक बिरुद धरायों लायक जांणि ग्रान मन भा वन पाय कमल चित लायो ता०॥ तुही निरंजन जनम निरंजन खंजन नेंन सुहायो गुण विलाश प्रभु जि न शिभ नंदन वंदन कुं लल चायो ता० ॥ इति पदं ॥

॥ काफी ॥

वांके गढ फोज चढीहें वाजै न गारांरी ठोर वांकोही मारग वाको ही राजा वांकोही कटक हें जोर बा० मन दीबान उपशम आगे ब न भाग मिछे इक ठोर बा० ध्यान नाला बूटे कोटि करम टूटें ज्ञान ग गन धन धोर बा० ३ श्री सुविधि जिने सर हुकम करोतो पकड मगा

उ आठुहि चीर घा०॥ ४॥ इतिपद ॥ ॥ काफी ॥ प्रकथ कथा कीण जाणै तेरी च

तुर सनेही प्रांश नय बाद नम पक्ष गृहीनें भूठा भगडा ठाणै निर्पस छस पस ध्याद मुधा को ते तो त नक नताणे तेश छिनमै कप रचत नाना बिघ बेद अकप बसाणे छि न मूरस झानी हुवे छिनमें न्याम सक्छ जग जाणे तेश चीर साध क षु कह्यो न पर तुहें लख नाना गु ण ठाणे जैसो हेतु तैसो चिदानंद चित श्रद्धा इम श्राणे ते०॥ इति॥ ॥ काफी जंगला॥

जग में न तेरा कोई नर देख हु निहचै जोई सुत तात मात ग्र रु नारी सहु श्वारथ के हित कारी बिन श्वार्थ शत्रू सोई ज०।१। तू फिरै महा मद माता विषयनसंग मूरख राता नीज संग की सुध बुध खोई ज०॥२॥ घट ज्ञान कला न विजाकुं पर निज मानत सुन ताकुं श्राखर पक्तावा होई ज०॥३॥ नवि अनो एम नरभव हारो निज सुद्ध सकप निहारो अंतर शमता ( 23 )

मल खोई जि॰ ॥ ४ ॥ मु मिदान दकी वाणी निहम्बे घाररे जग म णीं जिम सफल होत भव दीई ज॰ ॥ इति पद ॥

॥ काफी जगला ॥ कि मूटो जगत की माया जिनें जा जी तिनें भेद पाया मू० तन व्यन जीवन सुख जेता सहु जानहु अपि रए तेता नर जिम यादछ की द्वाया

या छस गछित ब्रम्हकी क्षायाधूकों करकहू राया भू० २ भ्रव चिदानद मोहि कयु करिये ममसा नाहि चद्गु रु य भेदछसाया मू ॥ ३ ॥ इतिपर्द ॥ रागणी काफी ॥

मू० १ जिम अनीस भाव चित आ

ग्रव तेरो दाव वन्यो है गाफिल क्यैं। मित मान आरिज देश उतम धुम संगति पाई पुन्य प्रमाण ते०। कोध लोभ अरु माया ममता मि थ्या ऋरु अभिमान रात दिवस मन् वचनें रातो चेतन चेत स्यान तें। मद मद काक क्रक्यो ज्यूं मैंगल पर मत गति स्रालान उपाड़ तेरैक हा कारज जिन मत रहिस पिछान ते १। ३। सत्ता वस्तुभिव्न है सब्र मैं सरवंगे सम भान इक २ देसी सब मत जाणै सरब देशी जिन जांन ते १ । सरवंगे सम जिन मत साधै वाधे आतम ज्ञान ज्ञान सार जिन मत रित आवि पावे पद नि

66

मल सोई ज०॥ १ । प्रमु विदान दकी वाणी निहचे धाररे जग म णीं जिम सफल होत<sup>्</sup>मव दीई ज<sup>0</sup> ॥ इति पद ॥

॥ काफी जगला ॥ 🕧 भूठो जगत की माया जिनें जा

णी तिनें भेद पाया मूर सन धन जीवन सुख जेता सह जानह प्रापि रए सेता नर जिम घाँदछ की छाया

मू० १ जिम अनीत माव चित प्रा या छल गछित ब्रम्हकी क्वाया यूमें करफट्ट राया भू० २ प्राय चिदानद मोहि कयु करिये ममता नाहि चद्गु रु य मेदछसायाँ मू ॥ ३ ॥ इतिपर्द

॥ रागणी काफी ॥

अब तेरो दाव वन्यो है गाफिल क्यैं। मति मान आरिज देश उतम धुम संगति पाई पुन्य प्रमाण ते०। क्रोध लोभ अरु माया ममता मि थ्या ऋरु अभिमान रात दिवस मन् वचनें रातो चेतन चेत स्यान तें। मद मद काक क्रक्यो ज्यूं मैंगल पर मत गति झालान उपाडै तेरैक हा कारज जिन मत रहिस पिछान ते०। ३। सत्ता वस्तुभिन्न है सब मैं सरवंगे सम भान इक २ देसी सव मत जाणै सरव देशी जिन जांन ते । ४। सरवंगै सम जिन मत साधै वाघे आतम ज्ञान ज्ञान सार जिन मत रित आब्रे पावै पद नि

( 90 )

रघान ते०। ५२ इति पद् ॥ 🤊 ॥ काफी ॥

हठीली छाप्या टेकन मेटै फिर फिर देखन जाई ए आकर्णी। इयल क्र्यीली पीय क्र्यी निरंख उपति

न होई इठ करी दुक हठ के देत निगोरी रोई इ०। १। मागर ज्यू दगाय के रही पीय सवि के घार लाज दाग मानें नहीं कान पिछेडा

द्वार हु०।२। घ्राटकत नेक नही फाहु की इट के नही तिल कीर हा

थी आप मते अरे पावे न महावत जोर ह०।३। सुन छनुमव मीतम

विना प्राण जात नवि जाहि हजी न चातुर छातुरी दूर छानद घन नाहि ह०। ४। इति पदं॥ ॥ काफी॥

साधो भाई पंच दकार सहाई सो जग गुरु श्री मुख गाई पंच द कार किई गति पंचम पाय विभै व्ह जाई साए। १। दान रु दया दिमं द्धी दर्शन देवार्चन सुख दाई पंच विधान दान जिन भासै तिन में दो शिव दाई सा० ॥ २॥ तीन दान जग सुख के कारण सुजस धजा फ हराई दया प्रगट सब मत में बरणी पिण जिन अधिक सुनाई सा०॥३ इंद्री दमन हरण भव संकट मुक्ति वधू वर दाई सत्य सहूप लखन स व जग को दर्शण नाम. कहाई सा०

४ ॥ घीत राग जग देव विमल<sup>े</sup> की सेवा सूत्र जणाई पक्ष रहित यहै जा च पार्चतु जो जग चहत घटाई सा०॥ ५ ॥ फर्म फद टूटे बिन कै से हित की यात सुहाई कहत गु छाव विना सद गुरु तेरी मर्म न जैहें भाई साठ ॥ द इति पद॥<sup>^~</sup> ॥ काफी ॥ अठख छखा किम जावे हो औ सी कोउ जुगित यतावे प्रा० तन मन वचना तीत ध्यान घर अजपा जाप जपावे होय छडोछ छोछता स्पागी ज्ञान सरोज बनावे हो प्र० १ ॥ सुद्ध श्वयूप में सगत समारे म मता दूर बहाये कनक उपल मल

भिन्नता काजै जोगानेल उपजावे अ०॥२॥ एक समै सम श्रेणीं रो पी चिदानंद एगावे अलख रूप हो य अलख समावै ऋलख भेद इम पावै हो अ०॥ ३॥ इति पदं॥ ्र ॥ काफी ॥ 🔭 ं जोलैं। अनुभव ज्ञान रे घट में प्रगट भयो नहीं जो० तोलैं। मन थि र होत नहीं छिन जिम पीपर की

पान वेद भन्यो पिण भेद विना सब पोधी थोथी जान जो०॥ १ ॥ रसं भाजन में रहत बीनीत नहीं तस रस पहिचान तिम श्रुत पाठी पंडि त कुं पिण प्रवचन कहत अज्ञान जो २ ॥ सार लह्यां विन भार कह्यो श्रु

68 त खर इष्टात प्रमाण चिदानद भ

ध्यातम सेती समभ परत एक तान जो० ॥ ३ ॥ इति पद् ॥

ष टोक्टी॥ 🗸 निर पख विरष्ठा कोई अवधू दे खा जगत सह जोई अ०॥ सम रस

माब भला चिंत जाके थाप उधाप न होई अ०॥१॥ राव रक में मेद न जार्ने फनक उपल सम छेखे ना

री नागिन को नहि परिचय ते थि

निष्य आणें ते जग में जोगीऋर पू रानित घढते गुण ठाणें अ०॥२॥ षद्ध समान समता है जाकी सायर

व मदिर देखें छा ॥ २॥ निदा छ स्तति श्रवण सुणी ने हरख सोक जिम गंभीरा अप्रमत्त भारंड परें नित सुर गिरि सम शुचि धीरा अ० १॥ पंकज नाम धराय पंकसुं रहत कमल जिम न्यारा चिदानंद औसा जन उत्तम ते साहिब का प्यारा अ० ५॥ इति पदं॥ ॥ टोडी॥

लघुता मेरे मन मानी लही गुरु ज्ञान निसानी ल० मद अप्ट जिनुं नें धारे ते दुरगति गये बिचारे देखी जगत में ये प्राणी दुख लहत अधि क ख्रज्ञानी ल० १॥ शिश सूरज व डे कहावे ते राहू के बस ख्रावें ता रा गण लघुता धारी सुर मानुं भीत निवारी ल० ॥ २॥ क्वोटी अति जीयण गंधी छहे पट रस रवादः सु गंधी करटी मीटाई धारे ते क्वार सीस निज हारे छ०॥३॥ जय घाछ पद

होइ ग्रावं तव सहु जग देखण धान्ने पूनिम चुद यहा कहावे तब खीण कला होइ जावे छ० ॥ ४ ॥ गिरुवा इम मन मा घेदै उप, श्रवण नासि का कोर्दे अग माहें छध् कहाबे ते कारण चरण पुजावे छ<sub>० ॥</sub> ५ ॥क्रि शु राज धाम में छावे चिख हिछ मि छ गोद खिलावे होय बमा जाण स वि प्रावे जावे सो सीस कटावे छ० ६ ॥ अतर, मद भाव घड्डाये तथ जि मुबन माथ कहावे इम चिद्रानद ए गावे रहणी विरहा कोड पावे छ०

७॥ इति पदं॥ ॥ टोडी ॥ क्थानि कथै सहु कोई रहणी छा ति दुरलभ होई शुक राम को नाम वखाणे नवि पर मारथ तस जाणे या विध भणी घेद सुणावे पिण छ कल कला निव पावे क०॥१॥ ष ट त्रीस प्रकारे रसोई मुख गिणतां रुपति न होई शिसु नाम नहि तस हेवे रस म्वादत सुख अति वेवें क० २॥ यंदी जन कमखा गावे सुणि सूरा सीस कटावैं जब रूंड मूंडता भारी कहुं प्रागल चारण नारी क० ३॥ करणी तो जगत मजूरी रहणी तो बंद हजूरी कहणी साकर सम

( 30 )

मीठी रहणी अति लागे भनीठी।क० ४ ॥ जब रहणी कायर पार्वे कचणी प्तय<sup>्</sup>गिनती ।आर्थे अब चिदोनद हम जोई रहणी की सेज रहे सोई कर्म ५॥ इति पद॥ १ - ता रिभार रार वास्त्र **। होडी स**ंच ६ १३८ ाचेतन चतुराचीगान छरी री जी प्रचे मोह राज को खसकर मसिक रिकाडि अनादि धरी री चे० ॥ १ मागी काढे ताइ के दुसमन कागे का बी दोय घरी री अंचल अवाधित केवण मुन सिफ पावै शिव पद गा इ मरी री घे०॥ २ ओर धराई खरै सो मोरा सुरापकारे ।माव अरी री

घरम मरम कहा भूमी न ओरें रहे

आनंद घन पद पकरी री चे० ॥ ३ इति पदं॥ - ॥ टोडी ॥ ्रनिपट ही कठिन कठोर री शिवा देवी को नंदन नि०॥ १ ॥ मेरी वेर भये सुन सजनी औसे नेम निठोर री शि० ॥ १ ॥ नव भव नेहं निवार प लक मैं प्रीत पुरानी तोर री शि० तोरन थी रथ फेर सिघारे गढ गिर नार की छोररी शिला २ ॥ क्रुण्प न कोटि यादव हरिः हल धर ठाढे करत निहोर री शि० काहू को क ह्यो मानत नाहीं मांड रहे हठ जोर री शि० ॥ ३ ॥ बहुत मनाय मनाय रही हूं अरज करूं कर जोर री हरख

चद नेमं मानत नाहीं रयन गई म यो मोर री शि० ॥ ४ इति पद ॥ ॥ जगला ॥

जिन राज चरण की मै शरण गही महाराज चरन की मै श० अ रजी सुमिये नाथ हमारी मध नाट

क मेटी बाह गही म०। १। नव २ भात बनाय के माची छख चौरासी

फिरत रही म०।२। जग पालक

पदारय पायो प्रसन्न भई जिम राज सही म०। ४। झह निश्चि ध्यान

महिमा गुण सुन के मै तो तोरेरग राच रही म०।३। समकित सार

घर नित चुकी मन की घाँछा सफ

स उही मुळ्॥ ५ इति पद॥

909

ं॥ जंगला ॥ नेम दुलहा थांरी बाटमी उ भी जोउं हो मंदिर में राणी राजुल जोवै खडी २ हो ने० सब यादव मिल च्याहन श्राये जान बरात भलि य बनी हो ने०। १। तोरन आये मंगल गाये सब संखिषन मिल हर ख धरी हो ने०। २। तीरन प्राय चले रथ फेरी पशु पुकार तैं कान धरी हो ने०। ३ । उलट नेम गिर नार सिधाये दास अमर पदं शरण धरी हो मे० इति पदं॥ 🦿 ॥ पुनः ॥

सांवरे साजन प्यारे मिलना ज कर वे सा०। तुम दिल जानी मह ( ७०२ )

रम प्यारे 'पष्ठक न हो ना दूर वे सा०-॥१९ ॥ कृपा 'निवासी । अरज यदादी रखना रयाम हजूर वे साँ० २ ॥ इति पद ॥ 🕒 📴 🥆 ॥ स्त्रेमद्राप्त 🗠 🔨 र नेम पिया हो दर्स मीहि दीजै दरश मोहि दीजे भरज सुनि छीजे भव २ पातिक छीजै ने०।१। रज सत्त तमो गुण तीनु त्यागे प्रविचल पदम घरीजें ने । । । भव २ की में दासी सुमारी अधरन सरने करी जैने०॥३॥ जोरिज्यष्ठ कर घ रज करति हु कछि मल दोख हरी जी नेव ॥ ४ ॥ दया धर्म तुम गुण

मणि आगर पद्म खरण चित

लीजे ने**ा ५ इति पदं ॥ 🚓 🗀** 🐪 🔻 ॥ खेमटा॥ ं मेरे साहिब चतुर सुजान सकुच कर मै वोलुं में भै भोरी कंवु मर्म न जानुं मेहर करो हित ग्रान अंतर के पट खोलूं मे० ॥ १ ॥ सुघर साहे च पैं तन मन वारूं लाउं चरणः वि च ध्यान प्रेम सरस रस घोलूं में० २॥ भव आताप बुकाउं मै चुन्नी पी पी अमृत रस ज्ञा आतम अं तर घोलूं में । १३ इ तिपदं॥ 🕒 े ॥ धाठो ॥ 🗽 👙 🤫 🗸 प्रभु कुं सुमरना चाहियेघडी पल

त्रिम् कु सुनरमा चाह्यचडा पल किन ना विसराइये प्रवाशित जो। तिःसरूप प्रखंड अवाधित निश्चंल ( 908 )

व्यापि सक्लेश विनाशी जिनही के गुण गाइये म० ॥ ३)॥ दास चुनी घू यद की सेवा घारण कर सुख पा इये म० ॥ ४ इति पद ॥

चित धर ध्याइये प्र०॥ २॥ आधि

**ध पुन∙** प्र मन के भमोरप पूरण प्रगटो ज ग मान हे संखिया म० ॥ १ ॥ धन

दिन घन आज की बेला पायो चि त्तामणि छाछ हे स० म० ॥ २ ॥ मारय दशा अब जागी प्रभु गुण में

मन अनुरागी दुख दूर गये सब है

स० म० ॥ ३ ॥ ऋामि भाघ के चर

न जुहारे जिन महावीर सुस कारे

चुनी दास पैं सुनिजर है स० म०

४ इति पदं ॥

॥ घाटो ॥

देखोरी जिनंदा प्यारा जिनंदा भये भगवान सफल मेरी छाज की घडियां सफल भये नयना प्राण दे० 9 ॥ दरस सरस निरण्यो जिनंद जी को जग नायक जग भाण दे० ॥ २ सोक संताप गयो अब मेरो पायो अभिनव ज्ञान दे० ॥ ३ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

मेरो मन बस कर छीनुं जिनवर प्रभु श्री पास मे० ॥ १ ॥ श्रिखिंया कमल पांखिंडयां मुख सुंदरे जास मे० ॥ २ ॥ नील बरन तनु सोहें त्रिभुवन परकास मे० ॥ ३ ॥ काने ( १६६ )

कुहल दीय मल के सीस सूर सम मास मे०॥ ४॥ ममु तुम चरण र ही जे समरू सासी शास मे० ॥ ५ **णाल चद की अरज सुणीजै पूरो घ** क्वित घ्रास मे० ॥ ६ इति पद ॥

पुनः । श्री श्रीयास संय दुख मेटो दीजे मुख भर पूर हे म्बामी श्री० ॥ १॥

महिमा तिहु जग छाजै भाजै अरि दस्र गज हैं० श्री० ॥ २ ॥ तुम बि

न कीन छोडावे जाठी कर्म के फद है० भ्री० ॥ ३ ॥ चुकी चरन नित सेवे दिन २ प्रधिक प्रानद है० श्री

४ ॥ इसि पद ॥ ॥ पुनः ॥

सव से भला है येही भजले औं ति सनेही स०॥ १॥ मन पर घर तू मत जा रे आतम सै रंग खगारे चित चेत चतुर गुन गेही स०॥ २ मन अजपा जाप जपे तूं तब अन हद नाद सुनें तूं सोहम २ रटले हे ० स० ॥ ३ ॥ मन परमातम पद धावे चुनी दास परम सुख पावे दुख दो हगदूर न सेही स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ षुनः ॥

मेरो मन तुम से लाज़ो जाज़ो धरम सनेह भे० मैं समक्षं जिस्र च कवा रे चक्रवी मोरा चाहे जिम मेह मे०॥९॥ श्री मुनि सुव्रत समक्षं ममरा मन जिम फूल प्रभुपद पकज माहेरहु सदा ध्रमुकूछ मे०। २। तु म प्रमु तारक जग के तारो मैं हु अनाय मे० रिपि रूप नें मय मय दीजो चरण कमछ कारे साथ मे०

३। इति पद॥

अपना रूप जब देखा करता की न करनी फूनि फैसी कीन मागे गो छेखा अण ॥ १ ॥ साधू सगति और गुरू की कृपा ते मिट गई कुछ की रेखा आनद घन ममु परची पायी उत्तर गयो दिछ मेखा अण ॥ २ ॥ इति पद ॥

॥ पुन ॥

॥ पुनः ॥

दरशन प्राण जीवन मोहि दीजै विन दरशन मोहि कलन परत है तरफ तरफ तनु क्वीजै द०॥१॥ कहा कहुं कयु कहत न आवत विन सइयां किम जीजै समभाओ सिव जाय मनाओ ग्रापहि आप पतीजै २ ॥ देउर देउरानी सास जेठानी यूं सबही मिल खीजे आनंद घन बिन प्राण न रहे छिन कोर जतन क र लीजे द० ॥ ३ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

निस दिन जोउं थारी बाटडी घर आओ रे ढोला मुफ सरिखा तुफ लाख है मेरे तूंहीं ममोला नि० १॥ जींहरी मोल करे लाल का मे रा लाल अमोला जिस के पटतरे की नहीं उस का क्या मोला नि०॥ २

पय निहारत छोयणे टग छागी भ होछा जोगी सुरति समाधि मे मानु ध्यान भकोछा नि०॥३॥ कीन सु

नें फिस से कहु किम माहू खोला तेरे मुख दीठे ठलें मेरे मन का चो ला नि०॥ ४॥ मीत विवेक कहें हित समता सनि बोला खानट घन

हितू समता सुनि होला जानद घन प्रमु जावस्य सेम्हमी रग राेला नि० ५॥ इति पर॥

५॥ इति पद॥ ॥केदारा॥

॥ फेदारा ॥ फरुणा के सागर तुमहीं कुयु जि न महाराज । सुनि कर सुजस मैं घ्रायो पायो धर्म जिहाज क०। १ जो प्रमु मो को नतारो तो स्यूं तारक नाम मो से जो पतित उबा रो तो प्रमु तारक नाम क० २। मुक्त पर करुणा कीजै दीजै बंकित दान रिषि रूप जो जिन को ध्यावै पावै शिवपुर थान क०। ३। इति पदं॥

॥ पुनः ॥

सुनहु बिमलजिन श्वामी मेरे तु म भगवान सु० । १। कोई ध्यावै रामा रामा कोई ध्यावै शिव कान तुमही कुं ध्याउं मैं समक्षं मेरे प्रभु गुण धाम सु० । २। तुम प्रभु जो करुणा के शिंधू मो नें पार उतार रिषि कप श्ररजत येही दीजै शिव ( 997 )

सुख धान सु०। ३। इति पद्॥ ॥ केदारा॥

देखो एक अपूरव खेला छापहि घाजी आप घाजीगर आप गुरू आ प चेला दे० छोक अलोक बिच आ प विराजत झान प्रकाश झकेला बा जी क्वांड तिहा चढ चैठे जिहा सि द्वी का मेला देव। १। सह में किस के किस के खेला किस के २ योला पाइणको भर काही उठावस इक तारे का चोला देण। २। घट

इक तारे का चोला दे?। २ १ घट पद पद के जोगी सिरसी सहै क्यू कर गज पद तोला सानद घन म मुआप मिलो तुम मिट आय मन कामोला दे?॥ इति पद। ॥ राग जैंजैं वंती ॥

**प्र**ारुख निरंजन के गुण गाउं माई ख्रविनासी वासी शिव पुर के मै तो मन बच ऋम से ध्योउं मा० **छ०॥ १ ॥ अनुरागी प्रभु चरण** क मल की आनंद रंग रस ऋधिक ब ढाउं मा० अ०॥ २॥ ज्योति श्वरू प पिक्रान ध्यान धर पातिक पंक सबैं दूर नसाउं मा० अ० ॥३॥ अजर अमर निरगुण निकलंकी भाव अखंडित श्रजप<sup>े</sup> जगाउं मा० **भ**०॥ ४॥ दास चुनी जिन श्रेयांस नाथ जी की सेवा में अविचल सुख पाउं मा० अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

198 )

ञाज की यदन कृषि प्राजय नी की बनी माई सा० तिलक जहाव जबयो मस्तक मुकट घस्पो प्रवण

कुढल सोई फूलन की सेहरी मा० घा १ ॥ गुण मिण माल सीहे वाजु बद छोएँ कर कमना क्वाजी २

रूप मनोहरु मा० झ०॥ २॥ सिहा सन कुन्न घर मस्तक धमर द्वरे शो मा वया बरणें ऋामि गुण गहरु मा। ष्मा०॥ ३॥ बाणी गुण गमीर सुन

सा न रहे पीर निरप्या नमन ठरे घूनी छाज्ञी जिन से नेहरी, मा० भा०॥ ४ इति पद ॥

॥ पुन वा तरस की जिये वह की वह कीस वारी री तीक्रन कटाक् कटा लागत कटारी री सायक लायक नायक मा न को पहारी री काजर काज न ला ज बाज न कहुं वारी री त०॥१॥ मोहनी मोहन ठज्ञो जगत ठगारी री दीजिये प्रानंद घन दाह हमारी री त०॥ २ इति पदं॥

॥ पुनः ॥ मेरी सो मेरी सो तु मेरी री तुम ते जुकहा दुरी कहो ने सवेरी री क ठे से देख मेरी मनसा दुख घेरी री जाके संग खेलों सोतो जगत की चे री री में । ९॥ सिर क्वेदी प्रागे घ रे और नहीं तेरी री फ्रानंद धन कि स से कहूं, हूं अनेरी री में ॥ २॥

आज की घदन क्रिव भजब नी की घनी माई आठ सिएक जहाब जहरो मस्तक मुकट घस्नी प्रवण कुढल सोहै फूलन को सेहरो माठ भठ॥ १॥ गुण मणि माल सोहे

बाजु बद छोएँ कर कगना क्वाजै २ रूप मनोहरु मा० अ०॥ २॥सिंहा सन छत्र घरे मस्तक घमर दरे शो भा वया बर्णे ऋामि गुण गहुरु मा। ष्ट्रां वाणी गुण गमीर सुन सा न रहे भीर निरप्या नयन ठरे चूनी छाझी जिन से नेहरी, मा० प्रा०॥ ४ इति पद ॥ ॥ पुनः ॥ सरस कीजिये दई की दई कीस

वारी री तीक्रन कटाक् क्टा लागत कटारी री सायक लायक नायक मा न को पहारी री काजर काज न ला ज बाज न क्रहुं वारी री त०॥१॥ मोहनी मोहन ठज़ो जगत ठगारी री दीजिये आनंद घन दाह हमारी री त०॥ २ इति पदं॥

H पुनः H

मेरी सो मेरी सो तु मेरी री तुम ते जु कहा दुरी कहो ने सवेरी री क ठे से देख मेरी मनसा दुख घेरी री जाके संग खेलो सोतो जगत की चे री री मे०॥ ९॥ सिर क्रेदी आगे घ रे और नहीं तेरी री आनंद धन कि स से कहूं हूं अनेरी री मे०॥ २॥

( 996 ) इति पद् ॥ पुनः ॥ ऐसी कैंसी घर वसी जिनस अने ची री याही घर रहिंसी बाही छापद है सीरी छें । रपम सरम देसी घर में हुपे सीरी याहीं से माहनी में सी जगँ जस गेसी री ऐ० ॥ १ ॥ कीर की गरज नैंसी गुर जन चर्से सीरी

जानद घन सुना सी घदी घराज क है सी ऐ०। २। इति पद ॥ ॥ गोडी ॥ नेमिश्वर छाछ निस दिन मीहि सहाव सोरी पुर महन जिन राष हिर धरी मभु सहु मन माय ने० १ समुद्ध थिजे शिवा देवी के घदन क मल सोहै पूनिम चंद ने० । २। श्याम बरन दश धनुष प्रमोण सह स तक्कर आयु स्थिति जाण ने०। ३ शंख लंक्षम गुण सिंधु प्रपार भक्ति बत्सल प्रभु परम प्रधार ने०। १। सुर तरु सम प्रभु दीन दयाल दास चुनी की करो प्रति पाल ने०। ५। इति पदं॥

॥ पुनः ॥

पर्व पजूशन मेला देखो भाई व्रत पचखान करैं नर नारी कोई उपास कोइ वेला दे०। १। गुरुमुख सूत्र सिद्धांत सुनै नित कर कर शुभ म न तेला ते नर ततिखण सुर पद पा वै शिव पुर पंथ सुहेला दे०॥ २॥

( 998 ) इति पद 🛚 <sup>11</sup> पुन 11 ऐसी कैंसी घर वसी जिनस अने

सी रो याही घर रहिसी बाही छापद है सीरी ऐं०॥ रपम सरम देसी घर में हुपे सीरी याहीं ते मेाहनी में सी जग जस गेसी री ऐ० ॥ १ ॥ कीर

की गरज नैसी गुर जन चर्ले सीरी आनद घन सुना सी बदी अरजक है सी ऐ०। २। इति पद्॥ ॥ गोही॥

नेमिश्वर छाछ निस दिन मोहि

सहाव सोरी पुर महन जिन राय

हरि धरी प्रमु सहु मन माय ने० १ समुद्ध बिजे शिवा देवी के बदन क

ब क्यूं करत निरासी सुध लीजै म हाराज चुनी की मेटो करम गत फा सी अ०॥३ इति पदं॥

॥ पुनः॥
रिषभेश्वर श्वामी दिल भर दरस
न दीजै मो मन चाह रहत निस
बासर अब तो देर न कीजै रि० १
स्नासा पूरण संकट चूरन दारिद्ध
दुख हरीजै रि०॥ २॥ चुन्नी के प्र
भु आनंद कारी लुलि २ पाय परी
जै रि०॥ ३ इति पदं॥

॥ पुनः ॥

सो अब हम नव पद नेह सनें पातिक पंक छने सो० ॥ इन सम वास्क जग महि कोउ खनि खनि कोइ अठाइ कर मेरे प्यारे हान प्रकार उजेल श्यान लगाय परम गुण चिते जनम मरेण मय ठेला दे ३॥ उक्कय कर कोइ पूज रचावे म क्ति करें कोइ चेला दास चुनी मन

भवना माबै आतम रंग में खेला दे १४ ॥ इति पद॥ ॥ पुनः॥ अब तो मार्च विहारी मैं दासी

दूर करो तुम माया ममता सुन अ भिषठ पद वासी का ॥ १ ॥ प्या सी हु मैं नाथ दरस की सुम बिन एहत उदायी दरस अमृत रस हित कर बीजे करुणा कर सुख पासी अ

२ ॥ पकिस मई हु मैं ममते २ छ

सेां ॥१॥ सुंदर सरस सुघर क्रवि ते री मोहन रूप धरे तुव पद रज पैं तन मन वारूं निरखत नैन ठरे सो २। तुम सम सुखद न श्रोर जगत में देवन देव खरे भव दव ताप हर न जल धर से तुम हीं जान परे सो०।३। अचल मिहर सैं नाथ ह मारी रहियो बांह धरे कहत गुला च लगी सुध तेरी विसरी ना विस रे सो० । ४ । इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

प्रभु तेरो रूप बन्यो प्रांत नीको प्र० पंच बरण के पाठ पटंबर बि च भावो कसनी को प्र० । १। मस्त

क मुकट कांन जुन कुंडल हार हिये

( १२० )

सार खने सो० ॥ १ ॥ अरिहत सिद्ध आचारज पाठक साधू सूत्र भणे द सण नाण घरण तप उसम ए नव नाम गने सो० ॥ २ ॥ गगन नेत्र शिव अक छूपा करे सब मिछ घर स बने प्रथम मधू सित वेद इद् तिचि अधहर गुण बरने सो०॥३॥ औसो सरस सुधा न गुसै को भूछे मद अपने फहत गुडाय मिडी नहि ताकी धिव रमणी सपने सो० ॥ ४ ष्ट्रति पद् 🏻 u पुन u सी प्राय मेरि कारज सकल सरे

दुख सब दूर टरे सो० जासु पूज्य जिन वर प्रमु तेरे पद पक्ज पकरे श्रित आलस वंत प्र०॥ ४॥ कहत सुनत श्रकुलात इंद्ध फुनि पावत क बहुं न अंत प्र०॥ ५॥ श्रब श्रपनें आतम में कीनें। हम पैसे में मंत प्र०॥ ६॥ सहस नाम इक नाम में साहिब राज प्रभू अरिहंत प्र० ७॥ इति पदं॥

॥ पुनः ॥

आज मैं पुन्य उदें प्रभु दीठो आ० सीतल चित्त भयो अब मेरो प्रसच्यो मोह अंगीठो प्रा० ॥ १ ॥ असो रंग गल्यो जिन जी सें जैसो चोल मजीठो आ०॥ २॥ ना जा नूं कब नैनन के पथ हिदय में आ न पईठो आ०॥ ३॥ सो निज रूप ( ५२२ )

सिर टीको प्रoा२। समकित नि रमल होय सुमन में देख दरस जिन जी को प्र०॥ ३॥ समय सरण में श्याम बिराजे साहिब दीन दुनी की

प्रवाशासमय सुदर कहें प्रमुजी कु मेटत सफल जनम उनहीं की प्र• ५ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः ॥ प्रमु मेरे तेरे नाम अनत प्र०। अजर अमर भ्रियनासी सविश्रष्ठ

मक्ति बक्कुल मगबत प्र०॥ १ ॥ प् रुपोत्तम शकर कमछासन बुद्ध राम

घलवत प्र०॥ २॥ अपने २ दरसन

में सब मानंत हैं मुनि सत प्रणा३ रसना इक मति मद जू मेरी फुनि श्रित आलस वंत प्र०॥ ४॥ कहत सुनत श्रकुलात इंद्ध फुनि पावत क बहुं न अंत प्र०॥ ५॥ श्रव श्रपनें आतम में कीनें। हम पैसे में मंत प्र०॥ ६॥ सहस नाम इक नाम में साहिव राज प्रभू अरिहंत प्र० ७॥ इति पदं॥

॥ पुनः ॥

आज मैं पुन्य उदें प्रमु दीठो आ० सीतल चित्त भयो अब मेरो प्रसच्यो मोह अंगीठो प्रा० ॥ १ ॥ असो रंग गल्यो जिन जी सें जैसो चोल मजीठो आ०॥ २॥ ना जा नूं कब नैनन के पथ हिदय में आ न पईठो आ०॥ ३॥ सो निज रूप ( १२४ )

में आज पिक्वान्यों जो प्रामृतते मी ठो छा०॥ १ ॥ गुण बिलांस शीत छ जिन निरसत पातिक पद्म सुनी ठी आ० ॥ ५ इसि पद ॥ ग गउसी ११

विचारी कहा विचारे तेरी आग

म अगम अपार विन आर्थे आधा नहीं रे विन छाधेय आधार मुरगी विन छडा नहीं रे या विन मुरग

की नार वि० ॥ १ ॥ मुरटा बीज विना नहीं रे बीज न मुस्टा टार

निस विन दिवस घटे नहीं रे दिन विन निस निर्धार वि०॥२॥सि

द्ध ससारी विन नहीं रे सिद्ध विना ससार करता विन करणी नहीं रे वि

न करणी करतार वि०॥ ३॥ जाम न मरण विना नहीं रे मरण न जनम विनाश दीपक विन परकाशता रे विन दीपक परकाश वि॥ ४॥ ग्रा नंद घन प्रमु वचन की रे परिणति धरूं रुचिवंत साम्बत भाव विचार कें रे खेल अनादि ग्रानंत वि०॥ ५॥ ईति पदं॥

॥ पुनः ॥

निसानी कहा बताउं रे प्रगम अगोचर रूप रूपी कहूं तो कबु न ही रे बंधे कैसे अरूप रूपा रूपी जो कहूं रे असे न सिद्ध प्रानूप नि०॥ १॥ सिद्ध सरूपी जो कहूं रे बधन मोक्ष विचार न घटें संसारी दशा रे ( ३२६ )

पाप पुन्य प्रवतार नि॰॥ २॥ सि द्ध सनातन जो कहू रे उपजे थिन री कीन उपजे थिनसे जो कहू रे नित्य प्रयाधित गीन नि० ॥ ३॥

सरवंगी सरव नय घनी रे माने स रव परमान नय बाढी पलछो गही रेकरे छराई ठान नि०॥ ४॥ छ नुमी अगोचर वस्तु की रे जाण घो येंह इलाज कहन सुनन की कयू न हीं रे सानद धन महाराज नि०॥ ५ इसि पद ॥ ॥ पूर्वी ॥ इक घोछते देन का नाता फिर तो कयु नजर न भाता कृत्रिम चिढी अन योडी योडी ये प्रावरज मन

खाता इ०॥१॥ जीव अजीव मि श्र हो प्रेरक कर्म विचित्र बुलाता इ० ॥ २ ॥ एक बोल दुरंगति का कारन एक बोल सुख दाता इ०॥ ३॥ अमृत बोल बिना नर जग में भुस के मोल विकाता इ० ॥ ४ ॥ दास चुनी लख प्रलख बोलनां मो ल अमोल खपाता इ०॥ ५॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥

क्की क्वि बदन निहार निहार क्रुट प्रोषित पति प्रगमा गम कीनो विसरी विगत बिहार क्रुट ॥ १॥ गए अनादि काल में असे दीठो न हिय दिदार निरूपम निजर निहार निहारत रजिय रूप रिभा वार कु० २ ॥ भतर एक महूरत भवर प्यार करी अण पार छीने ज्ञान सार पद भींतर चेतन सा भरतार छ०॥ ३॥ इति पद ॥

( १२८ )

n कल्याण 🛚 मोहे कैसे तारी गे दीन दयाछ तारो तो प्रमु सुमहीं चारी विन त रवे कों छीजो समार मी० # 9 # फचन के। कहा कचन करियो म

छिन कचन परि जाछ मी पापिन की पावन करि वो बहुत कठिन है

कृपाल मो० । २॥ काम फ्रोध व

पटे रह्यो नित हू माया मोह जजाज मद्भी नाय स्म नाय जिर्जन रूप चंद गुण गाय मो०॥३॥ ईति पदं 🖁

॥ पुनः ॥ े

ं मेरा जियरा लगा जिनेसर सै मे० केतकी मधुर चकोर कुं चंदा जै , सै कमल कुं खगा मे०।१। देव ज गत में है बहुतेरे तुम देवन विचन गा मे०। २। कहत खुशाल राय कर जोरी भव भव पातिक भगा मे० ३। इति ,पदं ॥ 🖖 💎 🤌 ा पुनः 🦯

श्रीरन सें रंग न्यारा न्यारा तुन से रंग करारा है तुम मन् मोहन नाथ हमारा अब तो प्रीत तुमारा है ओ० । १ । जोगी हुवा तो क्रान ( १३० )

फमाया मोटी मुद्धा सारी है गीर स्व फहें हसना नहीं मारी घर २ तुमची न्यारी है भो०।२। जगम आय वाजा वजमावे घाक्के तान मिलावे है सब का राम सरीखा चू मी काहे कु वेस छजावे है भो०।३ जगम जावे मस्म चढावे जटा वढा

विके कैसा है पर मन की आशा महीं मारी फिर जैसे का तैसा है ओ०॥ ४॥ जती हुवा इद्धी नहीं

जीती पच मूत नहीं मारा है जीवा जीव कु युक्ता नाहीं वेस कु छेकर

हारा है झों । । ५ ॥ वेद पढे से

ब्राम्हण कहावे ब्रम्ह दशा नहीं पाया हि आतम तस्त्र का प्रार्थन यूमा पुकार से जनम गमाया है ओ०॥ ६॥ काजी किताब खोल के बैठा क्या किताव में देखा है बकरी के गलै चुरी चलावत क्या देवेगा लेखा है श्रो० ॥ ७ ॥ जिन कंचन का म हल बनया उन से पीतल कैसा है डारा गले में हार ही रे का सब जुग काला कैसा है ओ०॥८॥ रूप चं द रंग में मगन भया है नाथ निरं जन प्यारा है जनम मरण का डरं नहीं आनां चरण सरण में तिहारा है ओ० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

निपट कठोर कह्यो नहीं माने चंचल चपल है जोर रेमन निपटही

कठिन कठोर रे० 🛭 🤉 👸 बरज २ रह्यो सब वाकु द्वीरत जू चक द्वार रें। इ में अटक अटक प्रमुजी घ र छाउ छटक छटक जावे कीररे॰ ३ 🏿 नाप निरजन मन घस छावे जो पांचे संत गोर रे० ॥ ४ ॥ ईति पद ॥ 🛊 पुन 🎖 नट होई खेली देखू चातुरी न० जान प्रबीन गुणी गुण स्रोही देखन मनुवा झातुरी न० 🗷 १ गै। बाजत मुद्देग नाचत है नट गावत मधुरी वासरी न० ॥ २ ॥ मेम कहोटा वा धत मोठा प्यान वर्ग पढि जीतुरी

म० ॥ ३ ॥ तन मन सूरति समार

लीजै रींभौ निरंजन नाथ री न**ा**। ३भ ईति पदं ॥ । १७० ं भे पुनः । 🚓 क्वचि तेरी:सुहावन लागी दरसन देण्यो पास कुमर को भाग्य दशा श्रव जागी क्र० ॥१॥ श्रानंद मंगल मुख संपूरन भव भय भावट भागी कु**० ॥ २ ॥ मंगल**्मूरतः संकट चूरत पास आवंती दुख त्यागी छ० ।३। श्री संखेसर पास चिंतामणी पास गोडी गुण रागी क्र० ॥ ४ ॥ मया करो प्रभु पारस मगसी माया मुगत **ज्रव मांगी छ०॥ ५॥ इति पदं॥** ॥ कल्याण ॥ ः स्रविनाशी के गुन गावना जा ( १३१ ) की जोत अखड विराजत करत प

तित कु पावना स्म० ॥ १ ॥ जनम भरण का **हर** नहीं जाके फेर जगत

र्मे प्रायना अ०॥ २॥ ेखउदे राज मासत है दरपन एक समय दिखलाव ना अ०॥ ३॥ भाव भगति मन ह रिसेत होय नित परम अस को रि मोधना अ०॥ ४ इति पद॥ ॥ पुना॥ माई मेरो मन तेरो नद हरे। के घन यरण कमल दल लोचन निर

चन घरण कमल दल छोचन निर खत नैन ठरे मा० ॥ १॥ पच वरन मन इरन जरन पर ठम ठम पाष घरे रतन जटित कचन घूषरिया रु ण फुण कार करे मा०॥ २॥ इलत लसत मुगता फल माला पीत वसने उपरें मानुं चिल हैं मान शिखर तें गंग प्रवाह खिरे मा० ॥ ३ ॥ धन त्रिशलांदे भाग तिहारो तूं तिहुं भु रे तीन भुवन के नायक तेरे में विचरे मा० ॥ ४ ॥ स्त्री **त जिनंद की मूरत बिनु** देखे हरख चंद प्रभु वदन विलो विही काज सरे मा० ॥ ५॥ पदं ॥

॥ पुनः ॥
स सहर विच कीन दीवान है
राजान है परजान है पानी के कीट
पवन के कंगुरे दस दरवाजा मंडान
है ई० ॥ १ ॥ इस नगरी में तेवीस

( १३६ )

तसकर नगरी कु करता हैरान है ईं० २॥ परजा पुकार सुणी तब जाही चेतन राम सुजान है ईं०॥३॥ ऋप चद कहें नाथ निरजन हायमे

ज्ञान कमान है ई० ॥ १ इति पद । ॥ किलगढ़ा ॥ पदम ममु जिन तारी मुक्त ना म सुहायै नव निथ रिथ सिध सप दा ध्यातां घर आवै प० ॥ ॥ ॥

पूरण प्रम्ह जगत पति जग में जम फारी जग नायक जगदीशक महि मा गुण भारी प०॥ २ ॥ की धवी नगरी भछी जिहा बार कल्याणक मात सुशीमा मगवती पिता धर सुख दामक प०॥ ३॥ हो से पेचा र्फ घनुष नी काया रक्त वरनी पदम लंकन सोहै भलो शोभा निरुपम व रनी प०॥ ४॥ तीस लाख पूरव थिति कुल इक्षाकु दिनंदा पद पंकज सेवै सदा सुर नर मुनि वृंदा प०॥ ५॥ श्रीजिन महेंद्ध सूरीश्वरू जिन पाट बिराजे तेज प्रताप अखंड वि राजे शिव पदवी राजे प०॥६॥ दास चुनी के जगपती पत हाथ तु मारे दीना नाथ दया करो सारो का ज हमारे प०॥ ७॥ इतिपदं॥ ्र ॥ पुनः ॥

सुनिजर कीज प्रमुदीन दयाला नाभि राय नंदन जग वंदन मरुदेवी जीके लाला सु० । १ । जनम पुरी ( ३६० )

**अवीध्या नगरी - बश इक्षाकु उजाला** कुछ में परम प्रधान उद्योती गुण मकरद बिशाला सु०॥२॥ वृषम **छ्छन धनुप पाचरी मोहन रूप** नि राला लंख चंउ रासी पूरव आयू ता रक बिरुद् शमाला सु० ॥ ३ ॥ तुम सम कवन उदार जगत में जग मा यक जग पाला पूरन ब्रम्ह परम प र मेष्ठी खोछो मुगतका ताला सु० ४। दीन षषु मैं याचक तेरी साहि व कर प्रति पाला दास चुनी कु स स्र सपति दीजै जिन से होयं नि हाछा । ५ । इति पद ॥ u पुन u

दुक यूफ तन में कीन है तन भ

वन है मन पवन है याही में प्रावा गमन है दु० ॥ १ ॥ बंदा बनाया बंद का सीरा चढाया कंद का पमदा ल गाया फंदका टु० । २ । तुज कुं बनाया जाप कुं तुमनें छिपाया श्रा प कुं तु क्यें। लोभाया पाप कुं टु० ३। साथी हुवा उस चोर का लुक् मा खीया सब रोज का सांसा पड़ा इस घोर का टु०। ८। कहता है कनक विचार यह प्रभु का समरन सार है जोई भजें सोई सार है टु० ५। इति पदं॥ ॥ पुनः ॥ मेरे मन मानी साहिब सेवा मी ठी श्रीर न कोई मिठाई मीठा और

754 )

( 348 )

नेम मुनी से घन तेरो अवतारो री माई सु०॥ ४॥ इति पदम्॥ ॥ फहरयो॥

॥ कहरवा ॥ समफ परी मोहे समफ परी जग माया सब फूठी ज० ॥ ९ ॥ झाज का

माया सब मूठी जिंग ॥ १ ॥ खाज का छ सूंकहा करें मूरख नाहि भरोसा विछ येक घरी जंग ॥ २ ॥ गाफिल

क्रिन भर नाहि रहो तुम सिर पर घू में तेरे काल प्ररी ज०॥ ३॥ चिदा नद ये यात हमारी प्यारे जाणो हो

मित्त दिष्ट माहि खरी ज०॥ ४॥ इतिपद ॥ ॥ फहरवा॥

॥ कहरवा॥ चित में घरो प्यारे चित में घरो ये सीख हमारी अब चित में घरो थोमा सा जीवनां काज अरे नर का हे कुं क्रल परपंच करों ये०॥१। कूड कपट पर द्धोह करन तुम अरे मन पर भव थाह भरो ए०॥२॥ चिदानंद जो ए नहीं मानो तो ज नम मरन भव दुख में परो ए०॥३॥ इति पदं॥

॥ कहरवा ॥

प्रभु पद पंकज रमो मन भमरा प्र० विमल कमल दल लोचन जैसा विमल वदन सुखदाय म० ॥ १ ॥ विमल बानी सुणि सुख लहै मन वा भवना पातिक जाय म० ॥ २ ॥ विमल नाथ जी की सोभा ध्रैसी सूरज कोटि किपाय म० ॥ ३ ॥ ( १४२ )

चिन सजम करणी मानू तुस फट कायो घे० ६ ज्ञान सार तै नोम घरायो ज्ञान को मरम न पायो वै०

इति पदं ॥ u राग सोहनी k अनुभव जोत जगी हो हीए ह

मारे घं० कुमता कुटिख कहा अब करि हैं सुमता हमारी सगी हो अ०

९ ॥ मीह मिण्यात निष्ट निव भीई मव परिणति उर्यू प्रगी हो छ। २॥

चिदानद चित प्रभु के मजन माँ अनुपम अचल नगी हो स०।३ 🏗

इति पद ॥ ें ॥ पुनः ॥

शरण तिहारी गही हो चदा प्रभुजी

जनम जरा मरणादिक केरी वेदना घहोत सही क्षे श०॥ १॥ पर दुख भंजन नाथ विरूद तुम ताते तुमको कही क्षे श०॥ २॥ चिदानंद प्रभु तुमारे दरस थी वेदना नांहीं रही क्षे श०॥ ३॥ इति पदं॥ ॥ पुनः॥

॥ पुनः॥
सुंदर नेम पियारो री माई शि
वा देवी नंदन सब दुख मंजन यादव
कुल उजवालो री माई सुं०॥१॥
जा को मै ध्यान धरत हूं निस दि
न पातिक पुन्य सिहारो री माई
सुं०॥२॥ राजेमती दासी तेरे
चरन की तप करि जनम सुधारो री
माई सुं०॥३॥ कहे जिन दास

( 988 )

नेम मुनी से धन तेरी अवतारी व माई सु० ॥ ४ ॥ इति पदम ॥ ॥ कहरवी ॥

समम परी मोहे समम परी अर माया सब भूठी ज० ॥ ३ ॥ आज क छ त कहा करे मुख नाहि भरीस दिछ येक घरी जंगा २॥ गाफिष

छिन भर नाहि रही तुम सिर पर प् में तीरे काल धारी जिल्हा ३॥ चिद नद ये बात हमारी प्यारे जाणो ही मित्त दिख माहि खरी जा ।। १।

ष्ठतिपद ॥ ॥ कहरवा ॥

चित में धरो पारे चितमें घरो ये सीख हमारी अब चित में घरी थोमा सा जीवनां काज छरे नरका रि कुं क्रल परपंच करो ये०॥१। कूड कपट पर द्धोह करन तुम अरे मन पर मव थाह भरो ए०॥२॥ चिदानंद जो ए नहीं मानो तो ज नम मरन भव दुख में परो ए०॥३॥ इति पदं॥

॥ कहरवा ॥

प्रभु पद पंकज रमो मन भमरा प्र० विमल कमल दल लोचन जैसा बिमल वदन सुखदाय म० ॥ १॥ बिमल बानी सुणि सुख लहै मन वा भवना पातिक जाय म०॥२॥ बिमल नाथ जी की सोभा प्रैसी सूरज कोटि किपाय म०॥३॥ ( १४६°) कप रिपी जो सेवै प्रमुक्त अर्जर

अमर पद पाच म० ॥ ४ ॥ इति पद ॥

> ्युन•॥ ) प्रमुके चरन कज मेरो मन व

सियो जम्म सेन कुछ दिन कर म गटयो भविक कमण सित अतिहि हुलसियो म०॥१॥ सुर नर मुनि जनहरस यथाई जय कारी मिह स्रोक हरसियो म०॥२॥ कोटका

म बारू या कृषि पर रोमाग कोटि कु नाईं। फरसियो प्र०॥ ३॥ मर कत मणि सम तनु कृषि राजस भ

कत मणि सम तनु कृषि राजस भ एमि शशि मानु भाछ विकसियो प्रवाह । पच कमछ अति शाति ( 980 )

सुधा रस निरख निरख ऋति भक्ति सरसियो प्र० । ५ । मोह तिमिर सहु दूर करण कुं लोका लोक सहु ज्ञान बरिसयो प्र०। ६। तुम प्रभु पतित उधारन कारण दरेशण करि निद्धोद हुलसियो प्र०। ७। इति पदं ॥

॥ पुनः ॥

नाभ जी के नंदा जी से लगा मेरा नेहरा वो लगा मेरा नेहरा ना० वदन सदन सुख सदन कदन मुख प्रभु को वदन कीधूं शम रस मेहरा ना०।१। भ्रमल कमल दल नयन उजल जल मीन युगल मांनु उक्कल त सेहरा ना० । २। भाल रसाल

विशास अकस दृष्टि सारद शीर

मान अठमीं की जेहरा ना०। ३। नासा घपा दीप कला सी दत पति कती मानु चद का उजेरा ना०। ४ केतेली जनन 'कड भोपम कहा से

( 986 )

घक झान सार नाम पायो झान न हीं गहिरा ना०। ५। इति पद्॥ n सोरठ n

रहे तुम आज वया जी बदन द राय र० जिय जीवन संख्यिन में प्यारी हारी हाहा खाय र० 191 अधिरति घूघट पट उघारी अनुम

व मुख निरसाय एते पर भी मान

न मेंले मुखें स्थाज बदाय र० 1२। भय परिणति परि पाक इते पर स्राई धाई माय अति स्रागृह सब ज्ञान सार कूं लीनें कंठ लगाय र० ३॥ इति पदं॥

॥ पुनः ॥ '

वारो नणदल वीर कहूं कवलें। वा० मिथ्या गणिका पूंजी खाई व णगै जनम फकीर क० ॥ १ ॥ गई गई सो भलीय रही सो धर धर ह र घर धीर कवलें। धीर घरूं धीर ज धर विरहें जनम वहीर क०॥२ मला लाल बींदी नहीं भावै आभू षण नहीं चीर ज्ञान सार वाली छां न मिले घर तो न रहै कोइ पीर क०॥३ इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

( 940 )

मरणा तो आया माया अजू न युक्तामा याहिर घ्रम्यतर घग सग ज्यू मानु जोग कमायो म० ॥ १ ४

निपट निकामी निपट निरागी नि रमोही निरमाया ध्यानी आतम ज्ञानी जानी श्रीसा रूप दिखाया म° २ ॥ मान क्रोम मद क्रफता क्रोडी

क्रीहीचरकी मामा कामा सुसकसा सब क्रीही सा छन यूटी माया म०३॥ जग ते इक स्वेतवर अघि की सव शास्त्रों में गाया ज्ञान सार के सब

से घढती माया पाती आया म० ४ ॥ इति पद॥

n पुन ॥ भूठी या जगत की माया क्या भर

माया कवहूं मृग त्रिशना तें मृग की पांनी प्यास बुकाया भू० ॥ १ ॥ जैसे रंक सुपन भयो राजा राज हु कम फरमाया जागे तें कबु नजर न देखे हाथ ठीकरा आया फू० ॥ २॥ भूठा धन<sup>्</sup>गन भूठा जोवन भूठी माया काया मात पिता सुत वनि ता भूठे भूंठे क्यों विरमाया भू० ॥ ३ ॥ निज सरूप निश्चय नय नि रखें तो में क्यों न समाया तूं तोते रे गुणको भोगी ज्ञान सार पद राया भू० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥ ा पुनः सोरठ॥ वाई मोनें लालनां लल चावे वा० खिण में इसण टूसण खिण मे खि

ण में रोय हसाबे वा० ॥ ९ ॥ अस र घेदन कोयन यूभी प्रकट कही हू न जावे घोबै घूर उमाय इसे घर जगल जाय वसावे बा०॥ २॥ वी र विवेक सग छेआये सुमता कठ खगावे ज्ञानसार प्यारी मृद् मुसक न परमारथ पद पावे थां० ॥ ३ ॥ ॥ तिपद्धाः ॥ पुनः॥ अरे मन छोमी थारी काई पर तीत नहि गुरु भक्ति देवकी पूजा निसदिन करत अनीत छा ॥ 9 ॥ भाई यघ सुत कुटय कवीदा स्वार य के सब मीत ॥ २ ॥ तू मूल्यो मा या ठगनी सग पूर्ही जनम गयी बीत

ष्ट्रा०। ३। अजहूं चेत समक्त मन चं चल प्रभु सम कोईय न मीत अ० ४। चुकी प्रभु की भक्ति उर धारी पूरण पालै प्रीत अ०। ५ इति पदं॥ ॥ पुनः॥

रूडो लागे के जी थांको गढ गि रनार भार अठार अपार कियो तिहां वन राजी विस्तार निरमल नीर समीर बहत तिहां पंथिक जन मनो हार रू०। १। सुद्ध समाधी विगत उ पाधी जोगीश्वर चित धार करत गं भीर गुहा में निस दिन गुरु गम ज्ञान विचार रू० । २ । कल्याणक तिहां तीन तिहारे सोभित जगदा धार चिदानंद प्रभु अब मोहे तारो

12 15

ण में रोय हसावे वा० ॥ १ ॥ अत र वेदन कोयन यूमी प्रकट कही ह

न जावे घोषै घूर उमाय इसै घर जगल जाम व्यसावे घा०॥ २॥ वी र विवेक सग छेआये सुमसा कठ षगावे ज्ञानसार प्यारी मृदु मुसक न परमारथ पद पावे वार्णा ३॥ ध तिपद् ॥ । ॥ पुनः ॥ अरे मन छोमी धारी काई पर सीत नहि गुरु भक्ति देवकी पूजा निसदिन करत प्रानीत प्रा०॥ १॥ माई यथ सुत कुटच कवीदा स्वार य के सय मीत ॥ २ ॥ तू भूल्यो मा या ठगनी सम यूहीं जनम गयो घीत

'सा०। ३। वा के बस वस्ती इमे नायक जे २ विध सुख पावो ते स हु क्वांने नहीं कोउ मासैं काहे को प्रगट कहावी सा०। ४। चिदानंद सुमता के बचन सुणि भेज्यो हरख बधावो तुम मंदिर स्रावत प्रभु प्या री करिये न मन पक्कतावी सा०। ५। इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

दारा पद ॥
॥ पुनः ॥
तारो जी राज तारो जी राज
लारो जी राज तारो जी राज
अव मोहें तारो जी राज पूरव पु
न्य उदय तुम भेटे तारन तरन जि
हाज अ०॥ १॥ पतित उधारन तु
म पण धारो मैं पतितन सिर ताज
श्र०॥ २॥ श्रागे श्रनेक तारे तद

( १५४ ) जिम तारी निज नार क० ≀३।

इति पद् ॥ ॥ सोरठ ॥ **झावो जो रोज भावो जो राज** 

साहेब माहरे मोहर्छे आयो जी राज सीस नमाय कर जोरि कहत हूज रते कुन जराबी इस इस नाथ ज रे पर अब तुम काहे कू छै।न छगा

यो सा०। १। हम कु त्याग पिय सोक सदन तुम विना बुलाये जावी जा कारन नहि मेरे आवत ते

कोउ चूक देखावी सा० । २ । कुम सा फुटिएके यस इम साहिय काहे

कु छोक हसायो तुम कु कवन सि

सायत तुमनें फ्रोर न कु समफावो

रंग जिम सुलटी सिक्षा तज उलटी हू ठानें विषम गती अति याकी सा हिंच ऋति सिद्ध कोउ जानें प्र० ॥ ४ ॥ अति उकताय कह्यो मैं तुम से तुम से कैं।न सयाने चिदानंद प्रभु ये विनती की ग्रव तो लाज के तु मने प्र०॥ ४॥ इति पदं॥ ॥ पुनः ॥ वरसत बचन भरी हो सुगृह मे

वरसत बचन भरी हो सुगुरू में, रो ब० श्री श्रुत ज्ञान गगन तें प्रग ठयो ज्ञान घटा गहिरी हो० सु०॥ स्याद वाद नय बिजुरी चमकत दे खत कुमत डरी हो० अर्थ विचार गहिर घुनि गरजत रहत न येक घ री हो०॥ २॥ श्रुद्धा नदी चढी श्र ( १५६ )

पी कठिन सार वो झाज छ० । ३ ॥ ष्ट्रण प्रवसर जिम तिम करिर स्तिये विसद गहे की छोज अ० ॥

१ ॥ चिदानद सेवक जिन साहिय कीन यन्यो है समाज अ०॥५॥ इसि पद ॥ ॥ पुनः ॥

प्रभु जी मैं ठड़ी मनही हटक न माने यहत मात समकायो या कू चीडे हू छारु काने म०॥१॥ पिण

एम सीखा मण रचक घारत निध निज कार्ने म०॥२॥ क्विन में रुष्ट तुष्ठ हुय छिन में राय रक छिन मा

हि चँचल जैम पताका प्रचल तेहथी

गति हण माहि छ० ॥ २ ॥ यक्र तु

से न्यारो मे०॥२॥ कहैं जिनदास नेम मुनीसे धन तेरो स्रवतारो मे० ॥३॥ इतिपदं॥

॥ पुनः ॥

🦿 तारक श्रजित जिनंद भवि म्हा रा ता० जिण देष्यां सुख ऋनुभव जागे भागे भव दुख दंद ता०॥ १॥ नयरि अयोध्या जितशत्रू राजै मा ता विजया नंद ता०॥२॥ सार्ध च्यार शत धनुष प्रमाणें दीपें देह दिनंद ता० ॥ ३ ॥ आयु बहोत्तर ला ख पूरव कीं सेवे सुर नर वृंद ता० ॥ १ ॥ गज लंक्न प्रभु पद कज दी पें जीपें दोष गयंद ता०॥ ५॥मा व भगत से प्रभु गुण गावे पावे प र भस्यो शमता रस सागर समकित

मूमि हरी हो० ॥ ३॥ प्रगर्टे फुनि अक्र खिंदू दिश पाप अवास जरी हो० घातक मोर पपद्वमा भविजन घोछत मक्ति मरी ॥ ४ ॥ द्या दान व्रत स्पम खेती भविककिसान करी हरस्वच् सुर नर शिव सुस्र कर स हज सुमाव फरी हो०॥ ५॥ इति

॥ पुनः॥ मेरो कुमलाना फूल प्यारी घाणीं सुण श्री नेम प्रमू की लाग्यो खल क सब खारो मे०॥ १॥ गज सुक

माछ जाग शिर सेजा कियो सरव

पद ॥

जुल उभी ग्रारज करे ही कांई अ रंज सुणो महाराज ने०। १। समुद्ध विजै जी के लामले जी कांइ यादव कुल सिणगार ने० । २। नायक क्रो तीहुं होक ना जी गुण निधि ग रीव निवाज ने०। ३। खूब बरात बनाय के जी श्राये च्याहन कोज तीरण से रथ फेरियो जी कांइ फिर तां न आई थांनें लाज ने०। ४। <mark>श्रा</mark>वो जी उठो घर श्रापणें जी हठ क्रोमो नणदरा वीर तुम बिन इण संसार में केांण मिटावें भव पीर ने० ४। पशुवन पर करुणा करी जी मो पै आन्यो रोस दीन द्याल कहाय के जी निपट न लागै थांने दोस ने०।

( 950 ) रमा नद ता०॥६॥ राम चद कहैं साहिब मेरी काटो भव दुख फद ता

०॥ ७॥ इतिपद् ॥ ॥ पुन ॥ घणें। मूगो नाम हों रे महारे सी

केसरिया बाला नु ते नामें मव ज छनिषि तरिये चरेण सेवानी महारे

कामक्री घ०॥ १॥ कोई मजी प्रम्हा वाला कोई सेवे शकर कोई बिश्नु कोई ने रामछै घ०॥२॥ मूछ चद

कहै जय जग जीवन घूछेवे म**र**ण

॥ पुन ॥

घणो घामछै घ०॥ ३॥ इतिपद॥

फाई हट मारयो हैजी राज ने मजी घे काई हठ माहयो राज। रा प्रभु तारण हार सकल संघ सेवक प्र भु जी को छानंद घन उपकार छा० ४। इति पदं॥

॥ पुनः ॥

मोनें प्यारो लागे हो जी थारो देश मो०। राणी राजुल अरंज करे क्रै नेम पधारो म्हारै देश मो० १॥ उंची मैमी अजब भरोखा रींभ रही क्रै थारी सेज मो०॥ भिर मिर २ मेहला बरसै भींज रही गिर हेठ मो० २॥ चंद खुसाल तेरा गुण गावे पान फूलन की पैस मो० ॥ ३ इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

महेतो थारो लारे चालस्यां हो शिव रमणी रा वर मेतो थारी०

9ĘĘ ) ५। मोत पुराणी जाण कै जी राजु छ राखो पास हरस घद प्रमुराजुछ विनवै जी धानें हो ज्यो मुगति नी वास ने०।६। इति पद्॥ ॥ पुनः n आज हमारे **चार्** मगल चार। देप्यो दरस सरस जिन जी की सी मा सुदर सार आ० । १। छिन २ जन मनमोहन अरखो घस केसर घन सार घूप जो खेवो करो आरसी मुख घोछोँ जय कार आ०।२। विविध मात के पुहुष मगास्रो सुक छ करो भ्रवतार समवग्ररण आदी

ऋर पूजो चीमुख प्रतिमा च्यार छा० ३। इह घरि बारे भावना मावो ये कहां जाय पुकारुं ठूटै न क्युं अति ताणी हो पी० ॥ ३ ॥ विन प्रीतम भादें। की रजनी तारे गिनत बिहा नी हो तरफरात विन कंत कामनी ज्यूं मच्छी थोडै पानी हो पी०॥४॥ सातिन के जीवन सुं ण्यारी जा जि न के मन मानी हो मिटत नहीं कि नहीं पर कीनीं या बिध लेख लिखा नीहोपी० ॥ ५॥ तोही प्रेम निवास्यो श्रपनो याही जांत बखानी श्री जि न समुद्ध कहे सुख पायो नेम रा जेमती रानी होपी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ कंत विन कहो कीण गत न्यारी दया क्षमा में साथे छेस्या शील सयम व्रत पालस्यां हो शि० ॥ १ ॥ पथ महा व्रत दुद्धर घरस्या अष्ट करम पर जा स स्पा हो शिए॥२॥ चैन विजय राजुल इम घिनवै धारी सग न टा ल स्या हो शि० ॥ ३॥ इति पद ॥ ॥ पुन ॥ पीउ मीत की रीत न जानी हो बिगर गुनाह तजी छाबला कू कीन दया खित आनी हो पी० ॥ १ ॥ गु

( ३६४

ण वसी को सगन कीनो निगुणी म न सुध मानी हो यह चाहे ओमी न

चाहै याकी विधन पिक्वानी ही पी०

२ ॥ मानत नाही किस ही की मिस

त प्रैसे निद्र गुमानी हो कहा करु

५॥ चिदानंद घन सुजस विनो दें रमे रंग प्रमुसारी कं० इति पदं॥

॥ पुनः ॥ हो नदिया मेरी बैरन भई रे ॥ न० ॥ क्रुप्पन कोटि सब व्याहन आ ए नव भव को नेह सही रे हो० ॥ 9 ॥ तोरण से रथ फेर चले हो पसु वन की चिंत लही रे हो० ॥ २ ॥ सहसा बन की कुंजगरिन में मोकुं कबुन कही रे हों ।। ३॥ नेम रा जुल दोउ मुक्ति सिधाए रूप चंद गुण कही रे हो०॥ ४ इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

गिरनार बोल्या मोर हेली० ज ल धर सम प्रभु को तनु निरखी टे

( १६६ ) भुमति ससी जै वेग मनावो कहे चे तन ता प्यारी क० ॥ १ ॥ घन क

रजन अय तें दोश पुकारी क० ॥ २॥ घर मजन को कहन न कीजी फीजे काज विचारी विमुम मीह म हा मन विजुरी माया रीव अधेरी क ।। ३॥ गरजित अरजित छव

न कचन महल मालिया पिउ यिन सवहि उजारी तो रे भीत पराई द्

रितु दादुर काम की भई असवारी पिउ मिछने कुम्म मन तरफे में ममु खिजमत गारी कः ॥ ४ ॥ मुर

की देगमो पीउ मुक्त को न छहै

पीर पियारी सबेसा सुणि छाए पि

उ तुम मई घहुत मनुहारी क०॥

केवल वाला केवल वाला मोहि बतास्रो के० । जाकुं पूबूं कबही टू टे जनम मरण दुख जाला मो०॥ 9 ॥ भव भव भमतां पार न पायो मो अरहट की माला सो दिन स फल बचन सदगुर के पीउं अमृत प्याला मो०॥ २॥ धन प्रपनें की सोधन धारे मद आठे मत वाला पांउं ज्ञोनी जो हूं पूचूं कवहि मिटैं भव भाला मो० ॥ ३ ॥ सुपास प्रभू को दरशन पायो आए समकित आ ला शिव सुख कारी तिसकी संगत राम चंद्र गुण भाला मो० ॥ ४ ॥ इति पदं॥ ॥ सोरठ ॥

( १६८ )

रत है कर सोर हें। ११। यादव जानी खूब विराजे चढिया चपछ कियोर सदमुत कुत्र नेमी सिर सी है निरस्तत सुसिया जीर है० ॥ २ तोरन आए ब्याइन कू जब पनी नगारा ठोर पसुवा पुकार करी प्र मु जी से बंधन दीनु तीर है० ॥ ३ पीक्वा फिरिया व्रत सित घरिया

पीक्षा फिरिया व्रतं चित घरिया सोर मध्यो चिहु भ्रोर हरी हल धर की भ्ररज न मानी भ्रीसे नेम निठोर है०॥ ४॥ मोर सथन की आस पु रानीं हम कर घाके नींहोर छाल चद राजुल हम माखै नेम गए चि स चोर है०॥ ५॥ इति पद॥

११ पन ॥

नव हाथ नुं हो दीपत देह दिणंद एक ध्यान प्रभु को धरूं हो मन धरि प्रधिक छानंद अ०॥३॥ हूं सेवक यूं ताहरो हो तुं साहिब सुख चंद दीजे सेवा चरण की हो चाहै हैं हरख चंद अ०॥ ४ इति पदं॥ ॥ पुनः॥

महानुं प्यारा लागो को जी सु मित जिणंद अदभुत रूप अनीपम क्राजै लाजै कोटि दिनंद जग बांध व जग नाथ को जी तुम मेघ नरे श्वर नंद म्हा०॥१॥ चौविस दंडक माहें भमतां बहुत सह्या दुख दंद भटकत भटकत तुम भिले जी जग जीवन जिण चंद म्हा०॥२॥जनम ( 9/90 )

निस मुरमट लागो शिवा देवी के दर बार नि०। इक गावत इक मृद्ग बजावत इक गावत इक मृद्ग बजावत इक प्रांतुर शिव ॥ इक छातुर शिव पुर की नारी इक सबित मीतियन धार शिव॥ २ ॥ कहा ली वरनन कीजे प्रमु को जगत राम। बलिहार शि०॥ ३॥

इसि पद् ॥ ॥ पुनः ॥ अरज सुनो महाराज यामा जू के नद अम्बरीन के छाइछे हो ज्री

जिन पास जिणद जा १ ॥ जानम पुरी बनारसी हो छक्कन खरण फणि

पुरी बनारसी हो छक्तन बरण फणि द सो बरशा नु छोउखी हो कुछ ह साकु नरिद छ०॥२॥ नीछ बरण नव हाथ नुं हो दीपत देह दिणंद एक ध्यान प्रभु को धर्ह हो मन धरि श्रधिक श्रानंद अ०॥३॥ हूं सेवक चूं ताहरो हो तुं साहिच सुख चंद दीजे सेवा चरण की हो चाहै हैं हरख चंद अ०॥ ४ इति पदं॥ ॥ पुनः॥

महानुं प्यारा लागी को जी सु मित जिणंद अद्भुत रूप अनोपम क्राजै लाजै कोटि दिनंद जग बांध व जग नाथ को जी तुम मेघ नरे श्वर नंद म्हा०॥१॥ चै।विस दंडक माहें भमतां बहुत सह्या दुख दंद भटकत भटकत तुम मिले जी जग जीवन जिण चंद म्हा०॥२॥जनम

१७२ ) सफले मुर्मा है सही जी झाज हे पर

वक जाणीं प्रापनीं जी दीजे शिव सुख कद म्हा० ॥ ४ ॥ इति पद ॥ ॥ सोरठ राग सपुरण ॥

मानद इण अवसर मुक्त बीनती जी जगत उजागर चद म्हा० ॥ ३ ॥ से

॥ राग मल्हार ॥ अनुमव मीत मिछा दे मुफ्त कु शील संयम दोनु सावन मादी ध्या न घटा घन छोदे मो कु छ०॥ १

भासा पवन चलत छति मध्री अन हद गरज सुना दे माधन विजुरी

चमकत छिन २ ज्ञान भरी यरसा

दे मो० ॥ २ ॥ चेतन राय फहरा निज चिस सु आतम घोष जगा दे

दास चुनी के ग्रंतर भींनें बंच्छित वेल बढा दे मो० ॥ ३ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

बीर जिन वर चरन भज मन बीर जिन वर चरन पिता माता भात भगिनी काहू के सुख करन मे रें मन इक बीर जिन वर कोटि दु ख के हरन भ० ॥ १ ॥ प्रगम प्र थाह अपार भव दिध किये मै जा मन मरण लख चोरासी योनि भम कर गह्यो तुमचो शरन भ० ॥ २ ॥ पतित पावन बिरुद तुमचो सुन्यो मैं प्रमु श्रवण मो पतित कुं ज्योंहि तारो तो सही तारन तरन भ०॥ ३॥ पावा पुरी में चरण भेटे जिहां

308 ) एह्यो शिव पुर वरन एविष **चद्व** 

सूरी एमी जपै तुम हो प्रशासन शर न म०॥ ४ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः ॥ 🤚 दिल ज्ञानी पास जिणदा स्रो। दि०। ध्रम्य सेन नदन सय जगःय

दन यामा जी के नदा ओ वि०॥ 🤊 ॥ दिल दा महरम तूहीं असाडा साहिय है सुखकदा छो कादर कद

र सबै तू जाणें जो हू फैल करदा ष्ट्रो दि०॥२॥ कुदरत पर कुरवा

न तिहारी कहा छग सफत करदा छो दे दर हाल दरस मनु अपनो

ष्या सुख पावे घदा ओ दि०॥३॥ रू सुद साबद खलक मुलकदा हा जर खलक रहंदा ओ हरख चंद हम कोड न देखा तुम बिन श्रीर जि णंदा ओ दि०॥ ४॥ ईति पदं॥

॥ पुनः ॥ वालम ख्रव मत जाख्रो जोर वि क्कोर । विउपिउ पिउपिउ रटत पपि हरा गरजत घन अति घोर बा०॥ ९ ॥ चम चम चम चम चमकत चप ला मीर करत मिल शोर उमग च ली सरिता सायर मुख भर गए ज ल चिहुं ओर बा० ॥ २ ॥ उंची ग्र टारी रयन ग्रंधारी बिरहा करत भक भोर चिदा नंद प्रभु एक बार कह्यो हम जाणें। बार करोर बो०॥ ३ ॥ ईति पदं ॥

( 9%, ) ॥ पुनः ॥

गुमानन घरजी क्योंनी राज धा री पिया चल्यो परदेश ग्रा० । आ

रज देश उत्तम कुल पायी पायी स

कल समाज गु०ँ॥ ३॥ कुर्मति दु

हागिन की सग छामी छामी मि थ्या काज सुमति सुहागिन सग ति

हारी जो सुधरे निज काज गु०॥

२ ॥ घानुभव घातम की समभावत सममत चेतन राज वाछ कहें निज

नारी निहारत उपनीं फुछ की छाज गु०॥३॥ ईति पद्॥

बिमल गिर ग्यां न भए हम मीर सिद्ध वट रायण रूख की शासा भू लत करत भकोर वि०॥ १॥ आव त संघ रचावत अरचा गावत घुनि घन घोर हमभी क्रत्र कला करि हर खत कटनें करम कठोर वि०॥२॥ मूरत देख सदा मन हुलसे जैसे चंद चकोर श्री रिस हे सरसूं धूम सी करत अरज कर जोर वि०॥ ३॥ इति पदं॥

॥ राग मल्हार ॥

समिकत सावन छायो री अव मेरो स०। बीत कुरीत मिध्या म ति गृीषम पावस सहज सुहायो री स०॥१॥ अनुभव दामिन चमकने लागी मोर सुंमन हरखायो री॥ स०२॥ बोल्यो बिवेक विमल प ગહેર )

पैयो सुमति सुहागिन मायो गी स० ३ ॥ गुरु घन गरजत सुनत घुनी

जब सुरति घटो घन क्वायो री स० **४ ॥ साधक भाव ध्वक्**र उठे बहु

जित तित हरस्र सवायो री स०॥ ५ ॥ भूखी घूखी सब मूख न सूमत

समर भुजस भार छायो री स०॥

६॥ भूधर क्या निकसे अब बाहर निज निश्चै घर पामो री स० 🏻

विच विच चमकत दामिनि इरानी

अधिक अधेर मचामी दिश दिश

घीरघटा करि छाये जलघर छा०।

n पुनः ॥

मृम रहे दिछ घादछ गरज गरज हु

७ ॥ इति पद ॥

जरायो री ज०॥ १॥ मूसर घार परत धरनी पर हठ करि कमठ प ठायो उमवाही को उत्तर कीनों श्र ध घन घोर वढायो री ज०॥ २॥ श्रानंद के प्रभु पाश कृपानिघ पर मानंद सुख पायो री ज०॥ ३॥ ॥इति पदं॥

॥ पुनः ॥

मूरत स्वामी तिहारी वा सुखकारी लागे प्यारी। देखत ही दिल आनं द पायो कुमति कलंक निवारी वा मू०॥१॥ सदगुरु संगत सुनके उ त्तम प्रभुवाणी मनुहारी पर पुदगल कुं जव पहि चानां आतम शक्ति सं भारी वा मू०॥२॥ विन स्वारथ स

( 960 ) य जगके तारक प्रमुही पर उप कारी मव भव मेरे तुम हीं देवा यूं

कीनी इक तारी वेा मू०॥३॥ ध्र मृत कपी आदि जिणदा साहेव हो सुविचारी दास क्षमाकस्याण कु दी जे निज सेवा निरधारी वे। मू०॥

प्र ॥ इति पद ॥ n पुन ॥

गरज गरज घन घरसे देखी मा ई ग०। नेमीऋर प्रभु जीग धरे जि

त तित ही दामिनि दरसे दे०॥ 9

यह सावन घन वेकोमल तनु देखन

कु जिय तरसे घरम पाछ जय जग

दे०॥ २॥ इति पद ॥

पति देखी तबही मी मन सरसे

( 969 )

॥ पुनः ॥

देखो आज गरज २ घन वर से दे०। राजुल कहें सुण येरी सखी री नेम बिना जिय तरसे दे० ॥ १ ॥ चिहुं दिस क्वाय रहे घन बदरा बि च विच दामिनि दरसे मनमोहन गिरनार सिधाये मुक्ति वधू वर वर से दे०॥ २॥ कलन परत घरि पल क्रिन मोहि कों बिरह व्यथा नित गरसे जा दिन जग जीवन मुख दे खूं ता दिन मुक्त मन ठरसे दें ।। ३ ॥ तज संसार सखिन युत कुमरी जाय मिली जिन वर से सेवक छ चल मिलाप निरिष् क्रिब बार बार पद फर से दे०॥ ४॥ इति पदं॥ ( १८२ )

॥ पुनः ॥

ष्टुछि २ पायन परजे री मा० ॥

एमा घननन नन घन गरजे री

मन मायन रितु भाई वरपां की ज़ा

न भिमल जल भरजे री मा०॥१४

निशि अधियारी कारी घटा यरस

रहि चमक चमक जिया छरजे पंबन

**भ**ष्ठत सन नननन नननन विरइ श्यपा से। इरजे री मा०॥ २ ॥वि

पय विकार उमग रहि नविया केहि विध पार उत्तरजे मनमोहन जग

नाच बिना अब कीन भूनें मोरी

अरर्जे री मा० ॥ ३ ॥ एतनी अरज

करजे सेवक की आशा पूरी प्रमु

धुन जग पति मोरी नजर मेंहरदी

( 983 )

४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ मै तो ठाढी भीजूं प्रजहूं न आ ये प्राण पियारे मै०। घन गरजत चमकत चिहुं श्रोरी डरपत जिश्ररा मेरा आली इतनी अरज कहे दी च्यो मै० ॥ ३ ॥ हाहा करत तेरे पैयां परत हूं प्रभु आवे सो कीज्यो ततिखन आय सुमति कर पकरत सर्व विरित संग कीनूं मै० ॥ २॥ रेवत गिर पर राजुले पहुंचत यदु पति से व्रत लीनें। कर्म सघन बन चूर प्रतापी राजुल नेमि चिरजीवों मै०॥३॥ इति पदं॥ ॥ पुनः ॥

( ४८६ )

सिख घन गरजत हैं तहफत जिय रा हमारा रे स० ॥ १ ॥दादुर मीर थकोर चिहु दिशा मुमर करत सकारा कोयल गरेद सुनावत सुदर विकस त्रहे धन सारारे स० ॥ २ ॥ हय ग य रघ पायक सह समकर आये हया म हमारा पशुवां पुकार सुनत ही फिर गये कोटि क्रपन नर सारा रे स०॥ ३॥ नय मय प्रीत सजी ने मी मार लाज नहीं यदुकुछ की दा न सबद्धरि दे मि जनमें संयमसू चित धारा रे स्वा १ ॥ श्रीतम प

रपाम हमारा रे सम भावी रमा० चिमकत विजुरी वरसत मेहुछा पि उ पठ रटत पपिष्टरा चनन चनन ( 964 )

हले राजुल नारी शिव पुरमें दिया डेरा यादव कुल पति नाथ प्रतापी वंदो भवि हितकारा रे स०॥ ५॥ ॥ इति पदं॥ ॥ भंकोटी॥

चेतनजी सोही हैं राज हमारा जाके घरम मारग व्यवहारा चे० मी ह महा मद जोर करन कें। आन अ खंड प्रचारा मंत्री राज विवेक वि राजत संयम जसु प्रतिहारा चे०॥ 9

॥ आर्जव पाट गजेंद्ध सुहावे विनय तुरंग सु चारा रथ शीलांग सोहै जाके चाकर शम दम प्रादि सुसारा चे०॥ २॥ समिकत मदन मनोहर चामर धर्म सकल सुखकारा सिंहा सन संतोप विराजत जग जस हुन्न सुघारा चे० ॥ ३ ॥ क्षमा खर्ग घर मुनियर मवि जन प्रजा छोक प्रति पाला याल चद्ध तुम हो मेरे स्वामी

सदगुरु गुभ परि वारा चे० ॥ ५ ॥ इति पद ॥ ॥ पुनः ॥

चेतन जी घट ही में बैरागी जाकी छगन प्रमु से लागी चें० भ फल आगोषर प्रागम कहावत सो

इह घट में धासी चे० ॥ १ ॥ गृह वासी मठ बासी पहित राजा प्रजा

अनु रागी इत उत होरत मत मत

धारी पग स्रोजत जैसे पागी चे०

२ ॥ भस्म छगावत मूड मुडाबत का

न फरावत त्यागी मुख कुंत बोलत वन मांही होरत मन वस बिन है सरागी चे०॥३॥ मृग मद ढूंढत रांन रांन में भटकत जिम मृग भा गी बाल चंद्र परमातम आतम ज्ञा न जोत जब जागी चे०॥४॥ इति पदं॥

॥ भंभोटी ॥

राखूं रे हमारा घटमें जिन राज नाम तेरा महाराज नाम तेरा हो० जाके परभाव मेरा अज्ञान का अंधे रा भागे भया उजेरा हो०॥ १॥ सूरत तेरि रागे देखी विभाव रागे प्रध्यात्म रूप जागे हो रा०॥ २। मुद्धा प्रमोद कारी रिषभेश जो ति ( 966 )

हारी लागत मोहे प्यारी हो०॥३॥ वरोक नाय तुमहीं करिये सनाय हमहीं हो रा०॥ ४॥ प्रमुजी तिहा रि सार्खें जिन हुएं सूरि मार्खें दिल माहि येहि राखें हो रा०॥ ५ ॥ इ विषक्षः॥

॥ पुन ॥ संसीरी चंद घंदन दी जोत

जब निरस्तु तब मोहनि मूरत लग गर्ड कलेजवा में चीट स०॥ १॥ ज प्टेंन दास जिन की क्षवि निरखत चा

हें शरण की झोट स०॥ २ इति। ॥ भन्मोटी ॥

कीण विघ नाच निकट तेरे आ

उ। काम ऋोध मद छोम मोइरत

निश दिन प्रीत लगाउं धन दारा परिवार सघन बन मन कुरंग जि म धांउं को०॥१॥ कर्मकुंटिल की नें वहुतेरे सनमुख होत लजाउं धर म जिनेश्वर साहिव सांचे ओर देव निहं ध्याउं को०॥ २॥ तुम सम दीन बंधु निह दूजो चरण छोम क हां जाउँ दया धर्म प्रतिपदम जयो परि मन बंक्तित फल पाउं की०॥ ३॥ इति पदं॥

॥ भंभोटी ॥

भजन विन यैं।हीं जन्म गमायो भ०। त्रख चौरासी फिरता फिरता दुरत्रभ नर भव पायो भ०॥ १॥ तीन पचासा जीवत नाडीं संग च

( 990 ) **हें नहि काया सुख सपत सुपर्ने** की

माया जङ्गसे यादल क्वाया म०॥२

सप जप तीरघ कचू नहि कीना म म दरशण नहि पायो राम चद्ध प मुं जीको चेरी चितामण मैं पायो म० ॥ ३ ॥ इति पद 🛊 ॥ रागिणी देश ॥

परमातम के गुन गाना आपेकु **भाप रिफाना शमेता सरवर के उ** पर घोषा धतर मैल सुघर नर नि मंछ होय ध्यान छगाना तब निर्

पम रूप छस्राना प० 🛚 🤋 🗎 चेतन

घनुमय रस पीना सुख बिछर्से नि त्त नयीना सुमति जग जग लिपटा ना घर भानद् अधिक बढाना प० १ शुम ज्ञान लिया सदगुरु का
 पाया मारग शिव पुरका मव ग्रट
 बी सैं लंग जाना चुन्नीदास अमर
 पद पाना प०॥३॥ इतिपदं॥
 ॥ पुनः देश॥

क्यों न जपत नव कार भविजन जग जीवन ग्राधार म०। समरत सकल संताप नासैं तुरत करें भव पार भ०॥ १॥ घरत ध्यान सुधा र जो जन नमैं बारं बार कोटिक कष्ट दुराय पलक में दे सुजश भंमा र भ०॥ २॥ गुण अनंत अपार जाके कहत न आवे पार परम मं त्र सिद्धांत भाषित चौदे पूरव सार भ०॥ ३ स्राधि व्याधि उपाधि ना

( 997 )

सक नायक परम उदार कहत गुला य न ध्रोर या घल सुख सपति दाता

रभ० ॥ ४ ॥ इतिप<sub>द</sub> ॥ 🛚 घहार 🛚 निरमछ होय मजले प्रमु प्यारा

सय शसार से है बोन्यारा नि०॥९ पार्म्ब प्रमुको दर्शण करहैं भव जरु

पार उतारण हारा नि०॥ २॥ जा की श्रिषचछ जीत विराजे अछख

अगोचर कप उदारा नि०॥३॥

अक्छकी अधिनाशी छद्भुत तीन मवन विच है प्रमु न्यारा नि०॥४

जाके गुणको पार न पान्ने कहन स

र्के कोई जस विस्तारा नि 🗸 ५ 🏾 जाके मजन से पावत प्राणीं सुद क्षमा कल्याण प्रजु न्यारा नि०॥ ६ ॥ इतिपदं ॥

महसेन घर छानंद वधाई । ल षमणो जी ने नंदन जायो चंद कु मर त्रिभुवन सुख दाई म० ॥ १ ॥ चंद्र पुरी में जन्म महोच्छव छप्पन दिस कुमरी मिल छाई म०॥ २॥ तीन मान बंधान ज्ञान युत गीत संगीत भू पद पद गाई ॥ ३ ॥ ती न गाम षट एक साध स्वर राग क् तीसं ऋतलापत माई मण ॥ ४॥ जय २ कार करे नर नारी पावै दी न मान जस गाई म०॥५॥च नी की प्रभु आस पूरण भइ नव नि घ रिघ सिघ बढत सवाई म०॥६॥

( 398 )

ष्ट्रति पद् ॥ ॥ राग सहाना ॥ 🥆 🧗 🕔

, तेरी मूरत की **सुदर** सी छटक क्क् विदेखी सुहावनि छागे भछी ।

ते०॥ १ ॥ गल विष माल/विधाल अजय क्या घरनें। छवि है मुख सो

मा प्यारी २ ते० ॥ २ ;॥, सीस मु कुट कुढल की लटक घाजू की क मक हैं कर पोहची न्यारी न्यारी

ते० ॥ ३ ॥ घरन कमल सेउ शांति अचल दीजे यक्तित फल जावे दास **भुनी घारी वारी ते० ॥ ४ ॥ इ**ति

॥ राग छाडानी भ एही सुभाव पना वो उस नग्रणु दा ए०॥ १॥ जिन दरशण विन विण न रहंदा ऐसी प्रमी यें अमा ब अमावे ए०॥ २॥ होत खुसी सुख रूप प्रनीपम भगत जंजीर ज माव जडावे ए०॥ ३॥ नवल कहत भगवंत भजन सुं पातिक सकल भ डाव पडावे ए०॥ ४॥ इति पदं॥ ॥ राग सामेरी॥

सेत्रुं जानुं बासी प्यारो लागे मेरा राजिंदा गिरवरि यानुं बासी प्या0 । इण डोंगरियेरीफीणी फीणी कोरणी उपर शिखर विराजे मे० से० ॥ १ ॥ चामुख बिंब अनोपम काजे अदमुत दीठां दुख माजे मे० से० ॥ २ ॥ कानें कुंडल मुकट विरा ( ३९६ )

जे बाहें घाजू यघ काजे मे० से० ३ ॥ खोवा खंदन अवर अरगजा के सर तिलक बिराजे मे० से० ॥ ४ ॥ इण गिरि साधु अनंता सीघा अह ता पार न आंचे मे० से० ॥ ५ ॥ नमन बिमल प्रमु इण पर बाले मव २ पार उतारों में० से० ॥ ६ इति पद ॥

॥ पुन ॥
साहिया गिरि राज हमारा मी
हना गिरि राज हमारा । आज गि
स्वर गिर नयणें निरण्यो देखत मन
मेरो अति ही हरक्यो भीस ट्रंक पर
बीस जिणदा ममु दरशण से मिटत
मय फदा साठ ॥ १ ॥ महर अपार

में मधुषन सोहै जात्री जन आवें मन मोहे संवत अठार ग्रसीयां व रसे माधव मास मनोहर दिवसे सा०॥२॥ नगर वालूचर संघ जं य बंतो गिर वर पूजै मन हरखंती जेह शिखर गिर जात्रा करस्यें ते भ वि जन मन घंकित वरस्यें सा० ॥३ धन धन ए तीरथ जग मांहे पूजे भवि जन मन उच्छाहें मानव भव नें। लाही लीजे तीरथ देखी उच्छव कीजे साठा। १॥ जो ए तीरथ नि त प्रति बंदे तेहना कर्म सह ए नि कंदे भूप विजय नो सेवक बोलै ए तीरथ नें कोईय न तोले सा०॥ ५ इति पर्दे ॥

( 390 )

तेविस मा जिन राज जोडी धा

री कीन जुरेगो अध्यसेन वातयामा देवी माता तू तारण संसार जो० ह

रण समछावी नव कार जो० में २ म कप विमल कर जीती में जिन वें सब २ दीजी दीदार जो०॥ इ इति म ष्ठ पुन∗ ष ँ माई हे माई मेरों कत देशायर कीना आए जोर हुकम साई के पर मर रहेण न दीना है० ॥ १ ॥ जाव फहा दस्मी पकरे मी चलहे खायि सजामी पछ पह चटत श्रीधि यू मी नहीं प्रेम सुधा रस पीना हे०

🤋 ॥ कमठ की गारण नाग की ता

र शि**पुन**्ध रे~्र

२ ॥ दुनियां देखि चिहुर वा जीसी तो भी पिउ न पतीनें। स्त्री जिन राज वदत उण चेतन संवल साथ न लीनें। हे० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ रेखता ॥ घरी धन आजकी एही सरे सव काज मो मनका गए श्रघ दूर सव तजिकै लष्या मुख आदि जि न वर का ल०॥ १ ॥ विपत नासी सकल मेरी भरा भंडार संपत का सु धाके मेध हू वरसे ल०॥२॥भई प रतीत हिये मेरे सही हो देब देव न का टूटी मिध्यातकी डोरी छ० ३॥ विसद श्रेंसे सुन्या मै तो जग त के पार करनें का नवल छानंद हू पायो छ० ॥ १ ॥ इति पद ॥ ॥ पुन 😘 प्रमु तुम गुण समरत ही हुवा घटमें उजारा है दिवानाहु तेरे उपर

( 400 )

नजर मेरी न जाना है सकल तन मन सभी वार् विसाद सव खजाना है प्र० ॥ २ ॥ दि सावा दर्श तुम अपना तुहीं साई हमारा है उँटै

सद्य कम की मक्ती न पाया मर्न

यारा है प्र०॥ ३॥ तिहारा खूब सवजग में सुहीं दिलबर हमारा हैं

प्रण ॥ ४ ॥ प्रभु मुक्त कर्म की नासी

विचारी विरुद्द तुम अपना नजर म

त रुद्ध मे राखी हरी तुम दीस सध

मेरा प्र०॥ ५॥ रहाँ दिन रैन में

तुभ कों निहारो कूक मेरी कुं चरन की शरन में श्राया विचारी जान चेरे कुं बसेरा टूर कर मेरा सही पु दगल के घेरे कुं प्रणा ७॥ इति पदं ॥ 💈

॥ पुनः ॥ 🕠 ं किये श्राराधना तेरी राखो जग पती शरण मेरी तुम विन कोई न हीं मेरा समभा दिल ज्ञान सा हेरा ९ ॥ करम की कैंद्र नें घेरा जहां न ही कोई मेरा करम से तुम चुडां श्री गे सबी संकट मिटा**छो**ँगे ा। २॥ मुक्ते एक आसरा तेरा रहं तुम ना म का चेरा कमठ के मान भजन हो निरभय के निरंजन हो ॥ ३॥ गर

( २०४ ) सुनें। श्री नाभि के नदन परम सुस

देन जग घंदन मेरी धिनती अपा वन की विश्वारों में सो क्या होगा २ ॥ फसा हुं कर्म के फद में मुक्ते सुम बिन पुरावे कीन तुमहीं दा सार हो जग के निवाजों में तो क्यों

होगा ॥ ३ ॥ पढा सागर प्राधाही में

भकोरे कुमति के निस्दिन मेरी अ य नाव अध जल में निकारी में ती क्या होगा ॥ ४ ॥ अधम उधार पू

रण की सुमति की छाज दक दीजी

जगत के फद से अब के युदाओं

गे तो क्या होगा ॥ ५ ॥ इति भद ॥

भ पुनः ॥ 🐃

समभ छे जीव वे प्यारे मरम में

( २०५ )

भूलनां क्या रे बहुत है तूं सयाना रे भया है क्यों दिवाना रे ॥ १॥ सुमति के संग में फिरनां कुमति के संग से 'डरना झान के पेंच में पर नां करम के फंद से लरनां जल्ल का जोर क्या करनां कुफर का संग भी हरनां जगत का देख वे मरनां श्रकेला आग में जरनां॥ ३ ॥ धरम में ढील क्या करनां पापमय पिंड क्या भरनां धरम के ध्यान कुं धर नां धरम बिन माहि को सरनां॥ ४ जगतमें को नहीं तेरा कहा तू मानले मेरा जनम तू यों न पावेगा कहतहूं प क्रतावेगा जगतकुं जान वे सुपनां जग तमें नांहि को अपना कुसल कुं चेतता

( 206 )

रखना चाहिंगे उस के रस कस का मजा दम दम में चलना चाहिमे ने ।। १॥ कप जिस का है निकप म छख सकै कोई क्या मजाछ जो **लखें** उस के तयीं लख के इरखना चाहिये ने०॥२॥ नाम जिन का 🛊 अलख छक्षण का क्या देवे पता मूठ सच इसकी तूम्है लाजिम परस

नो चाहिये ने० ॥ ३॥ च्यान अनु मब मित्र का छाया परम जानद मै

देख कर स्थकप अब किस की निर स्तना चाहिमे नेठ ॥ १ ॥ दास चू नीं झान घन पाया विमल जिन देव से मुख सेती गुण गान अमृत 🚣 नजना चाहिंचे मे० ॥ ५ ॥

# ( २०९ )

॥ इति पदं॥

॥ पुनः ॥

.विनां मतलव गरज रखनां **नच** . हिये किसीका फिर करज रखनां न चहियेमतालय से निकल जाता है मतलव तो तालव से तलव रख नां न चहिये ॥ १ ॥ इवा दत की यही सूरत परख ले क़दम इस जा कुढब रखनां न चहिये ॥ २ ॥ भरो सा कुछ नहीं है जिंदगीका दिल ग्रपनां जां बलब रखनां न चहिये ॥ ३ ॥ ए वातें मोज दरिया दिस से निकली चुनी कुछ रंज ख्रब र खनां न चहियेँ वि० ॥ ४ ॥ पदं ॥ ॥ पुनःः॥

( २१¢ )

ख़लक एक रैन का सूपना सम मानर की नहीं प्रापना कटिन या लोम की घारा बह्या सब जात ससा रा॥ १ ॥ घडा एक नीरका फुटा पत्र जैसे डालसे टूटा छैसी नर जान जिद्गानी अभी सू चेत श्रमिमानी २ ॥ भूछो नर देखे तन गोरो या

जग में जीवनी घोरो सजन सत मात परिवारा सभी उस रोज है न्यारा ॥ ३ ॥ निकल जब ज्योन जा

मत जाण मा देहा छगा जिन राज से नेहा ॥ २ ॥ सुभ ध्रार्य उतम कु

चेत अव चेतंतुम प्राणी जिन

वेगा नहीं कोई काम आवेगा सदा

रुपाना फिर२ जन्म नही पाना

आगम धुनि सुनो वाणी॥ ५॥
कुमतिके फंद कुं वारो सुमति के संग
कों धारो शीख एक मान सद्गुर की
करो नित भक्ति जिनतर की॥ ६
कठिन जम राज की धारा कहत
यदुराय ओहे तारा ख०॥ ७ इति
पदम्॥

॥ पुनः ॥

टुक नजर महर दी करणां जिन
मैं पकड़ा तेरा शरणां दु०॥ १॥ मैं
हूं अध्यय पाप की मूरत मेरा दोष
न धरणां दु०॥ २॥ अध्यम उधारण
तुम हो असु जी अपनां विरुद्ध समर
णां दु०॥ ३॥ साहिव एक अरज
सेवक की भगवंत लाल तुम सरणां

२१२ ) दु०॥ ४॥ तारण तरण जैन सुणि

यत हैं मोक् पार उधरणा दु०॥५ इति पदम्॥ ॥ पुन ॥ तेरे दरस के देखें से मुर्के आराम होता है दरस मोहे दीजिये प्रमु

जी दरस की दिल हमारा है अर्घे पी रैन में जैसे चादणी का पसारा है ते०॥१॥ कहु कबु और कक कबु और यही जजाल होता है यही स

च बात साधन की सरासर काम होता है ते०॥२॥ मेरा महाराज दिल ज्ञानी मदिर के बीच बसता

है उसी के ध्यान में मोती भला मछ चा मछकताहै ते०॥३०॥

इति पदं ॥

॥ पुनः ॥

प्रभु छवि निरख के टुक सीस नमाती जा चरेण की शरण धर के जरा सीस नमाती जा प्र० ॥ १ ॥ सुख संगत है सुखदाई पुन्य उदय पाई क्विन क्विन भजो रे भाई सुर लोक सोहाती जा प्र011 २ ॥ प्र मु पाय लगूं जी तेरे सब मतलब ही के चेरे धन सींच २ खोयी यथा न गमाती जा प्रणा ३॥ जाग २ रे बटाउ ईहां नांहीं कोउ तेरा सब चोर लगें लारे धन धन लुटाती जा प्रणा ४॥ सब जोग मिल्यो नीको विन करणीं है फीको चंद अवसर ( 238 )

के भूके फिर ही प्रक्रताती जा प्र० ५॥ इति पदम् ॥ · " ॥ रेखता **॥** " जिन आप कु जोगा नहीं तन मन कु खोजा नहीं मन मैछ कु घो या नहीं अधील किये से क्या मया 🤋 ॥ छाछच करे दिछ दाम का या सद करे घदनाम का हिरदे नहीं सु

घराम की हरी हर कहाती क्या मया॥०॥ कृतो हुवा धन माछ का घंचा करे जजाल का हिरदा हु

या चढाल का काशी गया तो क्याँ मया ॥ ३ ॥ गीगा करे ससार का

जानें कुजनां बाजार का छाया ती र्घ करि दारिका छापा लिया तो क्या भया ॥ ४ ॥ जीवते पित्र कुं सुख नही उनको जक आसक नहीं चंडाल में कुछ सक नहीं तर्पन किया तो क्या भया ॥ ५ ॥ इस सांस में कु छ वास है जरा राम का परकास है सोही मला जिन खास है ज्ञाम्हन भया तो क्या भया ॥ ६ ॥ इति पदम्॥ ॥ पनः ॥

॥ पुनः ॥

हरदम प्रजू को याद कर दिल

में यकर येही पें कर या जिंदगी
भूठी समफ ममता सतारे येखबर
ह०॥ १॥ चांम का दीदार है माया
कुटुंव परिवार है घरी दोय का
बाजार है जिन ही सुमर येही सुक
र ह०॥ २॥ दुनियां में नही कोई

( २१६ )

सार है सबंही जमाया जाल है ये **भु**पन ध्युससार है क्या सोमा तूर धुरा पान कर ४० ॥ ३ ॥ गज राज रतन घमोछ है घन माछ मुख्कते छोछ है जैसा जन कल्छोछ है कर घरम सासु नेह घर ह०ा। ४ ॥ दे ही जो रग पतग है जैसा भूका रग हो तैसा जो रामा सग है वलील साता तेहि कर ह० ॥ ५ ॥ दुनियाँ मढाई दूध हैं ऐसी जर्मे जो खुध है जिन राज येक महसूब है निस दिन साकी सेय कर ह० । ६॥ तू कर ममू की घदगी सार्ते सफल होय जि दगी अब छोड दे सब रिंदगी कबु खयर कर कलू; मेहर कर ह० ॥ ७॥

इति पदस्॥

॥ रेखता ॥ 🍈

सांवालया जैसे वने तैसे तारों मे री करणी कळू न विचारो सां०॥ १॥ नाग नागनी चाकुल दोनूं जरत अ ग्नि से उवारो जिन कुं राज दियो शिव पुर को तो जननी ग्रान उवा रो सां०॥१॥ अस्वसेन को नंदन कहिये माता बामा देवी प्यारी वाल अवस्था में जोग लियो है तो पंच महा व्रत धारी सां० ॥ २॥ जोग विरोध से कुल बरावत आठ कर्म रूप न्यारो काया गाल गयो शिव पुर कुं लोका लोक निहारो सां० ॥ ३ ॥ धन्य धडी धन भाग है मेरी शिखर समेत निहारी मन वच कामा नमो युच गगा चरण कमल थिछ हारी सा० ॥ ४ इति पदम्।।

n गजल n है मुनासिब भ्रापर्ने घर बेलाग

होकर जाईये लाग तो रखना नही छाजिम है मन समकाईये हैं० ॥ १

छाग में देखा तो क्या क्या सुरतें आ ई नजर तार में छिपटी हुई दबसे इ

न्हें सुल्फाइये लाग किस के हाप

व घर का नाच इसकी देख गैरत

है जीर होर किस में है छगी घर

लाईये हैं० ॥ ३ ॥ दास चुनी नें जी देखा झान के चस्मे के बीच आप

सी बेछाग छगा रख अछग सुख

## ( २१९ )

पाईये है० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुनः ॥

कधी प्रभु पद्में मन लाया तो होता अरे निरगुन का गुण गाया तो होता पड़ा हैं वेखवर माया के फंद में जगत जंजाल सुलभाया तो होता क० ॥ १ ॥ अब अवसर आ मिला टुक सोच प्यारे आतम हित कार प्रभु ध्याया तो होताक०॥२ तू हैं मनमोहन के त्रिशला नंद प्या रा जिन सेवा में सुख पाया तो हो ता पुराओ आस चुनी की प्रभु जी दिल भर दरस दिखलाया तो होता क०॥५॥ इति पदम्॥

॥ गजस्र॥

( २२० )

दिल से हर दम में तेरी याद किया करता हु सेरे बस्फी का गुना

याद किया करता हु तू निरकार निरावाच अगम अगोचर मैं तेरे ध्यान में दिल शाद किया करता हूँ दि० ॥ ९ ॥ है भ्रष्ठस्व नाम कोई तुम्म कु लखावे विरला सामित घ्रपनी यही युनियाद किया करता हु दि०॥२॥ दिछ में बसता पें तूर हता नजर से गायव क्या गुनह है सकी मैं फरियाद किया करता हू दि०॥३॥ मिठ गया मरम का प दवा खुछे प्रतर के पठ चुकी खुस दिए छासी छावाद किया करता हू दि०॥ ४॥ इति पद्म्॥

## ॥ गजल भैरवी ॥

गुरुदेव जीका ध्यान सदा चित में लाईये पातिक सकल भवभव के खिणमें गमाईये गु०॥ १॥ निरुपम स्वरूप जिनका श्रमीरस सैं भरा नि र्मल गुनें। कें। देखदेख आनंद पाईये गु०॥ २॥ साहिच सुजान जिनके चरन की शरन गही जागी सुमति सुघर सें परम पद कों ध्याईये गु० ॥ ३ ॥ दाता दयाल इन के सिवाय जग में कैंान हैं जिनकी कृपासे बो घ हिये में जगाईये गु०॥ ४॥ गु रू भक्ति आन अपने हदय वीच चुकी दास सेवा में मन कुं दीजे सु जस मुख से गाईये गु० ॥ ५॥

( २२२ )

इति पदम्॥

॥ गजल ॥ ससार नाम उसका जो सारा भ

सार है इस जगमें न कोई मेरा ते रा नाम सार है। भवजल झगम भ

थाहरे इसका न पार है चारो गति कि भवरा पमती छापार है॥ से०॥ १

जिया देख दरा मेरारे तुम चें नहीं क्रिपा तेरे हाथ मेरारे अवतो उधार

है स०॥२॥त्म सिमाय देव मे ध्या उन दूसरा मैंनेती प्रपने दिलमें रे कि

या शकरार है स०।३। श्रव क्लोड स

क्छ यात कू तेरी शरण गही जिन

दास हाय जोड के करता पुकार है स० ॥ १ ॥ इतिपदं ॥

॥ राग भैरवी॥ गजल॥

जब तलक तन मैं मेरे यह दम रहें प्रभु नामका सुमरन मुक्ते हरदम र है मै तोहूं चाकर तेरा जग नाथ जी। तेरे चरनां में मेरा मन रम रहें। ज० ॥ १ ॥ तुक्त बिन अपनी च्यथामैं कि ससें कहु। पाउं मै बंक्तित क्षय उप शम शम रहै।ज०॥३॥ इतनी अर जी हें मेरी सुन लीजिये ॥ चुनी कुं श्राधार प्रभु दम दम रहै ॥ ज० ॥ ३ ॥ ईति पदं॥

॥ गजल ॥

लगा रहता है प्रभु के मन चरन में करूं सेवा प्रभु की रात दिन मै मिटा कर भरम का परदा जो देखा ( २२४ )

है मूटा कार स्वाना सीच दिछ में छ०॥ १ ॥ हुवा जब घोघ आतम का मनन से तो पाया सार सदग्र के वचन में छ० २ ॥ सफल जीवन ममु चुकी का कीना परम ग्रानर्दे पद प्याता हुँ मन में छ०॥३॥ इति पदम् ॥ ॥ हुमरी ॥ चलो सखी जिन बदन कु मधु वन में मेरो सावरिया आस पास में भगी भादी पग २ माहे जल मरिया घ०॥ १॥ पट रित् फी भुदर तिहा महिमा जैसे सुरे की फुछ यरिया च० ॥ २॥ पल इछं

गरजन गिरि नीमारना मानु नम

( २२५ )

नव वांदलिया च० ॥ ३ ॥ संघ सक ल मिल दरशन छावे देश २ के जा तरिया च० ॥ ४ ॥ कर जोडी प्रभु के गुण गावे थेई थेई नाचत अप क्रिया च० ॥ ५ ॥ कहत ग्राचीर मेरे पास जिनंद के चरण कमल पर चित धरिया च०॥ ६ इति पदम्॥ ॥ ठुमरी ॥ गिर नारी की वता दे डागरिया

गिर नारी की वता दे डागरिया नेम प्रभू जी नें जोग लिया गि०॥ कृष्पन कोड़ यादय मिल आये जू नां गढ की नागरिया गि०॥१॥ सहसा बन की कुंजगलिन में पंच म हा व्रत प्रादरिया गि०॥२॥हाथ जोड के अरज करत है चरण कम ( २२६ )

छ मे चित घरिया गि०॥३ इति पदम् १

॥ पुन ॥ रथ चढि यदु नदन प्रायत है षक्षो ससी सब देखन कु र० मोर मुकु ठ पीताबर सोहे गिर नोरी कु ध्याव स हैं र०॥ 🔊 ॥ तीन छूत्र झीर

तीन सिहासन चीसट चमर डोलाय त हैं र०॥ २॥ छाछ चद की येही भारज हैं सब सखि मगछ गावत है

र०॥३॥ इति पदम्॥ ॥ पुन ॥

श्री चितामणि पार्श्व प्रमृतुम षरण शरण हम आये है मनमोहन

मुद्रा कृति उज्यल देखत इग हुछ

कृतार्थ किये सु कीए श्री०॥१॥
तैसे भिव जन प्रभु दर्शण किर पर
म पीयूष पिये सो पिये श्री०॥२॥
परम चिदानंद चन मय मूरत निर
खत वृजिन गए सु गए श्री०॥३॥
श्रमृत चंद सूरि जिनवर कुं प्रणत
प्रगल्भ थए सु थए श्री०॥४॥
इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

अगर मगर कर गहन करण पर आय चले फिर सांवरिया अ०॥ १ तोर दई मेरी नव भव की प्रीत परम सुख सागरिया अ०॥ २॥ तेल चढी मुभ कुं क्रटकाई छाप च ढेरेवत गिरिया अ०॥ ३॥ मंजुल ( २२८ ) श्री शासी जिन झानन निरस्रत

वपुपचकोटि हुछस गई रे मे० ॥ २ ॥ खिर सचित ग्राच दूर करन की अनुमव सुमति विकस गई रे मे*०* ॥ ३॥ मिण्या तिमिर निवारण कारण शरद चिद्धिका दरस गई रे मे०॥ १॥ समृत चह् सूरीश्वर प्रणमत प्रमु पद पद्म सहनिशि गई रे में। ५ ॥ इति पदम्॥ ॥ दुमरी ॥ श्री मिजान पद मेट मई साज अयर प्रमोद मए सु मए स्री०। चा सक जिम घन पाप पान तें आत्म

कुर्मित कुटिखता नग्र गई रे मे०॥ १॥ विश्वरेन नृप नदन घदन तै कृतार्थ किये सु कीए श्री०॥१॥
तैसे भिव जन प्रभु दर्शण किर पर
म पीयूष पिये सो पिये श्री०॥२॥
परम चिदानंद चन मय मूरत निर
खत वृजिन गए सु गए श्री०॥३॥
श्रमृत चंद सूरि जिनवर कुं प्रणत
प्रगल्भ थए सु थए श्री०॥४॥
इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

अगर मगर कर गहन करण पर आय चले फिर सांवरिया अ०॥ १ तोर दई मेरी नव भव की प्रीत परम सुख सागरिया अ०॥ २॥ तेल चढी मुभ कुं क्रटकाई छाप च ढे रेवत गिरिया अ०॥ ३॥ मंजुल यंजुल कुज के अदर सहसा घन व्रत **आदरिया अ०॥ ४ ॥ तरण तारण** 

ममु समय सरण में सुर घर नर मु नि पर वरिया भ्राठ ॥ ५,॥ नाथ नि

५ २३०

रजन सुमति ट्रक पर अधिचल पद थी सनुशरिया घा ।। ६,॥ सुधा ग शी रवि जबुपति से पहिली राजुल गई शिव मविरिया भ्रा०॥७॥इति पदम् ॥

॥ पुन ॥ जिनवर घरने सरन सुमरन की रेखिये घट की गागरिया। अमल

कमख जिम घवल विमल सद्य गुण गण के प्रमुधागरिया जि० ॥ १

श्रमर फुमर नर निकर जिनद की

वंदत चित्त उजागरिया जि०॥ २ परम करम भर मरम चरम कर वर लीनी शिव नागरिया जि०॥ ३॥ अमृत चंद सुरिंद प्रणति कर मांगत शिव पुर डागरिया जि०॥ ४॥ ॥ इति पदं॥

॥ पुनः ॥

नव पद ध्यान धरें जो भविजन सो शिय पंथ सिधाते हैं न०। अरि इत उजवल है केवल घर कंजानन हुलसाते हैं लोका लोक प्रकाशक जिनवर सुर नर चरण लुभाते हैं १॥ अलख अमूरति सिद्ध अवस्था ग्रक्षय स्थिति सुख पाते हैं अमल ग्रमात्र अरुज परमातम शिव रम

#### ( २३२ )

णी सग राते हैं न०॥ २॥ श्री श्रा

चारज पाठक हित कर साधू चरण चित छाते हैं दर्शन ज्ञान चरण त प रूपी पुद्रमल सम कहाते हैं न०॥ ३॥ ए नवपद कु त्रिकरण सूचे ध्या न त्रिकाल लगाते हैं झविचल ध्यान धरत मविजन के मध संचित्त अध जाते हैं न० ॥ १॥ हिर हलधर सुर असुर पुरदर सिद्ध चक्र नित ध्याते हैं ए निधि पद के घरण स रण फु छछि सेवक निव चाइते 🎚 न०॥ ५॥ इति पदम् ॥

॥ पुन ॥
॥ पुन ॥

नेम पिया अरज मुणी जेहो ।
सेरे दरस की साह मुम्ते दुक दरशण

( २३३ )

दीजे हो ने० सवजादव मिल व्याहन आये देखत हीं तन मन हरखाये तोरण सें मति जाओ पिया कुल स गरो हसी जेहो ने० ॥ १ ॥ पसुवन देख देया दिल प्राई मो अवला कुं खडी क्रटकाई अैसी तुमकुं नाचिहये इनसाफ करीजे हो ने ।। २ ॥ स्राठ भवां लग संग में राखी वाही के प्र भु तुम हो साखी नोमें भव में नेम पिया मत दूर करीजे हो ने**० ॥३॥** यहोत कही है राजुल नारी प्रीतम जी नहि दिल में घारी सहियां के मिलने खातर अव संजम लीजे हो ने०॥ ४॥ इति पदम्॥ ा हुमरी॥

#### ( २३४ )

नेमि जिनद् पद् घदत भवि जन दुर्गति दुख न पावत है ने० 🏻 ॥ समुद्ध विजै शिवा देवि के नदन यदन सघ जग आवत है ने० २ 🛭 श्रवण पुकार सुणी पशु केरी सस स्थिण बंघ धुमावत है ने 🍱

३ ॥ नय मबकी प्रमुत्रीत न पाछी राजल कु क्टकायत है ने० 🛊 ४ 🏾 रच फेरी प्रभु सबम कारण सहसा धन कु ध्योधत है ने० 🖡 ५ 🖡

नेम राजछ दोनु मुक्ति सिघाए स घा सूरि गुण गायत है ने० भे ६ 1

इति पदम् ॥

॥ दुमरी ॥ सभव जिन सुमीत छगी है स०। सेनांगज प्रभु तात जितारी कांचन तन की ऋांति चंगी है सं० ॥ १ ॥ असे त्रिमुवन नायक चंदित कुमति कुनारी मेरी दूर भगी है संवा २॥ पाप तिमिर के निकर गए सब सु मति सखी मेरे चित्त जगी है सं०॥ ३ ॥ दीन दयाल कृपा निध साहिव श्रमृत सूरी शिव लील मंगी है सं० ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ख्याल ॥

तरसत जियरा दरसन कुं प्यारे देखुंगी दीदार शुख पाउंगी त०। चाहुं मैं सेवा तेरे चरन की प्यारे पूज २ हुलसाउंगी त०॥१॥संवर नंदन तुभ मुख देखत भव २ पाप ( २३६ ) 🔻

मिटाउगी त०॥ २॥ च्यारे निदा न तेरी सूरत उपर तन मन घन कु रयान करूगी त० ॥ ३ ॥ भतर जा मी तुम खिन स्थामी धीर देव

नहीं घ्याउगी त० ॥ ४ ॥ राम कई त कर जोरी प्रभु से देखत कृषि ह पटाउगी त० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुन ॥

बीर प्रभू की दोस्ती में मेरी च

मता सस्त्री मेहर यान मई रे घी०। **जाप नहीं आवे वोध पठावे** तेरी

सूरत पर कुरवान हुई रे वी० ॥ १

तीरच नायक एही अरज है दीजी

दरस बढ़ी घेर मई रे यी० ॥ २ ॥

सास दास की पूरण कीजे तेरे सर

णन में लपटाय रही रे घी०॥३॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

तेरी देही है बुद बुद पानी का नांम जपले पास दिल जानी का ते०। जब लग तेरे घट में पवन है द्रजा नहीं तुभा सांनी का नां०॥ 9 ॥ कौन भरोसे बैठ रहे हो म त कर मांन जवांनी का नां०॥२॥ जा दिन तनु से हंस उड़ै गा मोल रहा कोमी कांनीं का नां०॥ ni ३ n सुमन अधम कूं निज पद दीजे सुन लीजे अरज भवि प्रांणी का नां०॥ ४॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥

( २३८ ) प्रभु जी चु छाम्यो मेरो नेह स

खी रो प्राथ कैसे करि झूटे री म०। १ ॥ धिक धिक वाको जगमे जी षणा जपणा ममु जी से कटे री म०॥२॥ जी कोई मभु जी सुने ह करें तो शिव पुर को सुख छूटै

री मणा ३॥ सेवा राम गाठ रेष म की लगी जीत नहि कुठै री प्र॰ १ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुनः ॥

जालम जीगींडा स लगी मेरी जान वा जा०। कैन देस बसी तु

म जीगी खेली कीन चौगान है।

जा०॥ 🔊 ॥ आगम घट मे बासा

है तेरा खेलो स्थान चीमान वा जा॰

्॥ भले पधारे पावन कीजे जोगि ॥ जीवन प्रान वे। जा० ॥ ३॥ उगत जुगत अवधूत के आगे होय रही मंगल तान वे। जा०॥ ४॥ नाथ निरंजन जोगी के उपर तन मन करूं कुरबांन वे। जा०॥ ५॥ इति पदं॥

॥ पुन ॥

ए तन निपट गवार गरव नहीं कीज रे भूंठी काया भूंठी माया काई जों लख लीज वा ग०॥१॥ के किन सांभ सुहागरु जोबन के दिन में जग जीज वा ग०॥२॥ भूधर पल पल होत है भारी जो २ कांबलि भीज वा ग०॥३॥ इति ( 280 )

∦पुन∄

मन मूरख पछी इन मारग म

ति जायरे म०॥ १॥ कामनि तन कतार जहा है कुच परवत दुख दा

य रे म०॥ २॥ कामी किरात धरी तिह धानक सरवस छेत क्विनाय स्वाय खोयाय कीचङ से बैठे अर

राषण से राय रे म० ॥३॥ छीर श्रनेक छूटे इह पेमें कहा हो कीन यदाय भूघर कहै यह मारम होडो सो जिय शिव पुर जाय रे म० ॥

इति पदम्॥ 🛚 गजल 🖁 ध्यान में जिन के सदा संयठीन होना चाहिये ज्ञान गुरू ज्ञानी से

ले परवीन होना चाहिये राह संज म का पकड कल्याण की सूरत मि लै काल गफलत में सजन् नाहक् न खोनां चाहिये ध्या०॥ १ ॥ धर्म की खेती किया चाहै जमीन केंा साफ रख बीज समकित का इद्य में सच्चे सें बोनां चाहिये ध्या० ॥२ ॥ कायना मनकी सफल आनंद से पूरन भई अवतो शमता सेज पर सुख से लोनां चाहिये ॥ दास चुकी . श्रपनें घर आंगन में फूलेगा कलप भव थिती पक्रनेंसे मुक्ती फल सलीनां चाहिये ध्या०॥ ४॥ इति पदम्॥ ॥ संगीत ॥ सोई सुरन गाती संगाती सो०

## ( 282 )

संगीत गत घेई घेई ता ता घेइया नार्चे नाटक साधी सो०॥१॥धजा बे मुदग मार्वे घाषा किटता घाषा किंटसा घप मप धूनि जाती सो० 🛚 २ ॥ ता चिलाग चुन किट किट पि म फिट चिन्ना किट चिन्ना किट घा किट चिना किट ता चिन्ना किटता धासी सो० 🛭 ३ ॥ जमम समैं जिन जान झान सब शिखर धैल जाती मुरा सुरेंद्ध सब चले बाल मिल गा ती बजासी सावी ची० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ छायनी ॥ सुम तज कर राजुछ नार तजे सब चर रे में नमु नेम के पाम ग या गिरवर रे । मैं प्रीत पिया की कर के पल्ले लागी तुम त्याग चले वन खंड हुवे वैरागी अब राजुल सी सतवंति भाव से त्यागी तेरे घ्रांतर घंट में जोत ज्ञान की जागी अब रोती राजुल नार नैन भर २ रे मैं० १ ॥ मैं नॉह कीनी तकसीर चले क्यों कठे मेरे घर के कुटुंब परिवार च्यार दिस बूटे मैं जो रहूं घर मांहि जो यन जब लूटैं मैं चलूं पिया के साथ मीत क्यें। टूटै मैं नेम मिलन की आ स मिलुं क्यों कर रे मैं ।। २ ॥ में विनवूं वारंवार करो मन परसन मे रे खिर पर तुम सिरदार दीज्यो मो हे दरसन में सब सखियन को देख

( २४४ )छन्यो नित परसन मेरे भ्रायो नैन

में नीर छग्यो नित घरसन मेरे नेम चिना निह भ्रीर जगत मे घर रे

मैं । ३ ॥ मैं अग्डा क्षन्न कर जोम भुगो साहेडी मेरे जिन जी विना नहिं भीर जगत में वेडी प्रमु तारी राजुड नार मुगत में मेडी प्रमु नेम गये निरवाण करम सब ठेडी मु भरज करस जिन दास सुणा जिन

॥ पुन ॥ सबर नहीं है जग में पछ की सुकृत करणा होय सी कर छे कुण ज.जे कछ की स्व० । जब तन दी

स्ती है इह बस्ती काया महल की

वर रे मैं०॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

सासो सास समर हे साहिव आयु घटै तन की तारा मंडल रवी चं**ट** मा सर्वाह चला चल की दिवस च्यार को चमतकार है वीजलिया भल की ख०॥१॥ यह जग है सुपनें की माया ओस बूंद जल की बिनस जावतां वेर न लागे दुनियां जाय खल की हंसा या देही में जब लग खुसी है मंगल की हंसा छांड चले जब देही मही जंगल की खेंग्रे भ मन महावत तन चंचल हस्ती मस्ती है दिले की सदगुस अंकुश आन मिले जब सब बातें थल की मात पिता सुत भाई बंधव सब जग म तलब की कार्या माया नार सनेही

( २४६ ) यह तेरी कथ की ख०॥३॥ मूटक

पट कर माया जोडी करवाता क्छ की पाप की गाठ बंधी सिर तेरे कैसे होय हल की दया घरम साहि व का सुमिरन कहै बाता सत की राग द्वेष उपजत महि जिम कु वि

मती संस्पत की ख०॥ ४॥ इति पदम् ॥ भ पुन भ 'त किसी की सोटी ना कहिये **च**ल

चेतन प्रम उठ कर सपर्ने जिन मे दिर जई ये चरण जिल घर जी का

मेटो मव २ सचित पाप करम सम

वन मन से मेटो हे जान सुकृत की

जे जिन वर का गुण भज छीजे स

( २४७ )

मिकत अमृत रस पीजे लाभ जिने

भक्ती का लिहिये च०॥१॥ करो म

त मुख से बडाई तज तामस तन

मन सुमत के घर छाणा भाई

त मुख से बडाई तज तामस तन मन सुमत के घर छाणा भाई रीत से बोलो हे ज्यान रीत से बो हो आतम सुमता में तोहो मत भ रम पार का खोलो मान कर तन मन में रहिये च० ॥ २ ॥ जोबन दिन च्यार तणा संगी छंत समैं चे तन उठि चाल्यो काया पडी नंगी प्रीत सब टूटी हे० आउखा की ख रची पूटी चेतन से काया रूठी सुख दुख प्राप किया सिंहये च०॥३॥ जगत में रहना उदासी फरस्या में जिन राज कटी मेरी दुर्गति की फा

सी प्रजासय घषा है० जिन वर मुख पूनिम बदा जिन दास तुम्हा रा बदा नेरे इक जिन दरसण चहि ये हा रे मेरे इक जिन दर्शन चहिये घ०॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ पुन ॥ सुराण नर श्री जिन गुण गाना विकट कोट सकट भव छटवी तो

कु छघ जाना प्रमु से कर इक साना मोह जाछ विच है अति दुर्ग

गुण अनत पारस प्रमु जी के तार्ने चित देना कर्म कीच कछिपत भा तम गुण निरमल कर छेना भु०॥२

मिर्विकार प्रमु खिव निहारत निज

म तहा नहि उछमाना सु० ॥ १ ॥

( २४१ अनुभव वरना तज विभाव परिणति

पर संगे शुध परिणति धरना सु० निरुपाधिक भावे चेतन तें निज घर में रमणा इह पर भव दुख कारण जानत पर घर नहि भमना सु०॥ १॥ ग्रैसे ग्रातम शक्ति उलासे आतम गुण राजनां शुद्ध क्षमा क ल्याण परम पद संपद कुं भजनां॥ सु०॥ ५॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥ कुमति कलेसण नारि लगी क्युं

केडै चल सरक खड़ी रह दूर तुम्हे कु ण क्रेडै तू सुमती को भरमायो मुम्हे क्युं क्रोडी मेरो सदा शासती संगक्ति नक मै तोडी ॥ १ ॥ तुभा विन सू

( २५० ) नी सेम कहु कर जीदी। उठ चडी

इसारे सग<sup>र</sup> रही सुल पीढी पू मुद २ कुमति छासु छास सुरे च०॥ २ ॥ मेरी धनत काल की मी ति पठक महि पाठी। सुमता के ह श्यो सग मुक्ते क्यू ठाली तृ सुमता को सरदार सुनाव गाछी । तेरे दोनूं हीं हम भार गोरी छीर का छी तू इम कु ठेलै दूर सुमति कु ते

दै। च० ॥ ३ ॥ प्रांच कुमती की छछचायो रसी मा डिगियो । सुणि करें सूत्रकी बात चैंठी होय लगियी

चैतम दूरी कुमति सेम से मणि

यो । जिन राज भजन को ध्याम

हिया में जिंगयो । जिन दास फुम

ति की बात खोटी मत क्रेडे । घ० १॥ इतिपदम्॥

सरकजा कुमित नारि काली। तेरी संगतसे गइ लाली। सोबत मैं सु मता की ठाली। ख्रातमा तप में न हि जाली कुबुध नहि कुमता की ठाली आतमा निगोद की माली अचल पद जिन दास मांगे रखो प्रभु चरणो के पासे इति पदम्॥

॥ पुन्॥

चतुर नर मन को समभानां वि कट घाट पाखड जग सरवर ताकां लं ग जानां इसमें गोता निह खानां आ स पास रस्ता है खोटा जिस सें ट ल जानां च०॥१॥ मधु वध धर

( २५२ ) मिच्या जल भींदा अधिके उनमाना

पाप घरैती पकड डबोबे कुगुरु मु गगर दाना च० ॥ २ ॥ जल स्नारा छाति रोग वचारे राग होस माना निकट जाय जल पीवे सोही हीवे हैरा ना ॥ ३ ॥ कुर्घरम विषम उजद मा रग है मीये मरम छाना क्रीच मान

दोनु तस्कर मारी राक वहीत जाना घ० ॥ ४ ॥ सुबुध नाब सुगुरु खेब टिया इनके सम आना खरबी छारे

विमल भावना छीजो मन मामा 🖣 ०॥५॥ कुबुध नावहिमा भेरा 🖫 लाज करवाना देव कहे सुर गा सर षाछो सोई सायधाना घ० ॥ ६ ॥

भ इसि पदम् 😃

( २५३ )

॥ पुनः ॥

अरि सेरा दुख सतकर रे जननी नैं जाउंगी गिरनार दिक्षा होंगी भ व तरणी । खूब वरात जनाय व्याह न कूं आए नेम हरी तोरन से रथ फेर चले जिन पशुन पुकार सुनी ग्रा० ॥ १॥ करत करम को नाश नेम जि न कामनि शिव रमणी हमकें। क्यां .ह चले जग भींतर अब कैसी करणी **घ्रा०॥२॥ मात पिता सुत वहन** भाणजी करो कुशल सजनी अब रहणे की नांहि भद्ध में कहां नेम मिलनी श्र० ॥ ३ ॥ दुद्धर दुख तप वारह व्रत कर इदय क्षमा करणी पूरव पुन्य विभाव उदय से ए अ ( २५४ ) वसर करणी छा०॥ ४॥ मिध्या म

स मद पिया इलाहल बोर २ मरणी सयम दरसण ज्ञान चारित्रें मुगत वेल वरणी अ०॥ ५ इसि पदम् ॥ u पुन n नेम नाथ भेरी अरज मुणीर्ज मै ष्ट्र दासी चरणे। की तीरन प्राए फि र मत जावी सुम की सोगन यादव की ने० ॥ ९ ॥ जान छेई तुम आपा हन आए छारे सेना माघव की ह पम कोड यद जान में आए ए भ वसर नहि फिरणे की ने० ॥ २ 🗷 रप फेरी गिर घर कु घाए हम् 🕏

छाडि नव मय की मेरे रमाम विन श्याम सलूने अब मै नहि हो रहणे ( २५५ )

की ने० ॥ ३ ॥ सुण जननी मैं ताकुं

कहूं वूं देखी शोभा गिरवर की मा त पिता बधव कुं क्वांडी जास्यों सं में यादव की ने० ॥ ४ ॥ राजुल सुं दर तिहां सुं निकसी जाय चड़ी टूं कै गिरवर की मेरे श्याम ने देख छानंद में ततिखण पाये पडनें की ने ।। ५॥ हाथ जोड के विनवै राजल वात सुणो पिय मुभ्र घर की हम कुं काड चले निरधारी प्रव हूं पर सम सरणे की ने०॥६॥ नेम कहै तूं सुण हो राजछ विषया रस है विष घारी यह शंसार असार नि रंजन कर करणी तुम तिरणे की ने० ७॥ पिउ जी पहिली शंयम छीनें। इण

( २५६ ) सुकारक शरणे की सपस्या करणी

उत्तम कीनी हण मव पार उतरने की ने० ॥ ८ ॥ पिङ जी पहिला

राजल रानी पहुति हो परम पदवी में केवल होने नेम शिधाए एहवी शोभा जिन जी की ने० ॥ ९ ॥ प तर कपल नें कही लावणी उन सुका रज गरने की श्ररिहत ध्यान धरो दिल माहें फिर फेरा नहि फिरनें की नेठ ॥ १० ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुनः॥ हेरी माई मेरी नेम गयी गिर नार उसे जा फहना जाके दरग वि ना तरसे हमारे नवना है री माई मादव कि जान जोरावर शव पि

( ३५७ )

श्राइ पशुवन से लगायो हेत मुक्ते क्रिटकाई मोहे विलखी मेल महलूं में गये बन मांही सिख बैठी बीमा र मन कुं खंडी गम खाई मैं तोलूं डूंगर की स्रोट ठारें नहि रहना जा कै दरस बिनां तरसे हमारा नैनां हे० १ ॥ हेरी माई मोहे जावन दे वन मांहि ममत तज मेली मोहे विवु डावो है बोह जगत में रावैश हे० जग में काया कुमलाय काची जों कैरी तप जप संयम की लहूं सांक डी सेरी हे० इस महलों में नहि पा उं रती सुख चैनां जा०॥२॥ हे० नव भव को नवल निम नाथ पति मेरो वण रह्या हिया को हार सीस ( २५८ )

को सेहरो है० उन तजा सोलह वि णगार वियो धन हेरी मेरी सुणी नही पुकार कान को बहिरो मेरी पती बसै पर्वत में पहिनूं महि गै

ना जा०॥ ३ ॥ हे० कुगुरू से कि यो प्यापार गमायो गहनो तेरी म गति थिना मैं हुवो बहुत मति ही मो है०। किण हीन हुवा घरा उसी का सीना काम चेनु चर माहि दूर्च

का घीना है । मोहे दुखी काल का जीव कु दरग्रण देना जा० ॥ ४ म हे०। क्या मयो यहाँ अवस्जि जग त में आयो मेरे पल्ले लाग्यो पाप

सुजस नहि पायी युध हीण मयी मे

पो जीव न जिन गुण गामी जिम

तिम करले पार शरण तेरे छायो बोले मजलिस में मलगान की मैनां जा०॥५॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥ सुनियेरे यातां राव सदाशिव न ही चढ आणा घूलेंबे गढ पति इन का बड़ा अटंका मत क्रेडो तुमे उण देवा सु० ॥ ३ ॥ सकतावत चूंडावत योलत हमही नोकर उनही का हिं दूपति वाकुं शीश नमावे तीन भवन मांहे डंका सु० ॥२॥ खर्ग मृत्यु पा तालै बसते सुर नर वाकुं ध्यावत है इंद्र चंद्र मुति दर्शन आवे मनकी मोजा पावत है॥ ३॥ गया राज उनहीसे भावे निरधनीयां कुंधन दे

( २६० )

वे वाम खिलावत सुद्र लमका सदा
सुखी ज्यो नित ध्यावे सुठा। १ ४
तिरै जिहाज छेड़ समुद्ध मै रोग
निवारण भव भवका भूप भुगंगम
नाहर गजन चोरन घघन प्रारे दव
का सुठ ॥ ५ ॥ गिगढदे। गिगढदे।
पूसा घाजे दथो दिशा मा हैडका
भाउ सातिया जाण भुलाया मत य

सलावो गढ घका सुर ॥ ७॥ राणा जी के उमराव बोले मानत नहीं है एषाता पाकी कीची पेहज पावो महे नहीं आबा तुम साथे सुर ॥ ७॥

मूंछ मरोडी चढ फ्रिमिमानी जहर मस्या है निज रामे रियम दास क है साहिब मेरा देख तमासा फजरा ( २६१ )

मै सु०॥८॥ इति षदम्॥ ॥ पुनः॥

शांतिनाथ माहाराज देव देवन का जाके दरसन ते दुख दूर होय भविजन का जाके तात विश्व वि ण्यात विश्वसेन राया सति ऋचिरा देवीमात तनुज मन भाया जाके च रण सरण में हरिण चिन्ह मिसठा या वांकि सोहै धनुष चालीस हेम मय काया प्रभु गर्भथकी किये दूर रोग लोकन का शां०॥ १॥ प्रज् भोगबी पदवी दोय एक भव भारी तिहां चकी अरुप सुख जान भये

व्रत धारी जिन क्ट्र मस्थे सहु कर्म काष्ट दिये जारी तब प्रगटयो केव ( २६२ )
তना ण जगत हितकारी तिहा स

जिनका शा०॥ २ ॥ तिहा समव स रण श्वर आय स्वैचित छाई मये प्र तिहारज यसु मगट श्रविक जुल्सा ई तिहा मैठे जिन महाराज मुक्ति पदवाई यह परखदवारे महाण प्रेम अधीकाई तिहा सोहै स्वक्रप अनूप भूप त्रिभुवन का शा० ॥ ३ ॥ <sup>प्रमु</sup> जीजन मान प्रमाण द्याणि धनवर से मविचात्रक करिकै पान अधिक मन हरसे तिहा सप्तनगात्मक स्पा दबाद घुम दरसे तब गणधर मुनि महाराज बाणि गुण फरसे सुनि २

के यूकी नर नार कोटि देवन का

कल विषुध पति झाय पाय नमे

शां० ॥ ४ ॥ ईक लक्ष क्रस इम श्रायु पाली उक्करंगें ख्राये समेत शि खर प्रभु साथ लिये मुनि संगें तिहां श्रनसन करि गया नाथ मुक्ति चि त चंगे नित प्रणमें प्रमृत चंद्ध सूरि निर भंगे जपा श्वच्छ शांति गुण ल च्छि विघन टले तन का शॉ०॥ ५॥ इति पदम्॥ ॥ वसंत ॥ कित जइये क्या कहिये वृतांत

आली किस बिध छूटै मेरे मन की भांत कि ॥ १ ॥ कुक्क कहन सुणन की है न बात दिन २ क्की जै तन सिधिल गात कि ० ॥ २ ॥ चंचल चित कि चित धरे न धीर स्वाभी

( २६४ ) श्रिन कीन मिटावे पीर कि०॥३॥ मीत बिवेक तुम्हो सुजान हहा

जान सुजान क्यू हो अजान ट्रूपण अप्र काफु दे सुमित्र इहाँ कर्मन की गति है विचित्र कि ॥ ४॥ बीठे तथ बीर विचेक बान समता घर धीर न खेद प्रान प्रोसर पाए घर जावे कत चुनी छाल सहित खेठे ब

सत कि । । । । इति पदम् ॥
॥ पुन ॥
आपे सुग्य दायक रितु बसत ।
मिल खेलत फाग सुसाधु सत घढो
विवेक बासर ममान घट गङ्ग कुम
ति रजनी नीदान अति जोर गयी
जाडो अङ्गान तिहा मीह कप की

मिटी है घान आ०॥१॥ ज्ञान भानु को चढो है घाम ममता हिम गिर गल गयो है ठाम समता सरि ता को चढो है जोर वह चली सरि त सागर की छोर छा० ॥ २॥ उप शम मोर है ग्रंव सार नये पत्र भये वैराग भाड तिहां विरति वेल की नो बिथार मन मधुकर कीनो है गुंज सार आ०॥ ३॥ प्रगटी रुचि भूमि सुगंध व्याप शुभ मति कोकि ल कीनो अलाप उपयोग कुसुम फू लें सुगंध तिहां बहै निकट सरधान गंग स्रा० ॥ ४ ॥ या विधि उपज्यो है घट बसंत चुनि सुदित भए सु नि जन महंत तिजि गृह वास वन

( २६४ ) श्रिन कीन मिटाब्रे पीर कि०॥३॥ मीत बिबेक तुम हो सुजान कुहा

जान सुजान क्यू ही अजान टूबण अय काकु दे सुमित्र इहां कर्मन ही गति है विचित्र कि०॥-४॥, घोडे तब वीर विवेक वान समता घर धीर न खेद छान छोसर पाए धर आबे कत चुनी छाल सहित खेलैंब सत कि ।। ५॥ इति पदम्॥ ॥ पुन ॥ आये सुम्ब दायक रितु बसत्। मिल खेलत फाग सुसाधु सत घढी

षिवेक थासर ममान घट गङ्ग कुम ति रजनी नीदान अति जोर गयी जाडो अज्ञान तिहा मोह कप की ॥ पुनः ॥

्तुम ज्ञान विभो फूली वंसंत मन मधुकर सुख सों रसंत तु० ॥ १ ॥ दिन बडे भए बैराग भाव मिध्या मति रजनी को घटाव तु० ॥ २ ॥ बहु फूली फेली सुरुचि वेल ग्याता जन समता संग केल तु०॥३॥ द्मानत बानी पिक मधुर रूप सुर नर पशु आनंद घन सहरप तु०॥४॥ इति पदम्॥

॥ पुनः॥
कित जैये क्या कहिये वयांन तु
म जांन सुजान क्योहे। अयांन कि०
इह स्याद वाद कुल की मृजाद पर
घर पग घरनें क्या सवाद कि०॥१॥

( २६६ ) दियो है चित्त तिहा आय मिले स

तीसे मित्त साठ ॥ ५ ॥ निज रा क्ति सुद्दागनःसजि सिगारःच्छीःम हुँच सखी सग 'छिमे है' छार/तिहा समिकित केसर रज्यो है चीर समर गुष्ठाल-साम्नवः स्रवीर सायः॥ ६ ॥ पिचकारी परम समाधि। झान गुरु यचन राग घू पद झखान तिहा अ नष्ठद ध्वनि वाजत मृद्ग नव मेद मक्ति नाचत सुद्रग जा०॥७॥ यह विधि कर्म की कियो है नाउ क्क रहे सहज छन्मव विलाग ति हा हरख चद आतम प्रकारा परमा तम पद कीनो निवास आ० ॥८॥

ष्ट्रित प्रस्म ॥

ति मेलिरंग किं ा ३ ॥ उत काम कपट मद मोह मान इत केवल अ नुभव अमृत पान किं ॥ ४ ॥ अ ली कहैं सुमता उत दुंख प्रनंत इत खेलें आनंदघन वसंत किं ॥ ५ ॥ ईति पदम् ॥

🖫 ा पुनः ॥

मेरे हदय पदम प्रभु भूमर क्रप काया नगरी में आप भूप मे०॥१ ॥ पल पल आपन कुं जपति आप जोगी जन जपत हैं अजपा जाप मे०॥२॥ सोहं सोहं फिर हंस हं स आदम परमातम कोहि अंस निह चै नय याही ठीक ठांन व्यवहारें बाहिज रूप मान ने०॥३॥ ऋम ( 1966 )

भ्राटवेटी **भ्र**केटी हु उदास पें खिण

इकटोकः निहं अवासः अपने मुख भ्रपनी क्या प्रशस वरने जवः सोमा जातः वस किटा। २॥ चर २ नीकी एतो पमान जगः वादी कृत्स्या देत मान समसाय भीर चर भ्रान कर

मान समसाय भीर घर आंन कत जिह ज्ञान सार खेलत प्रसत कि० इति पदम्॥ ॥ पुनः॥

कित जाण मर्ते हो प्राणनाय इ त आप निहारो ने घरको साप कि०॥ १॥ उत माया काया कीन जात बोहे जह तू हैं खेतन जग बि स्थात कि०॥ २॥ उत करम मरम

विप बेलिसग इत प्रम निरम म

प निहार सुठ ॥ द्रा। इण विध खे लत काल अनंत लख चौरासी जी वा जंत अव तुम वांह गही भगवंत शुद्धः चेतन विजय विशे वसंत सु० ॥ **४८॥ इति पेदम्** ॥४ १७७६८ ०५६ मारक अर **॥ पुनः श**िक है। १ ३३ 😓 क्यूं प्रयोज प्रयानक प्राएःभोर् । कर महिर निजर ललनी की श्रीर क्यूंवर्पर भाव रूप छांधि यार तोर सुसुभाव उदै रिविकै सजीर क्यूं०॥ **े॥ अब**्सुद्ध रूप<sup>्</sup> गहि<sub>र</sub>के अनूप वरिये केवल कमला सरूप तवज्ञान सार पद तुम्त सक्रप पावी आतम परमात्म रूप क्यूं० ॥ २॥ इति पदम्॥ भारता स्वाहित्य

(२०००) यघन याच्योःतोष्ट्रःजीवातुमीमुगर्ते

होत यह शिव खदीय पदमाप्रमू के

गुण करित गोन कवि तराज हहत असय निधान मे० ॥१४ ॥ इतिपदम् ११ । शि ॥ पुनः ॥ ११ । ११ स्विधिनाय सुम देवे अनतासी मैं बोलू आज वसंत समकित शोमि स केसर रग सबर छाल गुलाल सुख ग सु०॥ १ ॥ कर पिसकारी करुणा जान आश्रव अवीर उदावो मान

आगम धुनि करिये शुमद गान ममु गुण गायने कुं रख सुवान सु० ॥ २ ॥ धीरज धप त्य याजस मृदग सा रिगम प धनी तान तरग नेम था , रणां नाटक सार सुमति ससीकु आ जब सें मैं जाण्यो जिन छानंत मे०॥ में ।। १ ॥ जाको जस परिमल है महंत मेरो मन मधुकर तिहां रुण रुणं त मे०॥ २॥ करुणा करि तारे ज गत जंत निज रस में राजे शुद्ध सं त मे०॥३॥ सुख दरसण ज्ञान सुक्ति वंत श्री गुण विलास शिव रमणि कंत में ।। ४ इति पदम्॥ ॥ पनः ॥ मन मोहन मेरे नेम जिनंद जिन राय म० । शिवा देवी नंदन सहु

॥ पुनः॥

मन मोहन मेरे नेम जिनंद जिन

राय म०। शिवा देवी नंदन सहु

जग बंदन समुद्ध विजे जी के नंद

ग्रद्भुत रूप स्वरूप ग्रनूपम कोटि

रवी अरु चढ़ म०॥१॥ आठ भ
वां लग संग में राखी नव में न दी

( २७२ )

ा राजी राष्ट्र**ा पुन स**म् धान्ती ह ीर स्यु<sup>.</sup>यात चतुर घर<sup>ः</sup> चितन्धटीर

इनः मीत पक्ष निह चलत जोरन्पुण फिन।कहै निहोरे हेत माहि न **प**ह हिस भीतम स्नाप चाहि वयु०॥ 🤊 🕷

इक हाथै तारी नहित्यजत जानत ष्यु खेंचत स्रत सत घरणी विमंघरको कांज राज को किर है जिह प्रती

इःज्ञान सार⊬खेलै घसत स्पु०#३# **ईसि पदम् । 🕆 🗁 🏗** ् । ॥॥ पुन ॥५ 🕫

मेरे हदच कमल फूल्यो वसत 🏾

समाज ध्यु०ी। २ ॥ पर घर में ध्या काढो सवाद जन में एती छीकाप वाद याते छापने घर चाल कताजि श्रांण जग्यो श्रंतर बसंत मा०॥ २ ॥ प्रव लेह लहर उपशम शरीर फूली फुल वारी गुण गंभीर मा०॥ ३ ॥ जिहां की जित समकित सरस पान क्रिकेये घुल रहि सुकल ध्यान मा०॥ ४॥ श्रैसे पूरण प्रमु जी के अंगनमाय अजिन भक्ति रमे जि ने वर सहाय मा० ॥ ५॥ इति पद्भू ॥ 🖅

॥ पुन : ॥

आतम श्रमुभव रस कथा प्याला पिया न जाय मत वाला तोढिहि परे निमता परे पचाय छ्वीले ला ल नरम कहे श्राली री गरम करत कहावात आ०॥१॥माके आगे मांमू ( २७४ )

जे छेह प्राण पियांरा नजान मेरा भ्रारज सुणी भरि नेइ स०॥२ 🖟 उमा ही मिलवा तणीसरे । उप्रजत है निसं दीस सी मन जाणें मांहरी

के जाणे जगदीस म०॥ ३ ॥ यादव मिल कर जान यना आए तोरण पास पञ्चवन पें करुणा करी राजु**ट** कीनी निरास मठ ॥ ४ ॥ मीवम

पहली राजुल पामी सुदर शिव नी वास समृत चद सूरी भार जपे पूरी यद्वित आस मर्शेष प्रविपदम् ॥

माई रग भर खेलें गे धमाल। हम मीत मिछे घ्राष्ट्र सेन छाछ मा०

जिहा जाई पापीयो सहेज भत इहा.

u बसत धमाछ #-

( २७७ )

रिये रे दमवा को क्रिकाव ज्ञान

पिचर को पकर के वारी मुगति ब

धू चित लाय हो० लेश्या मादल
भाव डफरे कोघ मान दोय ताल
पांच सुमति को अरगजो वारी न

भाव डफरे कोघ मान दोय ताल पांच सुमति को अरगजो वारी न व तत्व लेइ गुलाल हो० ॥ ३ ॥ असा साज बणाय के रे रिषभ देव गुण गाय श्री जिन चंद्र इम खेल तां वारी भव २ पातिक जाय हो० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ भैरवी होरी ॥

॥ भैरवी होरी ॥

यनि आया मा होरी का सिंगार
री सुरुचि समिकत बागा पहिर के
ज्ञान विमल गले हार री ब०॥१॥
प्रजु गुण श्रवण सोहै युग कुंडल

को कोई धरनन करत गवार अज

हु कपट के कोधरा हो कहा कि सरधा नार छ०॥२॥ ममता साट

परे रमें हो ओछी दे दिन रात छ ने। न देने। इन कथा हो भोर ही **आवत जात हु**० ॥ ३ ॥ कहे सरघा सुन सामिनी हो एती न कीजे खेद हेरे २ ममुध्यावही हो बदै आनद घन मेद छ०॥६ ॥ इति पदम् ॥ u घमाल u होरी खेलीये नर बहुरन औसो । दाव हो० । वया मिठाई रस मरी रे सप मेवा परधान शील प्राया णो अति मछो धारी सयम नागर

पान हो०॥ १।॥ समता केसर घो

न<sub>े</sub>भाव<sup>्</sup>यताई प्र० ॥ २ ॥ केसर कुसुम सुगंध सलिल भरि भरि पिच कारि चलाई रंग फेंाहार लसत बूंद नि सी स्थास पवन सने नाई प्र० ३॥ चमर दुरत मैं दंड गगन नें च पला जोत दुराई पास प्रभू गलमा ल सुरंगी सुर चांपक सी पाई प्र० ४ n नाचतः तान सुनावत गावत होरी को ढंग रचाई छोसर पाय धाय प्रभु पद तेल नमत गुलाव सदाई, प्रवाहित ॥ इति पदम्॥ ा होरी॥

रंग ल्याया वनाय सखी फट पट होरी पेलुं मैं आज अली चट पट र०॥१॥ पांच नार इक मंदिर अं

( 345 ) **माज्ञा मोढ शिर घार री वर्ण १२**४

मृदु गुण प्रवीर लिये मर भोरी च मता रग पिचकार री घ० ॥ ३ ॥ ममु गुण गान करे शुभ तार्ने मुख घोट जम कार री खा ॥ १ ॥ दास

चुनी फ्रेंसा साज बनाय के होरी पेंडे हरख अपार री घ०। १३५ ।। इति पद्भू ॥ 🗼

"। ।।होरी काफी N 🕕 🦵 ममु घर भाज अधिक क्रि काई देखी फागून बरखा आई मुवन म

विक जिन वर साहिय के घूम खुमार

मचाई प्र०॥ १ ॥ उस्त गुलाल खू

ए घन घदरा साज गमक गहराई सद तद पदत अधीर कुकुमा भीर ज मतीकी प्रीत पुरानी ज्ञानी ध्या नी जदुरइया रतन कहत नेमनाथ कृपा कर राजुल पंचमि गत पड्या हो० ॥ ३ ॥ इति पदम्

॥ पुनः ॥

श्रचरिज होरी आई रे लोको श्र चरिज होरी आईरे लाला अ० ला ल गुलाल उडत आटेकी एह मि थ्यात उडाई रे घ्रा०॥ १ ॥ पिचका रिन की भड़सी लगी है बाणी रस भर खाईरे अ० चंग मृदंग बाजत ख्यालन की अनहद नाद घुराई रे अ० ॥ २ ॥ वह मिण्या मत होरी गावत इह भवि जिन गुण गाईरे भ्र० काठ पंड की होरी जगाई इ ( २८० )

दर एक से एक घड़ी नट सटार ०॥ पाचे नार पचरग बनी है निस दि न मोसे करत खट पट र०॥ २ 🕱

एक होय तो पकड छे आउ पाचे। कु कैसे करूगठ पट र०॥४॥ चुकी प्रातम रगघटक छे प्रावे। पाची कु आज कक छच पथर० ॥

॥ पुने ॥ 🕠 होरी खेरी दो महचा देखी नेमी सरनें कान्हैया हो० खयी खंपेली

छीर केतकी सदाही फूली घन रहया

हो०॥ १ ॥ शीतल मद सुगध छ

हामण धजत धमार मनोहरिया रा

घा रुफमण सहु मिछ हरखित व्या

ह मनाबी देवरिया ही० ॥ २६॥ रा

( २८३ )

जे हे अघ मोचन तारक तारेश्वर शां०॥५॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

असो दाव मिलोरी लाल क्योंन खेलत होरी। मानव जन्म प्रमोल जगत में सो वहु पुन्य लहोरी ग्रब तो धार अध्यातम सेली आयु घट त थोरी थोरी वृथा नित विषय प गोरी अ०॥ १ ॥ सुमति सुरंग सुर् चि पिचकारी ज्ञान गुलाल सजोरी भट पट घाय कुमति कुलटा गृहि दिल मिल शिथिल करोरी खदाचेट फाग रचोरी श्रै०॥ २॥ शम दम साज बजाय सुघर नर प्रभुगुण गा य नचोरी सुजश गुलाव सुगंध प ( २८२ )

मद पानी जन मदिरा पीवत कोई मुह फेरे न माई रे अ० हानसार के ज्ञान नयन में अनुमेष सुरखी जा इ रे घा० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ म पुन ॥ शाति करो श्री शाति जिणे स र भवभय भीति हरी परमेश्वर शा० ॥ १ ॥ पूरन ब्रम्ह परम परमेष्ठी शि ष करता प्रभू जिन जगतेम्बर शा० ॥ ३ ॥ अछख निरजन देव प्रभाक र निरकार निरगुन घ्राख्वेसर शा० µ२॥ पुरसोत्तमं परमातम नायक जगसाथ जगदीश विसेसर शा०॥

१ ॥ दास चुनीकु निरमय सुख दी

ह कयु कर्म जलाई रे ॲ॰ ॥ ३॥

जे हे अघ मोचन तारक तारेश्वर शां०॥५॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥ असो दाव मिलोरी लाल क्योंन खेलत होरी। मानव जन्म अमोल जगत में सो वहु पुन्य लहोरी श्रव तो धार अध्यातम सेली आयु घट त थोरी थोरी वृथा नित विषय प गोरी औ० ॥ १ ॥ सुमति सुरंग सुर् चि पिचकारी ज्ञान गुलाल सजोरी भट पट धाय कुमति कुलटा गृहि दलि मलि शिथिल करोरी खदाचट फाग रचोरी भ्रै०॥२॥ शम दम साज वजाय सुघर नर प्रभुगुण गाः य नचोरी सुजश गुलाब सुगंघ प

( २८४ ) सारी निरगुण ध्यान घरीरी कहा

अल मस्त परोरी भौ० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुन ॥

सावरो सुख दाई जाकी हावि बरणी न जाई। श्री अश्वसेन बामा नदन की कीरति त्रिभुवन छाइ स मेत शिखर गिर महन प्रभुकी देख

दरस हरखाई हदय मेरी झति हुछ

साई सा०॥ १॥ आज हमारे सुर तरु मगटयो जाज जानद घघाई सीन मुषन को नायक निरप्यो प्रग टी पूर्व पुन्याइ सफल मेरी जनम कहाई सा० ॥ २ ॥ प्रमु के सरस दरस विन पाये मय २ मटक्वी में

( २८५ )

भाई अब तेरो चरण शरण चित चा हत बाल कहै गुण गाई प्रभू से ल गन लगाई सां०॥३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ नेमनाथ बर पायोरी सजनी ध न राजुल तेरो भागरी। पहली मैं पू जूं रिषभ जिनंदा जिण मोहे दियो हैं सुहाग री ने० सोनें को क्रुत्र ध कं शिर उपर गल मोतियन की मा लरी ने०॥ १॥ चंपा चंवेली दमना

क शिर उपर गल मातियन का मा लरी ने०॥ १॥ चंपा चंबेली दमना मरुष्ट्रा फूल चढाउं गुलाबरी ने० घूप दीप नैवेदा ख्रारती मुख बेालै जय जयकार री ने०॥ २॥ जयरं ग की प्रमु खरज वीनती भव २ दी ज्यो दीदार री ने०॥ इति पदम्॥ ( २८४ ) सारी निरगुण ध्यान घरीरी कहा

काल मस्त परोरी भ्रीणा ३ ॥ इति

॥ पुन ॥ सावरो सुख दाई जाकी कृषि यरणी न जाई। श्री ग्रम्बसेन मामा

पदम्॥

नदन की कीरति जिमुखन छाई स मेत शिखर जिर महन प्रमुकी देख दरस हरखाई हदय मेरो प्रति हुछ साई सार ॥ १ ॥ आज हमारे सुर

तरु प्रगटमो झाज झानंद बचाई तीन मुबन को नायक निरम्मो प्रग टी पूब पुन्याई सफ्छ मेरो जनम कहाई साठ ॥ २॥ प्रमु के सरस दरस बिन पाये मब २ मटक्यों में ा धरम जिनेसर राय होरी मन सुं षेलूं। तुम बिन अवर निहि कोई जिणसुं चित्त लगाय हा०॥ १॥ ज्ञान गुलाल लाल घट बादल कुम ति अवीर उडाय हो । । २ ॥ तन का डफ मनमृदग बजाउं रीभूं जिन गुण गाय है। ।। ३॥ समकित केस र चोर रंगाउं पहरी मन चितलाय हें। । ४ ॥ सुमति सखीं संग ली जे चेतन अविचल पेल मचाय हो। ॥ ५ ॥ इति पदम्॥ 🐪 🔧 🕾 💯 ॥ पुनः 📲 🚉

नेम निरंजन ध्यावा रे वन में तप कीनों। सब यादव मिल व्या हन आए पहरि जराब जरी नों रे ( २८६ )

े गमुन ॥ पायो नर अवतार होरी आतम पेछै । फिर निष्ठ औसी दाव मिलेगा छापा छाप निहार हो० लख चै। रासी रूप धनाये जीव नर्चे गति ष्यार हो०॥१॥ तन करताल धर्ज घट माहीं मन मादछ घोकार हो? धीरज घ्यान घरम की दफ छे गा वत झागम सार हो०॥२॥ ज्ञान गुछाछ, खाछ रग छागे समति ससी से प्यार हो०॥३॥ प्राथीर अव्रत कुमति क् डारे परमातम पद धार र्जीसा पेल मित्रक जन धारे चेतन उत्तरे पार हो०॥ ४॥ इति पदम् 😥 ॥ पुनः ॥

१४६ )

क सुजस्ता संयम वासन भर भीरी चि०॥ १॥ द्वादश भाव गुलाब सुं स्रेकर तप पिचकारी भर भोरी चिं आगम अगमे सुं धमाल सुनावत अति संबर गुण साम तुरी चि०॥ ७ रतन सागर कहै धन २ ते नर इण बिध खेलै जे होरी चि०॥८॥ ॥ इति पदम्॥ ॥ होरी ॥ सांवरी सुरत मन मोह लियो मे रो प्रभु जी से ध्यान लगाउं गी छ रे मै तो उनहीं से ध्यान लगावुंगी सां । मन बच काय करी एकांते जिन चरणे चित लावुंगी छरे मैतो प्रभु चरणें चित लावुंगी सां० ॥१॥ ( २८८ )

ष० कक्षन मुकुट हाधसे ताडे पशुवन पर चित दीना रे०। १। सहसायन की कुज गरिन में पच म्हावत छीने। जि नधर भूपण कहै भविजन से सहु ज

गर्मे जसछीना रे ब । । २ म इति

पदम् ॥ ॥ होरी ॥

चिदानद खेलें हारी सग लिये समता गोरी। भाष मृद्ग दया उप वाजत विनय विवेक धुनि जारी

चि०॥१॥ पाच सुमति जिहा भा म घजतहै छतियोग जुगति ताल

मजोरी चि०॥ २'॥ स्नेह विनय वै

राग अरगजा निर्मेल घन केसर घो

री चि०॥३॥ ज्ञान गुष्ठाव विवे

जन दरसण आनंद कारी भला हो प्रभु दरसण आनंद कारी हो स०। चोरासी लख योनी में भटकत पा यो नर अवतारी हो स० ॥ १ ॥ **मंगी माडी विषम पहाडी मैंतो पंथ** उलंग्यो भारी हो नदीयां नाला व हत विशालां फूल रही फुलवारी हो स०॥ २॥ प्रथम चरम वारम ति हां जिनवर नेम जिणंद ब्रम्ह चारी हो स० ॥ इन विन वीस जिणेसर गिर पर वरियां शिव पद नारी हो स्त्र ॥ वीस जिणंद प्रसिद्ध ज गत में त्रिभुवन जन हित कारी हो स०॥ मैहुं स्रनाथ नाथ मुक्र दीजे अविचल पद अविकारी हो स०॥ ( २९० )

अश्व सेन नदन सहु, ज़ग<sub>ा</sub>यदन सा मा के गुण गाउगी घरे मैं। सार ॥

२॥ समेत शिखर गिर भावे फरसी मुघ समकित उपजाउ गी सा० ।। ३ ॥ स्त्री चितामणि पास दरस,तें

परमानद पद पाउ गी सा० ॥ ४॥ छसमण पुर<sub>ं</sub>से श्री सघ हरेखें समेत शिखर चिंत छाउगी सा० ॥ ५ ॥ सयत अठारे घाणवें वरसे माघ ते

रस सुख-पाउगी सा० ॥ ६ ॥ श्री जिन चद गुरू सुपसाये नदी घई न गुण गाउँगी सा० ॥ ७॥ इसि

पव्म् ॥

॥ पुन ॥ समेत शिखर तुम बदो रे मवि ले वा०॥ अमृत चंद्ध सूरि कहै भ विजन परम ज्ञान धन समभ ले वा० जा०॥ ३॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

क्षांड दई लाखन में या जदुराज कुं लाज नही है क्वां० ॥ १ ॥ अरे लाला० व्याहन भ्राए सब सुख पाए क्रुपन कोडि लाये संग में अ० जा न बनाय जुगत सुं ख्राए उग्सेन ष्ट्रांगन में अ०॥ २॥ तोरण छाए मंगल गाए मूले पशु भाषण में अ० नव भव नेह निवार पलक में फेर चरे रथ क्रिन में अ० ॥ ३ ॥ कर्म भ्ररीनें दूर करण कुं व्रत लियो सह सा वन में घ्रा० केवल पाय भविक ( 484 )

४ ॥ सवत उगणीचे षोबीच वरसे जात्रा क्री जय कारी हो पोस सुदी पूर्निम सुंभ दिवसे राम कहत बिंड

हारी ही स०॥ ५॥ इति पदम्॥ ् ॥ पुनः ॥ धरम जिनद पद मज़ वाबरे जासे होरी पेछन मग पहहें घा०। प्रमु पद कज मकरद पान ते समि त अच मल तिज ही या० जा० 🛚 ९ ॥ श्री जिन वर याणी चित मा णी विपय विकार धरज छे घा० जा० ॥ फ्रोधा दिक विप अरि मय दुख ताजि जिन धर्म तत्व कु स्जिए

वाञ्काठ ॥ २ ॥ ज्ञानादिक गुण है घट झतर अनुमब करि के समफ जाकी भव्य कुमुद विकसायोरी स्त्र० ३ ॥ कहन सकै गुण वासव सुरगुरु विधिना ध्यान लगायोरी ग्र०। ज्यो ति स्वरूप ग्ररूपी अहं भक्त वक्रल मन भाषोरी अ०॥ १॥ संवत सय उगणीस अठोत्तर सुदि फागुण मन लायोरी अ० द्वितीया दिवसे स्त्री जिन गावत रिषि राम चंद बंदे पा योरी अ०॥ ५॥ इति प्रदम्॥ ॥ धूरिया सोरठ मिश्रित ॥ , , पर चर खेलत मेरो पिया कबु वरजो नहि येहनें भईया प०॥ नक टोरिन के संग नचत हो तत तत तत ता थेइया चंग वजावे गारी गावे कैांन बनाव बन्यो दइया प०॥

( २९४ ) जन<sup>†</sup>तारे पहुचे मुक्तिः नगर में अ०

१ ॥ चद्कहैं कर जोड़ि नेम नें रा स्रो सुमरी शरण में अ० इति पदम् ॥ ॥ पुन ॥

ं जीनद पायों री चद्ध मेजु पद पकज देख में जा०। काशी देश पु री चद्धायती माता लखमणा जायों

री उजाल वर्ण शरीर अनोपम सुर मिल मंगल गायोरी आ० ॥ १ ॥ सञ्चित सुख परि पूर्ण मनोहर योगी ध्यान में ध्यायोरी छ० । छलख नि

रजन प्रगुरू छघू फुनि आतम ज्ञान सहायोरी घा ॥२॥ त्रिमुखन चहा लोक चहुमा चरण शरण में ज्ञायो री अ०। दोउ पक्ष में चढती कला 796

ष्याल सूं भा०॥ २॥ इति पदम्॥

॥ होरी ॥ ं साहव ग्राद जिणंद चंद मोहे अ पनें रंग में रंग दे रे मो० ज्ञान गू लाल विवेक अरगजा शमता केसर रग दे रे सा० ॥ १॥ मन वच काय

लगाय सुरत से ज्ञान हिये विच भर

देरे सा० ॥ २ ॥ चैन विजय कर जोंडि के बिनवें चरण कमल चित

धर दे रे साठ ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पुनः ॥ तज राजुल भयो घ्रनुरागी देखों

प्रविह चढो है गिर नारी त**ा** गिर पर जाय महा व्रत लीनों काटे कर्म के दुख भारी त० ॥ १ ॥ समव श १ ॥ स्वर ध्यसवारी चमर धुहारी स्वा

म घदन सिर पर घरिया बिष्ठा रगरी जूती पघरी छाज मरत हू मैं महर्या प०॥ २॥ इह सब चेटा पर परिणत की निज घर में रिमहें मविया भातम सीस गुरू ही खेरी ज्ञान सार जिन में मिलिया पo N ३ ॥ इति पदा n होरी काफी ॥ माई मति खड़ै तू माया रग गु खाछ मूं मा० माय गुछाछ गिरन ते

मूदी आस अनते काल सू भा०॥१ जल विवेक भर रुचि विचकारी छि रके सुमति सुचाल सूं भा० उघरत ज्ञान नयन तें खेले ज्ञान सार निज टिक उठ सुमति सखी फटरंग है च टक हो०॥ १॥ शील सिंगार पहेर संत बागा लोड असत मेटो मन की मटक हो० ॥ २ ॥ खेलै फाग समिक त शुर्घ घर के घरही के सब जंजाल पटक हो 🔊 ॥ ३॥ ज्ञान गुलाल लगा य सुरत सुं प्रभु पद पकज में जा अटक हो ०॥ १॥ सुभ मन की पि चकारि हाथ ले छासुभ करम तक मार सटक हो० ॥५॥ चुन्नी निज आतम रग में षेलै देख सुचर की छन्छि ल टक हो । । ६ ईति पदम् ॥ ः ॥ पुनः ॥

होरी आई तू समता कूं भजले भटक पर गुण की संग ते अलग प ( २९८ )

, न्या **पुनः ॥** १ ।

॥ पुनः ॥ 📒 🔠 होरी आई सुन्बैठी है क्या वे स

रण आको इस रच्यो है की बरणे शोमा सारी तला। चैन विजय कर

जोद्धिके विनर्वे भ्रीते नेम चरण की पिलहारी त० ॥ २ ॥ इति पदम् #

~ मेरो परम **सनेही पास**-कुमर मी

कु याद झाषत हैं बार २ में ।। १ ।।

माप्रतेन धामा जी के नव्न भव जल

थी मीहे तार तार मे०॥ २॥ घडि २ पछ २ ह्यान धरत हू येही जगत

में सार २ मे० ॥ ३ ॥ में तुम चरण

शरण लपटो हू प्रयोर करे गुण घार

घार मे० ॥ १ ॥ इति पठम् ॥

विरहा नंत अति दुसह पिया विन कैन बुकावे री मे० कै०॥ २॥ सुमति संग ले अनुभो आये सव प रठ सुनावे री अ० ज्ञानसार स्यारी दो हिल मिल सोरठ गावे री मे० कै०॥ ३॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः॥

चेतन षेलैं होली इस काया नग र में चे० चेतन राय सुमित पट राणी रंग रमें अति हित आणीं इ० शम ता दिवान बड़ो जस आगे बिनय सदा सुत जाणी इ०॥ १॥ मोह म हीपति बीजी राजा कुमित कही त सु नारी इ० मान दिवान लोभ ज सु आगे राग केसरी सुत भारी इ० ( 300 )

टकं हो०ः। परिःहर् मनः स्परकी 🔻 चछता निजं गुण कु पहिचान सटक हो । १ ॥ निस दिन जिनवर के गुण गावी बिपयः कसाय की छीम **घ**टक हो० ॥ २ ॥ सरघा शीयल सं तीस सजम घर आगम धमत पीवी गटक हो०॥३॥ कहत संबोर स

मति सिल संगे होरी पेलो जिन राज निकट हो०॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ होरी सोस्ठ ॥ **अरी मैं कैसे मनाव री मेरी पिमा** 

पर सग रमत है कि जीतिन सगरी न रग रमता मोहे न बुछावे री मे०

कै०॥ १॥ हाहाकर संखि,पैमा

परत हू पीय मिलावे री अरी कोई°

विरहा नंल अति दुसह पिया विन कान बुमावे री मे० कै०॥ २॥ सुमति संग है, ऋनुभी आये सव प रठ सुनावेरी अ० ज्ञानसार स्यारी दो हिल मिल सोरठ गावे री मे० कै० ॥ ३ ॥ ईति पदम् ॥ 😕 ॥ पुनः ॥

चेतन षेलैं होली इस काया नग र में चेठ चेतन राय सुमति पट राणी रंग रमें अति हित प्राणीं इ० शस ता दिवान बडो जस आगे बिनय सदा सुत जाणी इ०॥ १॥ मोह म हीपति वीजी राजा कुमति कही त सु नारी इ॰ मांन दिवान लोभ ज

सु आगे राग केसरी सुत भारी इं०

308

र निर्मित्तरा**धुनिः स**रग्रहना <sup>7</sup> होरी खेलत<sup>्</sup>नेम चित घारी हो०

हारी पेछर्त पहुचे बाग मे तिहा फू खि रही है। फुछवारी हो*ा । अ*ं॥

गापिन सहित कुरण तिहा छाये राग'छाछापत है मारी∃हा≎ बाज त ताल मदग तबूर हैंक बीणा बेणु

सितारी है। ०॥ २॥ ब्रज गारी मिछ २ भर भोरी अधीर प्रनेक उद्घारी हा० श्रीसो प्रभु जी की पेल देख के सवल इरख नर नारी हो । । ३ ॥ ईति पद

ा। पुन ॥ ज्ञान ती अजह न पायो<sub>ं</sub> मोकु जैसो भेद यतायो । एता दिन दिल

में पूजा नित घेद की छार्य में पायो

पण प्रभु मुखसे अर्थ सुन्यो जब सोई फ्रर्थ ठरायो ज्ञा० ॥ १ ॥ ओहि अर्थ ओहि अक्षर में पणमें कबहून पायो केवल ज्ञान विना सब ग्रीसो भूठ को सांच ठरायो ज्ञा०॥ २ ॥ इ द भूति आदि सवहीं को संशय तिमिर हरायो हाथ जोड के प्रभुजी के स्ना गे विनय सु शीस नमायो **ज्ञान**० ३॥ इति पदम्॥ -

॥ होसी ॥

मधुबन में जाय मची होरी म०। सिरि संघ सदा खेलें होरी म०॥ १॥ ज्ञान गुलाल अवीर उडावी समता केसर रंग घोली म०॥ २॥ अमृत रूप धरम जिनवर को शुद्ध क्षमा ( ३०६ ) स्टहै कर जोडो स०॥३॥ इति

पदम् ॥
॥ पुनः ॥

समेत शिखर जी को दरसन कर

कै आनद अधिक उक्काह री स०। जिहा तीर्थ कर बीसु ही सीघा दिन दिन अधिक बधाव री स०॥१॥ च्यार निकास देवता मिछ के माव

ना अधिक माय री स० ॥ २ ॥ से व करी तुम भाव घरी नें पातिक दूर पुछाव री चित में हर्ष घरी प्रमु जी के क्षमा समुद्ध गुण गाव री स०

जा के क्षमा समुद्ध गुण गावर। च० ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीचे खेलत होरी मामिजी के दर बार सुर नर इंद्र प्रमुख मिल आए इंद्याणी पर वार औठ ॥१॥ नाभि नरेसर जुवन दिनेसर सरुदेवी मात मल्हार संब मिल रंग वनाय खेलत है नगरी बिनीता बार फ्रैं०॥ २॥ ताल कंसाल पखाल बेखावत गावत फाग श्रीकार भर पिदकारी अति मनुहारी क्रिरकत रिषम कुमार औ० ३ ॥ गोरी गुलाल उडावत है सिख नाचत इंद्र की नार गहर कसूंवा पीवत हरखत गल फूलन को हार औ०॥ ४॥ तुम प्रभु तीन भुवन के नायक प्रतपो प्रभु चिर काल सेवक की प्रभु याही घ्रारज है भव जल पार उतार श्रै०॥ ५॥ इति पदम्॥

( ३०८ )

॥ पुन ॥ (१८) रग मच्यो जिन द्वार चलो खेलि ये होरी कनक कटोरी केसर घोरी

पूजी बिविध प्रकार जिं० ॥ १ ॥ कृष्णागर की धूप घटत है। परिमल मह के प्रपार जिं० ॥ २ ॥ लाल गु खाल प्रवीर उदायत गावत फाग

श्री कार जि॰ ॥ ३॥ ताल मृदग बोणा श्रमी बाजै भेरी भूगल की भण कार जि॰ ॥ १॥ सत सबे मि

भण कार जि०॥ १॥ सत स्थान छ घमाछ सुनाबत गावै मगछ पार जि०॥ ५॥ रतन सागर प्रमु भाव

ाजि ॥ ५ ॥ रतन सागर प्रमु माप ना मात्री मुख घोछै जय कार ॥६ ॥ ईति पदम् ॥

इ।तपद्म्॥ ॥पुन॥

ं लागी मेरी प्रीत जिनेसर सुं हे० परमेसर सुं ला०। फागुन मांस घ्र ठाई महोक्रव पूजा लावे घर घर सुं केसर चंदन भरीरे कटोरी जतनें पूजे जिन करसुं ला० ॥ २ ॥ गा वत गीत धमाल सुरंगी'अधिकी ता न मधुर स्वर सुं ठा०॥३॥ ठाल गुलाल की धूम मचावत पिचकारी भर केसर सुं ला० ॥ ४ ॥ सुर नर भूप यही नित चाहै प्रभु के चरण क्रमल फर सुं ला० ॥ ५ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ सांवरे से कहियो मोरी सां०।

सांवरे से कहियों मोरी सां०। यह रितु मास फांगुण मेरी सहियां मत मेरे वैर पडोरी मेरो पिया मेरो

( 390 ) मन हरे लीनो छाध मैं कैसी करूरी धीर नाही जीव घरे री साए ॥ १ ॥

मव प्रेम पियारी कुरग वसन सुणि

क्युरच फेस्बो मी सिर कलक चढे री सबी सुम जाय कही री सा० म २॥ सब संखि फाग पेछत मेरी स जनी मी प्रभु छाइ गयोरी सजम रग रगू मेरी सजनी मुक्ति सखी से मि ष्ट्र री ससी गिर नार घडो री सा०

जाय सखी सममाय कही री नव

३॥ संख्यिन सग गई प्रमु चरणें चारित्र छे हुछसानी छहि केवछ ग्रि व पुर कु पोहची जैसी राजुछ रानी

ससी देखी भुजस छह्यी री सा० ॥

४ n नेमि जिनेश्वर चरण कमछ में

मनमेरो अटक रह्योरी राम चंद प्रति दिन समरत आवा गमन मिटै री मैं सरण तिहारि लहूं री सां०॥ ५॥ ईति पदम्॥ ॥ होरी भैरो॥

आज भविक जन होरी खेलै ज्ञा न गुलाल सुहायो है। कर पिचकारी करुना कीन्ही शमता रंग भराया है आ०॥ १ ॥ शील सुरंगी चीर वि राजै तन मन ध्यान लगाया है ध प मप घां घां किट मादल बोलै रि म भिम ताल वजाया है ग्रा०॥ २ तन नन तूम् तन नन् आलापें सा री गम प घ नी गाया है घन नन घूम् घुघरू वाज़ै थूंगि थन थेई न ( ३९२ )

त्य मचाया है आ०॥३॥ जिनम दिर में इण विध होरी सुमति सखी सग छाया है सुद्ध चेतना अनुमव बाहे भीसा पेछ चताया है आए ।

४ ॥ इति पदम् ॥ ध होसी ॥ किन दारी पिषकारी रे मैंतो सा

री मीज गई। घोषा खदन अवर **घरगजा केसर की छिवि न्यारी** रे

मै०॥ १॥ बस्तिस सहस्र गोपी मि छ पेछत बासु देवकी नारीरे मे० २॥ नेम कुमर कु मनावन चाली

घोछत मोर्टी घारीरे मे०॥३॥न वल कहे धीचे नेमकुमर सु हसि ह सि देत है तारी रे मैं । । हाति

सुध लीजे नेम कुमर मेरी सु०। छपन कोट यादव संग लीये व्याह न काज कीए देरी सु०॥ १ ॥ पसु वन की करूणा करि स्वामी तुम ते। रण सुं रथ फेरी सु०। हम को क्वांड चले गिर नारी प्रभु तुम मुक्ति चघू हेरी सु०॥ २॥ बिन अवगुण प्रभु केह न दीजै हूं नारी आठ भवां के री सु०। नव में प्रीत तजो मत प्यारे हम संग न क्वांडूं अब तेरी सु० ३ ॥ राजुल के पिय नेम जिनंदा अविचल सुख दीजे हे री सु॰ । सुद्ध चेतना सुसरन कीजे मन बंक्तित फल पावे री सु० ॥ ४ ॥ इति पद्म् ॥ ॥ पुनः ॥

( ३१४ ) ंमेरा नेम पिया पर देश हारी नानापेषु में । जो मैं औसी जाण

सी रे तज़री तारण छाय ता निश

पति करती नहीं रे फरती और उ पाय हाणा १ ॥ सम चिस्तमन मिछ एकठी रे जावा मुक्त पिउ पास रा जुल करी गारही बारी ये किम की हो निरास हाणा २ ॥ मैं उग्रेमें घर नदनी रे सुम यादव कुछ मान नह निजर सुजसे मिछो बारी जान

र्ने हों पण रे आय मिले मुक्त मी स खिण २ चितमा सामरे वारी नव मख के री प्रीत है। ०॥ १॥ रेवत गिर पर कामिनी रे पे। हची निज पिउ

करू कुरवान हेा० ॥ ३ ॥ सहज स

पास संजम ले मुगतें गई वारी ज्ञान सफल ग्रर दास हो। ॥ ५॥ इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

साधो भाई निज रंग चटक छे ग्राइये इक रंग रंग मचइये घोल २ अमृत रस पी पी सुख छ्रानंद उप जइये सा०॥ २॥ निर्मलता छानं द लहर में ज्ञान गुलाल लगइये सुद्ध समाज सुरु चि रंग ढंग से शमता रंग वरखइये सा० ॥ २ ॥ धूम धमाल-सुचाल हारी में रंग से रंग मिलइये सा०॥३॥ पिचकारी भर ध्यान सुरंग की सन्मुख ताक लगइये सा०. ॥ ३ ॥ अविचल ठाठ मिला संपूरन

( ३१६ ) मुख की सान सुनइये सॉ०॥ सि

द अमेद गीत ध्रुपद का दास च् नी नित गड़ये सा० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

ii कालिगहा होरी ii कुन खेले सीसू होरीरे सँग लागोई स्रावे कुन्छ। अपने जो स्रपने मदिर र्से जो निकसी कोई सावरी कोई गो

रीरे स० घोवा चंदन भवर अरग जा केंसर गागर घोरीरे स० भर पि षेकारी मुख पर दारी भीजगई तन

सारीरे संग० जानद घन प्रमु रसम रि मूरति ज्ञानद रहि धा भोरीरे संग् ॥ ईति पद्म्॥ n पुन n

मत क्रोंडी म्हानुं युंहीरे कोई चूक बतावी अबीर गुलाल भावसे रमता हमसुं काहे नहीं मिलियो रेम०॥१॥ वहुत हठांसुं घाह रचायी जीव दे खंदियां आणीरे रथफेरी प्रभुजी घ र फ्राएँ चंढियो गढे गिरनारी रे म० ॥ २ ॥ राजुल उभी विनंती करे हे ्एक बार फिर जोवो रे नेम राजुल मिल मुगति सिंधाये पहेली राजुल नारी रे मं०॥ ३॥ इति पदम्॥ ॥ पुन ॥

जय बोलो पास जिनेसर की ज० मस्तक मुगठ सोहै मनमोहन अंगि या सोहै केंसर की ज०॥ १॥ त्रिभु वन ज्योति प्रखंडित तिनकी श्याम

## ( ३१८ )

घटा जैसी जलघर की जिल्हा र ॥ २॥ कमठ उद्दाम वाय जू घादल जीत करी झपनें घरकी जिल्हा २॥ बाल पनें में छद्मुत झानी करुणा कीनीं

विष घर की जिल्हा । ११ ॥ अष्ट क र्म दल समल स्वपाये स्त्रीण चढे

वा शिवपुर की जिल्ला ५ ॥ माता भामा उदर जिल जायो राणी श्रम्ब चेन नरेचर की जिल्ला ६ ॥ कही जिल चट मेरे प्रभापारण जैसी छा

जिन चद मेरे प्रभु पारश जैसी हा या सुर तरु की ज० ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

॥ पुनः ॥ मन लागी मेरी नाघ निरं<sup>जन</sup> समन लागी मेरी०। निरंजनसु हो भ रि दल भंजन सूं मन० जोतीजोति माहें जोत विराजे योगी जाप जपे जिन सूं म० १॥ रात दिवस दिल लाग रह्यो है जगनायक जग वंदण सूं म० जनम मरण दुख दूर निवारो अ रज कह अरि गंजन सूं मन०॥ २॥ इति पदस्

॥ पुनः ॥

नेस श्याम से कहियो मेरी सांव रे से कहियो मेरी ने०॥ समुद्ध वि जय शिवा देवी के नंदन यादव कुल उदयो री तेज पुंज तन सब प्रति रूडो कित गयो मो चित चोरी अ रज नांही लीनी मोरी ने०॥ १॥ व्याहन प्राये मेरे मन भाये ल्याये ( ३२० ) यह दल जोरी तोरन से स्प फीर

दियो है तज गये गिर की छोरी मदन महा रिपु तीरी ने०॥ २ म दीन दयाल फहावत हैं प्रमु जैसे क

ठिन कठोरी शिव कामिनि से हेत कियो है दे पशुवन शिर जोरी नव भव प्रीत हि तौरी ने०॥३॥ व्या कुछ पई दरश बिन देखे रहिये स न्मुख मोरी कमछनेन राजेमित स स्वियन विनति करत कर जोरी ग

पदम्॥
॥ होरी भैरवी॥
अरे मन प्रमु चरणन छग स्वानें
फाग खेछन दिन नगिचानें अ०।

ही है मुक्तिनें होरी ने ।। १॥ इति

फागुन में इक रंग बनावे ते नर धन्य वखानें अ०॥१॥ चंचल मन थिर ता में ले आवे निज आतम गुण जानें अवसर आय मिल्यो भागन तें शुध समकित मन आनें अ०॥२॥ प्रभु गुन चीत करे मन सुकृत भव वंधन सुरकानें दास चुनी शमता रं ग रचकर जनम सफलकर माने अ? ३॥ इति पदम्॥

॥ होरी ॥

जय बोलो रिषम जिनेश्वर की। जनम अयोध्या माता मरु देवा ना भि नंदन जगतेश्वर की ज०॥१॥ धनुष पांचसे काया जिनकी लंकन वषभ धरेश्वर की ज०॥ २॥ लख ( ३२२ )

चीरासी पूरव मामू कुछ इक्षाकु क रेम्बर की जिला ३ ॥ दास चुकी प्रमु सेवा चाहै तारन तरन तारेम्बर की जिला ४ ॥ इति पदम् ॥

> n पुन n मेरे प्रमुखे आज छगन छागी श

मता जाग कुमति भागी मै०॥ 9 सुमति सखी मिछ मगछ गावे पिय के गछ मे कर द्वारी मे०॥ २॥ ज्ञा न गुष्ठाछ अधीर उमाबे रग भर मारी पिचकारी मे०॥ ३॥ स्वामी सखी सग हिछ मिछ खेलै दास चुनी जावे विछ हारी मे०॥ ४॥ इति पदम्॥

॥ पुन ॥

होरी खेलै वामा जूके नंद आतम रंग सूं। ज्ञान गुलाल संयम भर भी री भाव वसन धरि छंग हो०॥१॥ छारुभ करम मल सकल धुवानें ध्या न गग जल संग हो०॥२॥ दास चुनी जग नाथकी शोभा निरख ह रख मन रग हो०॥३ इति पदं॥ ॥ पुनः॥

॥ पुनः॥
यादव मन भेरी हरितयो रे या
द०। सजम हूती कान लगी जब शिव
नारी पर चित दियो रे याद०॥१॥
तोरण सें रथ फेर चले हो नव मव
नेह ख़लग कियो रे या०॥२॥ मु
म कुं कांड गिरनार सिघाए नेम जि
नंद तुम कहा कियोरे या०॥३॥

## 🕻 ३२४ 🤈

सुम हो तीन भवन के स्वामी सुर नर कहै तुम चिर जिवो रे या० ॥ ४ ॥ बार २ मेरी बदना हुच ज्यो चद फहै मन हरिसयो रे या । ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ पुनः ॥ केवल वाले की लटक मेरे मन घटकी के० सिंह सेन सुत सक्छ गु णाकर सद्य जार्ने सब के घटकी के० १ ॥ जन्म जरा मरणादि रूपनी ज ग माया सगली पटकी कें० ॥ २ ॥

एते काछ स्वामी जीग बिना मैं ए कछी घर २ में मटकी नायक छाय क अनत जिनद घर नाम सुनत च र पड छिटकी फे० ॥ ३ ॥ सघ सूर त से खट पट कर के कुमति प्रली भट पट सटकी होर धर्म की विमल चेतना सुयसा सुत पट तें अटकी के ५॥ इति पदम् ॥ होरी ॥ श्राए हो काना रूम भूम०। वं दो भवियण बार २ नर भव न मिल तु हैं सार २ घ्रां० । चंद्ध पुरी में चंद्र जिनेश्वर चरण कमल सुख कार कार बं० ॥ ९ ॥ मन बच काय करी जे प्रणमें भव जल उतरत पार पार ब०॥ २॥ ध्यायक ध्येय रूप होवें बिन में महिमा अनंत अपार पार वं० ॥ ३ ॥ कीरत येह सुणी मैं प्रवर्णे श्रायो तारक तार २ वं०॥ ४॥ मह

( ३२६ ) सेन कुछाबर चद्ध प्रतापी जिनवर

जगदा घार २ घ० ॥ ५ इति पदम् ॥ ष पुन ॥ छाज चाछो री सखी गिरि मेट न कु ढिबि देखन कु सघन कर्म दल

मेटन कु भा०। घीस ट्रक पर घीस जिनेसर सीधे जग जन तारन कु। आ०॥१ पस्कज चिन्ह घरे गिरि

उपर भच्य जीव प्रति योधन कु छा० २ ॥ निरमछ नीर सघन वन रोजी

देखि प्रमोद घरे मन कु आ० ॥३॥ चातक केकि मधुर आलार्पे स्तवत

गुणी जन जिन गुण कू आ० ॥

१ ॥ इराय रही महिमा त्रिमुवन में कहेन सके कोई धरणन कु प्रा०॥

## ( ३२७ )

५॥ नगराज सुसीस चरण का सेवक याचक बंक्तित पावन कुं आ०॥६॥ इति पदम्॥

ा पुनः॥

घर आए चिदानंद कंत होरी मैं खेलूं गी घ०। सिसिर मिध्यात गई और ग्राई काल की लिच्च वसंत हेा०॥१॥ श्रानंद जल श्रनुभव पिचकारी छिडकूं नीकी भांत ख्राज वियोग कुमति सैातिन के हमरे ह रख आनंद हो०॥२॥ पिया संग खेलन कुं हम बहुधा तरसी काल ऋनं त हरख चंद सोही धन जाके सुमति पिया के संग हो। ॥ इतिपदम्॥ ॥ पुन ॥

( ३२८ )

मुनि सुव्रत जिन राया रे होरी सुघ मन पेछै मु०। सीछ आभूपण प्रमा बिराजी सुमति सक्षी चित छाया

रे हो। । १ ॥ कर पिचकारी करुणा छीनी सुमता रग मराया रे हा० । २ ॥ ज्ञान गुलाब सरस रग लागे 🥞 मति अधीर उड़ाया रे हा० ॥ ३ ॥ दया घरम इक बाजत नीके आगम घन गुण गायारे हेा०॥ ४॥ इन विघ जिनवर खेडे होरी आया गमन मि टाया रे हो० ॥ ५ ॥ अबिचल राज करे जिन स्वामी सुख पाए अधिका यारे हों०॥६॥ चेतन कु प्रमु शिव सुख दीजे अहनिस छागू पामा रे हो०॥ ७॥ इति पदम् ॥

( ३२९ )

॥ होरी॥

पावा पुर सुअ थान होरी खेलि ये पा०॥ जल विच कमल कमल विच देहरा साभें तिहां भगवान पा०॥१॥ पूजा ऋष्ट प्रकारी कीजे जल चंदन सुभ ध्यान पा० २॥ कु सुम धूप दीपक अक्षत हे नैबदा धरे। पकवान पा० ॥३॥ फल पूजा सुं शिव पद पावें आरित करिये सु जान पा०॥ ४॥ सुभ भाव ग्रवीर गुलाल विराजै गावे जिन गुण तान पा०॥ ५॥ धन धन जय जय वीर जिनेसर सेवै सुर शशि भान पा०॥ ६॥ चेतन कुं अविचल सुख दीजे तुम साहिब गुण खान पा०॥ ७॥

( ३३० )

इति पदम्॥

॥ पुन ॥ होरी खेलो मविक हित आनी

जिन धर्म के मर्म कु जानी । घट छातर कीघादिक कंचवर दूर करी हित जानी ममता मयल नैं। मर्म

छारि के भरिये समकित पानी विवे क घस्त्र सुद्धानी हो०॥१॥ कर्र णा केसर ज्ञान गुछाछ के करिये रग

भ्रहानी आगम रेचि पिषकारी कर के क्रिरके भातम ज्ञानी भनुभव गुन

छता दूर करो भवि सुमति गहो पट

को खानी हो०॥२॥कुमति कुटि

रानी आगम धुनि अमृत रस पीकै खेली बसत सु ज्ञानी जाँसे भव भूम ण मिटानी हो० ॥ ३॥ इह विध होरी खेलो भविजन करण तीन इक ठानी अमृतचंद सूरि सुपसाये लिक्क कहें सुख दानी अध्यातम पदअभि धानी हो०॥ ४॥ इति पदम्॥ ॥ पुन॥

या जिन द्वार धूम होरी की गा वत फाग सुहाईहो या०। भर पिच कारी ज्ञान सलिल की क्यांटत भवि जन भाई स्याद बाद नय ताल मुदं ग डफ गरजत मधुर सुहाईही याँ० १ ॥ शमता रूप बनी सब बनिता दामिनि सी दरसाई प्रभु मुख व चन सवे चिहुं दिशसे मानुं बरखा रितुसी क्वाईहाँ या०॥ २ ॥ आगम ( ३३२ )

वसन अतर यहु विधसू वानि सुनत छपटाई भाव गुलाल मरे मरफोरी खेलत तन मन छाई हो ्या० ॥ ३॥ शील सुमन की दाम सुहाबत पहिर त परमल छाई हसराज हित सू होरी खेलो शिव सपत सुख दाई हो या० इति पदम्॥

॥ पुन ॥ सस्तीरी घोषि सुरग रग घन म गटे होरी स्रेष्ठन जिनद्वार स० म १॥ श्री जिन घरण कमल निस घ

दो सुध द्रश्यण चित धारी विनय धरी प्रमु पूजन करिये दूपण दूर निवारी स्व ॥ २॥ जग पति जिन बरके गुन गावी मावना मृरि समारी परम ज्ञान घन जन मन हुलसे जाये कश्मल कारी स०॥ ३॥ सुमति स धव महिला सुख लहिये वहिये कुम ति कु नारी अमृत चंद्ध सूरि कहै भविजन षेलो वसंत सु प्यारी स० ४॥ इति पदम्

॥ पुनः ॥ वदन के कदन कदंब टालनी पि या पें चली प्राक् प्रीत पालनी ब० १ ॥ तोरण आय छार गये मोपें क र गए बात सु संशय कारनी व०॥

२॥ चली संखियन संग करत तांन रग सज नेपध्य सु मुक्ता जालनी व० ॥ ३ ॥ शिषर शैल पर प्रभु पें ष्ट्राए कम युग कज कृत शिरसि धार ( ३३४ )

नी घ०॥ १ ॥ मोइ सुमट घट वि कट इटक करि शुद्ध व्रत न की मई हैं मालनी य०॥ ५॥ कर्म निशा चर चम् पदन कर झवल लील ल

ही मगल मालनी घ० ॥ ६ ॥ कहे भ्रमृत विधु चक्छ सूरिवर कुमति तजो निस सुमति भारती घ०॥ ७ इति पदम् ॥

॥ पुन ॥ सैया रे मेरे कोई की न मानी फोई की न मानी सैं० । छाएघे जब ज्याह

करण कू सग छिए जदुवानी तोरण से रथ फेर चल्यो है पशुवन की द

या आणी सै० ॥ १ ॥ चैठी घी में रग महल में सहियर सग समानी मनकी मन में रही मेरे प्यारे कर गयो द्रुध को पाणी सै०॥ २॥ जो चतुराई वे कर गए हमसे सो मैंनें अब जानी भई शो भई अब वाको कहा है कासे कहूं यह क्वानी सैं०॥ ३ ॥ गढ गिर नार मिली जाय उनसे संजम ले हुलशानी कहत ख्रवीर पिया से पहली मुक्ति गईहै राजुल राणी सै० ४ ॥ इति पदम्

॥ पुनः ॥

होरी छाई सजन सुख दाई रे रंग सुरंग भटपट संभार रुच से धार अध्यातम सेली आतम गुण वरदाई रे हो०॥१॥ वीर विवेक परम सं वेगी समता नार सुहाई रे हो०॥ ( ३३६ )

२ ॥ मृदुगुण अधीर लिये आनद से

ज्ञान गुलाल सजाई रे हो० ॥३ <sup>н</sup> ध्यान साथ मरे पिषकारी सन्मुख ताक लगाई रे हो०॥ १॥ रग से रग मिलै जय चुकी घर २ हरख वधाई रे हो०॥ ५॥ इति पदम्॥

> ॥ होछी सपूरण ॥ ॥ घ्राध राग फजली ॥

तुमे रही रे यादव दीय घडिया दोय च्यार घहिया तुमे०। मोज म

हिराण शिवा देवी जाया सुमे धा

धार जो घाडवहिया तु०॥ १ ॥ पशु

य पुकार सुनी किय करुणा छोड दियें जसू चिहिया ॥ २ ॥ गीद वि

छाय अमे वलिजाउं विनती करुं चरणे पंडियां तु०॥३॥ बिरह दिवानी मल पति योवन बाढ बढै जिम सेरडियां तु० ॥ ४ ॥ पिउ बिन खिन मुभ बरस समोबड नगमें सैनन सेभरियां तु०॥ ५॥ यादव वंश विभूषण ने मजी राजुल गुण नी बेलिमियां तु० ६॥ सहसा बन में स्वामी सुनके रा जुल रेवत गिर चढियां तुर्ण॥ ७॥ ष्रष्ट भवांतर नेह निभावन नवमें वभ ते बीछिडियां तु० ॥ ८ ॥ नयन विमल प्रभु निरखत जपतां हरखित हुवे मेरी आंखडियां तु०॥ ९ इति पदम्॥ ॥ कजली ॥

(३३६) २ ॥ मृदुगुण अबीर छिये आनद रे ज्ञान गुरार सजाई रे हो० ॥३॥

ष्यान साध भरे पिचकारी सन्मुख ताक लगाई रे हो० ॥ १ ॥ रग से रग मिलै जय घुकी घर २ हरस यघाई रे हो० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ होछी सपूरण ॥ ॥ प्राय राग कजली ॥ तुमे रही रे मादव दीय घडिया

दोय च्यार घहिया तुमे०। मीज म हिराण गिवा देवी जाया तुमे छा

घार ठो झडवहिया तु०॥ १ ॥ पशु

य पुकार सुनी किय करुणा छोड डिमें जतू चिहिया ॥ २ ॥ गोड चि

॥ पुनः॥ में तो लागुं रे सुपास जी के लू लि लुलि पाय मे०।भवसायर निर्या मक सुणिनें श्रायो तुमपें धाय मे०॥ 9 ॥ मेरे तन की ताप हरी प्रभु तु महो त्रिभुवन राय मे०॥ २॥ क र्म दवानल दूर हरो प्रभु प्रनुभव प्रमृत पाय मे०॥३॥ वैदा धनंत र तुम ही मेरे दूजो दिल न सुहाय में २ ॥ चंद कहै कर जोमि जिनंद नें करिये मेरि सहाय मे० ॥ ५ ॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥

देखो जिनजी के आगुं नाचें सुर कुमरी देखो। वत्तीस बद्ध संगीत न

( ३३८ ) ॥ मुका मानी मेरा कहनवा॥

संखियन मानी मेरा कहनवा है आ वो नेम जी मनाय श्याम घरन छ देखत सजनी नैन रहे छोभाय स०॥ १ ॥ इ.रि इ.छ घर सब बिनति

करतु हैं परणी राजुछ नार स<sup>0</sup> 11 २ ॥ जान सभी व्याहन कु ध्राए दसा दसारण सार स० ॥ ३॥ रघ

फेरी गिरवर कु घारी छीनो सयम भार स०॥ ४॥ प्रीतम पहिले रा जुल नारी पेंाहसी मय जल पार सº

५॥ अष्ट मवातर नेह तजी मभु

पेंद्रित मुक्ति मकार रामचद्व छी य ही भरज है भ्रावा गमन निवार स०

६ ॥ इति पदम् ॥

चतुरंग सोहना साजनियां च०॥१॥ काम धनुष सम भृकुटी सुभगा जग सुख देवा नुं अवत्रियां च०॥ २॥ तोरन आय सुनि बचन पशूनां रथ फेरि चलिया हो विनवरियां च०॥३़ चंद्ध कलंक सिय बिरह करेांना ता कुरंग बानीयां बैरनियां च० ॥ ४ ॥ व्याह समैं कर पर कर न धस्यो मेरे शिर द्यो दीक्षा में हथियां च०॥५॥ राजमती इम बिल २ करती संयम लहिनें थइ केवलियां च०॥६॥ राम चंद कहै भज मन नेमी नेमी जिन रणें में लग रहियां च० ॥ ७॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥

( ३४० ) चुत तेती देती तार्ले तले चार्ले घा

र्छे घुमरी देखो० ॥ १॥ गानस्त्रर तान मान एय सब छावत गावत स्याल प्रबंध दुमरी दे०॥ २॥ बीणा विण मत्या कलावत मन माहि स्था

स्याल प्रबंध दुमरी दं०॥ २॥ बीजा बेणु मृद्ग बजावत मन माहि ध्या न जिनद् सुमरी दे०॥ २॥ तुम प्र भुतीन भुवन के साहिष बाल कहें बिल जाउ सुमरी देखो०॥ १॥

बाल जाउ तुमरी देखाँ०॥ १॥ इति पदम् ॥ पुनः॥

॥ नीपीमेल्यू एखाछ ॥ षढि आब्यू सिक चाल्यू उगुसेन

चाढ आरयू साम चाल्यू उगुधन अगन मा देखीये ल्यू आयी नें सहे छिया। मोइन मय घन रुचिर छ्यीछे रितयां कोइ कहै सुनो वहिनी लि खो क्युं न पतियां कोई कहै सांवल वरन नहि जोरियां चढ गइ चित मेरे सांवरी सूरतिया॥ १॥ प्रीत लगाय प्रभु तुम काहे फिरिया फिर भ्रावा मति जावा तजि गिर नारि या पिउ विना तडफत मोरी आंख डियां रा०॥ २॥ नेमि प्रभु परणें मुक्ति सवतिया प्रभु विन कैसे होवे मेरी गतियां नेम जी से जाय लेउ सरव विरतिया जासुं मिटै जनम मरण की फेरियां रा०॥३॥ अनुम ति लही राजुल गिर चढियां सहसा वन जड़ संयम आदिरयां नेमि रा जुल केवल ही शिव सुख चरियां

( ३४२ ) छाज इरख बचाई यई मेरे म

गना मैं मेठा अद्भुत नामीमहना सोनें की रकेबी में हीरा की कटोरी नित प्रमु पूजू केसर घदना जयणा की मैं जुगति धनाउ समकित पट

दया रग रगना ॥ १ ॥ मह देवी सुत चरण कमल प्रति सेवक धीर करे ब दना आ०॥ २॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥

---- WN78J9NH ----

छतिया सावरी सूरत विन कैसे कटी

॥ घरषा मे से निकक्षल ॥

राजुल कहै सखी सुनो मेरी घ

तिया नम प्रमु चढ गए गढ रेवर्ति

या भिय जी कु वेखत हुएसे मेरी

रितयां कोइ कहै सुनो वहिनी लि खो क्युं न पतियां कोई कहै सांवल वरन नहि जोरियां चढ गइ चित मेरे सांवरी सूरतिया॥ १॥ प्रीत लगाय प्रभु तुम काहे फिरिया फिर छावा मति जावा तजि गिर नारि या पिउ विना तडफत मोरी आंख डियां रा०॥ २॥ नेमि प्रभु परणें मुक्ति सवतिया प्रभु विन कैसे होवे मेरी गतियां नेम जी से जाय लेड सरव विरतिया जासु मिटै जनम मरण की फेरियां रा०॥ ३॥ अनुम ति उही राजुल गिर चढियां सहसा वन जइ संयम आदिरयां नेमि रा जुल केवल ही शिव सुख बरियां राम खद कहै भीते प्रमूको मैं जाउ बिह्हारियां रा०॥ १॥ इति पद म ॥ पुन ॥

कहत पुकार पुकारी सखिमन से हाय जोड सखि पैया पडत हु कठी नाह मनावा इह पुर में क०॥ १॥

पशुन पुकार सुनी किय करुणा नव मव नेह निवास्नो प्रजु लिन मे क० २॥ स्थाम धरन पिया सुदर सूरत वेख दरस हुलसाई प्रमु जिय में क०

३॥ इरि हल घर सर्व भिनति करते है अरज सुनो चित लाई द्वारामती में राजुल उठ गिरवर कु घाई अम मै शरन तिहारी सहसा भन में क० ५॥ घस मस चलीय मिली सेयम ( ३४५ )

घर हरख २ चित लाई गिरनारी में क०॥ ६॥ राम कहत कर जो डी प्रमुसुं मुफ्त कुं शरन तिहारी भ व भव में क०॥ ७॥ इति पदम्॥ ॥ कजली ॥ लालन की शोभा कहियन जाय तोरण त्रिभुवन पति जब आए हय गय रथ पायक न समाय ला०॥ ९ ॥ सुर नर किन्नर प्रसुर विद्याध र गंध्रप होय सहु मिलि गुन गाय हा । ॥ प्रपद्धर नृत्य करे तत्ता धेइ धेइ मोतियन मूंठी लिए बघा य ला० ॥ ३ ॥ कन्या गौरी बाला तरुणी मंगल गावत आय सुहाय छाँ० ॥ १ ॥ नेम जिनेसर दुलहो

( ३४६ ) निरस्तत नयन रहे हैं छोमाय छा० ५॥ इति पदम्॥ ॥ पुन ॥ नेम आष्या मर भर मारी रे बि न अब गुण मोहे मार चले हो मूठ गई सन सारी रे ने० ॥ १ ॥ जाय सस्ती सममाय कहोरी अप्ट मवातर

यारी रे ने० ॥ २ ॥ मू करुणा कर ठाकुर मीपर मारी प्रेम फटारी रे ने 0 ॥ ३॥ नाय निरजन औसी न की जै मेहुं दासी तुम्हारी रे ने० ॥ ४ n इति पदम् n u पुन n कै।न दिन दरसन कै।न दिन ारसन कोन दिन यदन हो प्रमु पै

यां जिह दिन करम विवर होंय मे रो । वोही दिन दरसन हो प्रभु पई यां जेही दिन दरसन वही दिन बंद न वही दिन जनम सफल मुक्त गि णियां क०॥ १ ॥ शित्र सुख दायेक सव जग ज्ञायक वहु गुण लायक हो प्रनु रसिया मोहनि मूरत सोइ नि सूरत विघन कुं चूरत है प्रभु र सिया क०॥ २॥ भव दुख भंजन करम निकंदन हम ग्रार गंजन है जिन रसिया बहु गुण धारी पर उ पकारी प्रभु मुक्त चित्ते हो नित व सिया॥३॥ इति पदम्॥ ॥ पुनः ॥ मेरे आज शनद वधईयां मेरे

ममु आज छानद बचईया छा० । काल धनत फिरव चिहु गतिमा दु रलम नरमव पाईया मेठ ॥ १ ॥ आ रज स्त्रेत्र उत्तम कुछ छादिक सुगु रु सयोग सहाईया मे०॥ २॥ ए भवसर फिर २ मिलना होत नही हट लाईया मे०॥ ३॥ अवसर सफ छ होबे प्रमु मिरखत आदि जिनद जुहारिया में ।। १॥ राम कहत कर जोड़ी प्रमुसे नव निध रिध सि घ पाईंगा में ँ॥ ५॥ इति पदम्॥ ॥ गरमा ॥ श्री चितासणि खास नयणें निर प्या रे म्हारो हुछस्यो चित्त छाराम धेमछ गुण घरस्या रे जिनवर पास

( २४६ )

जिणंद सकल सहाई रे प्रनुपम उदयो भोग दरसण दीठा रे कांई साकर दूध समान लागें मीठा रे महिर क रो महाराज दरशण दीजे रे प्रीजिन चंद नो श्वाम मुजरो लीजे रे इति पदम्॥

॥ पुनः ॥

प्रभु जी संभव श्वामि सुजान के सेवुं अहै निशी रे लो प्र०॥ १॥ देषुं तुम दीदारक हूं थांउं खुसी रे लो प्र २॥ दरसन द्यो महाराज के मुभा नें एक ठोरे लो माहरा वाल हारे लो प्र०॥ ३॥ अति आतुर थया चित्त के प्रभु जी ने भेठवा रे लो प्र० ४॥ हा जर हैज भरा कके ग्रंतर ( ३५० )

मेंटवारे छो प्र0 ॥ ५॥ सेना नदन देख के अभिनय उपना रे छो प्र०॥ ६॥जन्म्या जात सुजात के परमछ के सवारे छो मणा ७॥ सेवक नें

मरोसा माठो तुम तणी रेखो प्रवा ८ ॥ सामलसा तुभा वयण के मने इ गहगहै रे छो प्र ॥ ९ ॥ बीस

स नहीं पद पक्जकी सास तेह थी रे हो प्र०० १०० मोक्ष रूपी मा

उप वर्गर्मे जइ ने तुमे पस्पारे छी म०॥ ११ ॥ कपूर विजय नो सीस के तुम अरजी करे रे हो मान कहे

सबि गाता आसा सह फली रे छो

म०॥ १२॥ इति पर्म्॥

ा ढाए इठीएानी देशी 🛭

पहिलो अंग सुहामणो रे प्रनुपम ष्ट्राचारांग रे सुगुण नर वीर जिणंदै भाषिया रे लाल उबवाई जासु उ षंग रे सु०॥ १ ॥ बलिहारी एअंग नी रे लाल हूं जाउं बारंबार रे सु० बिनय सुं गोचरी प्रादरै रे लाल जि हां साधु तणो आचार रे सु०॥२॥ सुय खर्च दो अञै जेहनां रे लाल प्रवर अध्ययन पचवीस रे सु०। उद्देशा दिक जाणिये रे लाल पंच्यासी सुज गीस रे सु० ॥ ३ ॥ हेतु जुगत करि शोभता रे लाल पद अठारहजार रे स्र०। अक्षर पद नें क्रेह्रड रे लात संख्याता श्री कार रे सु०॥ ४॥ ग मा भ्रनंता जेहमारे लाल बलि अ

#### ( ३५२ )

मत पर्याय रे सु०। न्नस परि ती है इहारे छाछ धावर ध्रनत कहा यरे सु०॥ ५॥ नियस् निका चित्

य र सु० ॥ ५ ॥ । नबक्ष । नका । चत सासता रे छाछ जिन परिणत ये माव रे सु० । सुणता जातम उल्छ से रे लाल प्रार्ट महज मामाव रे स०

से रे लाल प्रगटे सहज ममाव रे सु० ६ ॥ सुगुण ज्यावक वाक ज्याबिका रे लाल फ्रांगें चरिय उल्लास रे सु०। विधि पूर्यक सुम्ह सामलो रे लाल

गीतार्थ गुरु पांच रे सु० ॥ ७ ॥ ये सिद्धात महिमा निलो रे छाछ उ सारे मय पार रेसु०। यिनय चंद फहि माहरे रे छाछ ये हिज प्राग अ

थार रे सु० n ८ ॥ इति पदम् n

देखी तिहारी रीत बालम सजन हमारे दे० परघर रयणि दिवस रंगराते काल भ्रनत गए बीत स्यादवाद कु लकी मरंजादा कहां रही शुभ नीत वा० ॥ १ ॥ कासुं कहिये कैांन सुनतहैं कैंान करै वरजीत ख्रीघट घाट बाद् नहि सूभौ अनुभव सरिखे मीत बा०॥ २॥ चुकी समभ वूभ मन अपनें निहचे गहि परतीत रीत परम जोडि सुमति संग पूरण पाली प्रीत बा०॥ ३-॥ इति पदम् ॥

साधो भाई निज गुन में रम रहिये नहि मरम किसीसै कहिये सा०। करम उदै से वाणक जैसा बणै खुसीसै सहि पे भीर हीर गुण धारण करकैंद्रग से

याया शिव पुरका जिहा प्रमादन षहिये मध अटवी दूरघट है इस में ध्यान समाधी गहिये सा०॥ २।॥ पिता गई निषित भए शमता सुख सिम विद्वद्वये दासचनी आनद चैन से अविष्यल पदवी लहिये सा०॥ ३॥ इति पदम्॥

मारग बहिये सा०॥ १ ॥ पप कठिन

इति पदम्॥

प्रमु मया करी दिल रजन दीवा
रक मुफर्ने दीजिये श्रीसिद्धा चल गिररामा परमातम पद सपद पाया
श्री रिपम जिनेश्वर तिहा राया
प्रभ ॥ १॥ भे शमता गुद्ध सुधा आ पें जडता युत कुमति लता कापें व लिबोध बी<del>ज सु</del>ं थिर थापें प्र०॥ १ जेहथी भव परणति चित न वसे ग्र ध्यातम अनुभव गुणविकसे तिहां सह ज समाधि दशा उलसे प्रण॥ ३ ॥ पर पुद्रगल ममता दूर गमैं चेतन ता निजघर मांहि रमें तिहां जनम मरण दुख सहु विरमें प्र०॥४॥ ए अध्यातम वीनति मधुरी वाचक गणी क्षमाकल्याण करी ते सफल करो प्रभु हेत घरी प्रणा ५॥ इति पदम् ॥

़ सिद्धाचल गिर भेटा रे धन भाग हमारा। विमलाचल गिर भे ० इ ( ३५६ ) ण गिरवर नी महिमा मोटी कहता

नावे पारा रायण रूख समीसस्या स्वामी पूर्व ननाणु वारा रेघ०॥१

मूछ नायक श्रीश्रादि जिनेसर चड मुख प्रतिमा च्यारा अप्ट सम्बसु पू जो मार्थे समकित मूछ आघारा रे घ०॥ २॥ माब मगतसे प्रमु गुण गावे श्रपना जनम सुधारा जात्रा

करी भवि जन शुभ भार्चे नरक तिर्मे चगित बारारे थ० ॥ ३ ॥ दूर दे शातर घी हू आयो श्रवण सुणी गुण ताहरा पतित उधारण विकद तु मारो एकीरत जग सारा रे थ० ॥ ४'॥ सबस् फ्रटारें श्रवासी श्रासाढ़े

षदि प्राटम मोम बारा प्रमु के च

रण प्रताप संघमें क्षमा रतन प्रभु प्यारा रे घ०॥ ५॥ इति पदम्॥

मेरे प्रमुजी की शोभा वरनी न जाय निरमेल गुनें। पें क्या उपमा धर्कं मे० मोहनी मूरत सोहनी सूरत वचना मृत से ताप वुकाय मे०॥१॥ रूप मनोहर नयना नंदी सुर नर मु नि जन रहे है लोभाय मे० ॥ २ ॥ शोभा सुंदर देव पुरंदर रहि कीरत त्रिभुवन में क्वाय मै० ॥३॥ तेज प्र ताप कहांलुं घरनुं रवि शशि जिनके आगें लजाय में० ॥ ४ ॥ जो कोइ ध्यावे बंक्तित फल पावे आवा गम न क्विनमें मिट जाय मे०॥ ५॥ प्र ( ३५६ )

ण गिरवर नी महिमा मोटी कहता

नावे पारा रायण रूख समीसस्या स्वामी पूर्व ननाणु वारा रे घ०॥ १ मूल नायक श्रीम्नादि जिनेसर चड मुख मतिमा ध्यारा अप्ट स्व्यसु पू जो भार्वे समकित भूल आधारा रे घ०॥ २॥ भाव मगतसे ममु गुण

गाये ध्रपना जनम सुधारा जान्ना करी मिंव जन शुमभार्वे नरक तिर्य जगति यारारे ध० ॥३॥ दूर दे शासर धी हू आयो प्रथण सुजी गुण साहरा प्रतित उधारण विसद त

साहरा पतित उधारण विसद तु मारो एकीरत जग सारा रे घ०॥ ४॥ सबद् फ्रहार्रे प्रयासी प्रासाई

४ ॥ सवत् प्रठारै त्रयासी प्रासाई विदि प्राटम मोम वारा प्रमुके च या वे तीन अवस्था भव २ हारी तो भी ठोर न ग्राया वे म० ॥३॥ ता कारन समता संग लेके चुन्नी चर ण चित लाया अव तो शिव पुर सु ख लहेंगे मन बंकित फल पाया वे म०॥४॥ इति पदम्

दुक नजर महरदी करना दु०।
मैं तो अगम पापकी मूरत मेरा दो
स न धरना दु०॥ १॥ ले दीक्षा म
मु गिर कें। चाले षच महा व्रत च
रना दु०॥ २॥ केवल ज्ञान उपाय
जिनेसर हम कुं क्यें। निह सरना दु०
३॥ इति पदम्

भू सब छायक शिव सुख दायक दा स चुन्नी जिन के गुन गाय मे० ॥ ६ ॥ इति पदम्

मै नाहि दूध पाया है २ साम मे री मै० एचाछ ॥ तुम्ते समभाया घे

मनुवा यार तुम्हे समभ्हामा म०॥ **हस घोरासी योनि में भटकत** रह

स रुष्टत इत आया पच इद्धी के धस में पम के नाहक जन्म बिताया

में म० ॥ ९ ॥ काम कोघ और मीह

छोम की सगत का फल पाया नाना

गत के दुख सहे मैं फिर पी हो पछ

ताया घे म० ॥ २ ॥ जिनवर नाम

जपा नहि मनसे गुरुसे बित नहिला

गफलत में सारी उमर गई कार ज की सुध नांहि रही ग०॥ १॥ काल ग्रनादि सुख दुख में खोए मो ह निद्धा में शुद्धी नांहि रही ग०॥ १ ॥ ज्ञान दया सिंधु ने अपनें का रण हित की बात कही ग०॥३॥ गई सो गई प्रव हाथ न आवे औ सर देख विचार सही ग०॥ ४॥ दास चुन्नी सतगुरु सांचे की आज्ञा सिर पर धार लही ग०॥ ५॥ इति पदम्॥

सिद्ध चक ध्यान धरिये घन व कु कर्म हरिये हो वरियेरे ज्ञान घन धट में सि० ॥ १ ॥ अरिहंत पद ( ३६० )

अब ती चेतन चेत सत युद्धि

समाला चाहिये लख अरूपी जान गुन अपने की पाला चाहिये प्रण्य १ ॥ इस जगत की रीति भूठी में फर्स प्रिमुखन के लीक इनसे ये मुख हो सजन फ्रीगुन की मिटाना चाहि ये जा ॥ १॥ जो धरम यूमो है अप ना जिनके घर प्रानद है पाप के विषयस की उजाला चाहिये अण्य

३॥ सूत्र सिद्धान्त से सत गुरू का यही आदेश है काज सिद्धीके छिए मारग सु पाला चाहिये घा०॥ ४॥ दास खुद्धी झान सिधु मध कै पाया सार रस पीने चाला का जगत में बोल बाला चाहिये ज०॥ ५॥ इति जन सारा रे न०। श्री अरिहंत इंद्र गण अंचित कुंचित कलुप निवास भव्य कमल विकसावन हेतें लसत भानु अनुकारा रे न० ॥ १ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र युत स्ननंत वीर्य गुण धारा गुण निकुरंव निलय सि द्वा स्यद ग्रलख रूप अवतारा रे न० २॥ श्री सूरीश्वर मच्च धुरंधर पाठक श्रुत दातारा सयल साधु पंचम पंद नमतां दुख दोहग होय न्यारा रे न०॥ दर्शन ज्ञान चरित तप वरियें हरिये कर्म कुठारा ए नव पद शिव सुख के कारण वारण विचन विका रा रे न०॥ ४॥ उगणीसे चोवीसे वरसै सरद पूनिम सुख कारा अ्रमृत

( ३६२ )

हित फारी सिद्धा तिसय भर भारी सहु कृजिन सघन दिये जारी हो०

२ ॥ आचार्य गुण रामी उवकाय ग्राख दानी मुनि माछ सह सिरना मी हो० ॥ ३ ॥ सम्यक्त ज्ञान छहिये षारित्त चित्त गहिये तपधारि दुष्कृ स दिहिये हो० ॥ ४ ॥ ए नव पद सु म रार्गे सेव्या विज्ञान जार्गे दुर्भाव यक्ष मार्गे हो०॥ ५॥ उगर्षोर्से ते वीस घरसे अमृतेंद्र सूरि दर्शी धन पति सिंह हरसैँ हो ० ॥ ६ ॥ इतिपदम्

कुवरी ने जाटू मास्या मोह्या स्याम हमारा रे एचाछ । नव पद जग में जय कारा नित सेवी मवि

## ( ३६५ )

न सिद्धी छनुक्रम बिल ज्ञान तणी रुद्धी लहुं सहजैं संयम समृद्धी घ०॥ ४॥ प्रभु पनरम दरसन अर चरणां बाचक गणि नेमि विजय सरणा प्रभु आनंद बिमल जिनंद करणा घ०॥ ५॥ इति पदम्॥

श्री सीमंघर जिन स्वाम मुजरो मानो हमारो दाता जान आयो तुम तीरैं सुण साजन अभिराम अभिता खा प्रभु दरस फरस की ध्याउं मैं आठुं ही याम साहिब नेक निहारो श्री०॥ १॥ दरस सुघा रस पान करन तें पावे जी विसराम पुरुषो सम परमातम पूरन पूरो वंळित चद्ध सूरि इम जपता धनपति चिह चित धारा रे न०॥५॥ इति पद

८ २५६ /

धर्मिश्वर जी तुम दरसण विन काल अनते हु भम्यो परमेश्वर जी छद्द्यो मानव भव यूहि प्रमाद यसै गम्यो। मैं ममता बनिता घारी जी तिण हुवी घहुल ससारी जी आकिम चूटै उपकारी जी घ०॥१॥ ममता

के कथन चलन सेती मुक्त पासे पी शमता जेती ते दूर गई मन मय ऐती घ० ॥ २॥ कोधादिक मित्र पणे धास्या निज मित्र समादिक स हास्या ज्ञानादिक स्थातमधन हास्या

घ० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम दरशण से दर्श

( ३६७ )

हियडे हर्रख घर घर व०॥१॥क्षत्री कुंड में जनम सहोच्छव घर २ मंग ही चार वधाई सिद्धारथ घर व०॥ २॥ जायो सुत त्रिशला देवी नें स्त्री वर्धमान कुमार देखो नयन भर २ व०॥ ३॥ छप्पन दिश कुमरी हि छ मिल कै बोलै जय जय कार चि रंजी रही जिनवर व० ॥ ४ ॥ ची सठ इंद्र उठव नें काजे इंद्राणी लिये लार मेरु शिखर उपर<sup>्</sup>व०॥ परमानंद भयो चुनी याचक मांगे दान अपार धन धन ए अवसर ब० ५ ॥ इति पदम्॥

वाजत रंग बधाई नगर में बा

#### ( इहह )

मन फाम अतर दूर निवारो श्री०॥ २॥ मव दुख दाह रोग से प्रमु यिन कै।न करे आराम मक्त बळल मगवस जगत में तारक तूसरनाम मवजल

जगत में तारक तू सरनाम मयजल पार उतारों मुमु श्री०॥३॥भद्रा रक जिन महेंद्र सूर जी नें किये सु

जस के काम जैठ सकल द्वितिया

सुम धासर धार्पे धिय सु ठाम देखूं मैं दरस तुमारी श्री० ॥ १ ॥ दास चुनी अपने आपे में जपै परमेष्ठी नाम आरत सिमिर मिटै ततस्विष हो मिटै केवल गुण धाम भातम काज सुधारो श्री० ॥ ५ ॥ इविषद

यन यन आई सुघर नर नार

# ( ३६१। )

एके मुख गुन कहुं के ता मेरे हिये ज्ञान नहि एता लाल चंद की अरज सुन लीजे चरन की भक्ति मोहि दी जे कु०॥३॥ इति पदम्॥

॥ इति स्तवन पदा वली समाप्ता॥

मुद्धासहस्त्रकिरणै गू न्थानुपलव्धि तिमिरसंहारी । पुस्तककमलविकासी सुनिशं जैनप्रभाकरोजयतु ॥ १ ॥ जस रग यघाई जै जै कार भयो जिन शासन धीर जिनद की दुहाई बा० १ ॥ सय संख्यिन मिछ मगछ गावे मोतियन चैाक पुराई बा० ॥ २ ॥

केतिक घपो फूल मगावी जिन जी नी प्रगिमा रखाई बा०॥३॥न्याम सागर प्रमु चरण क्रमल से दिन २ जीत सवाई बा०॥४॥ इति पद

फुराल गुरु देव के दरसण मेरा दिल होत है परसन जगत में या समा कोई न देखा नेंन मर जोई म

समा कोई न देखा नेंन मर जोई म 9 ॥ विरुद्द भूमदेखे गाजै फरसता पाप सब माजे पूजता नपदा पावे अखिती छच्चि घर प्राये कु०॥२॥

### ( ३६१५ )

एके मुख गुन कहुं के ता मेरे हिये ज्ञान नहि एता लाल चंद की अरज सुन लीजे चरन की भक्ति मोहि दी जे कु०॥३॥ इति पदम्॥

॥ इति स्तवन पदा,वली समाप्ता॥

मुद्धासहस्त्रकिरणै गून्थानुपलिष्ध तिमिरसंहारी । पुस्तकक्रमलिकासी स्नुनिशं जैनप्रभाकरोजयतु ॥ १ ॥



समद् १९३२ मिती फागुनसुदी ११